।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।
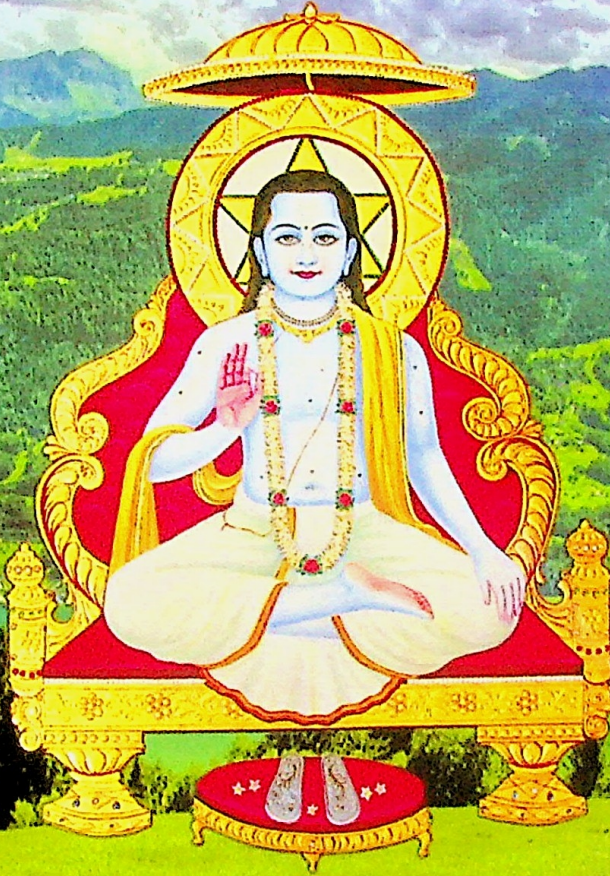
श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्

ग्रन्थ प्रणेता

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजी महाराज

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
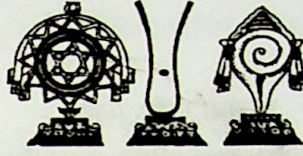
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्

ग्रन्थ प्रणेताः--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

वि० सं० २०४७, दिनाङ्क ७/७/१९९० ई०

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
फोन नं० - ०१४६७ -२२७८३१

प्रथमावृत्ति - १००० सं० २०४७
द्वितीयावृत्ति - १००० कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, बुधवार
श्रीनिम्बार्क जयन्ती महोत्सव
वि० सं० २०६९
दिनाङ्क २८/११/२०१२

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
७५) रुपये

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

समर्पणम्

(१)

राधाकृष्णपराभक्तिरसाऽऽस्वादनतत्पर !
श्रीमदाचार्यनिम्बार्क ! द्वैताद्वैतप्रचारक! ॥

(२)

निगमागमसूत्रादिमन्त्रार्थ-प्रतिपादक ! ।
अज्ञाननिर्भरध्वान्तनिरासनदिवाकर ! ॥

(३)

निम्बग्रामे व्रजे धाम्नि सततं परिशोभित ! ।
जगद्गुरु ! हरेश्चक्रावतार ! दिव्यविग्रह ! ॥

(४)

तव कृपाप्रसादेन श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम् ।
प्रणीतमर्प्यते भक्त्या गृहाण निम्बभास्कर ! ॥

आषाढ शुक्ल १५ शनिवारः
श्रीगुरु पूर्णिमा महोत्सवः
विक्रमाब्दा २०४७

समर्पकः-
त्वत्पदाम्भोजमकरन्दरसपिपासुः
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

* श्रीमते रामानुजाय नमः *

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीकेशवाचार्यजी महाराज नागोरियापीठाधीश्वर

डीडवाना जि० नागौर (राजस्थान)

आद्याचार्य श्रीनिम्बार्काचार्यजी के स्तवरूप में ''श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्'' नामक पुस्तक की रचना अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा की गई है। उसका अवलोकन कर बड़ी प्रसन्नता हुई। रचना सरस एवं भावपूर्ण है। वैष्णव जगत् के लिए परम उपादेय है। श्रीवत्स चिह्न जो भगवान् के वक्षः स्थल में विराज मान है वह श्रीजी का ही स्वरूप है।

दिनांक २८/४/१९९०

स्वामी केशवाचार्य
श्रीजानकीरमण चरणाश्रित

आत्मीय - मन्तव्य

अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनायक करुणा-वरुणालय सर्वान्तर्यामी सर्वनियन्ता सर्वाधार नित्यनिकुञ्जविहारी प्रिया-प्रियतम श्यामाश्याम युगलकिशोर भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु की नित्य नवनवायमान लीलाओं से परिपूर्ण परम मधुरातिमधुरतम रसमयी उपासना में दिव्य स्तोत्र एवं स्तुतियों द्वारा उनके गुणगान का बड़ा ही महत्व है। फिर यदि वह सुर भारती (संस्कृत) भाषा में सुललित शब्दात्मक रूप में सुसज्जित होकर सुस्वरों में गायन योग्य पद्य-पदावली हो तो और भी अधिकाधिक वैशिष्ठ्य है।

वर्तमान जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री ''श्रीजी'' महाराज ने स्वान्तः सुखाय तथा प्रेमी भक्तजनों के हितार्थ भगवान् श्रीहरि की रसमयी लीलाओं से ओत-प्रोत परमोपयोगी स्तोत्र जैसे युगलगीतिशतकम्, श्रीराधा-माधवशतकम् तथा निकुंजसौरभ आदि कई एक ग्रन्थों की रचना की है।

''आचार्यं मां विजानीयात्'' इस भगवद्वाक्यानुसार आचार्य भी भगवत्तुल्य ही माने गये हैं- अतः भगवान् की भाँति ही आचार्यों का भी स्तोत्रों द्वारा गुणगान करना अनिवार्य है, इसी उद्देश्य को लेकर श्रीसुदर्शन चक्रावतार आद्याचार्य जगद्गुरु भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यजी का प्रस्तुत ग्रन्थ ''श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्'' में स्तोत्रों द्वारा गुणगान हुआ है।

आचार्यश्री ने इस ग्रन्थ में श्रीचक्र सुदर्शन के आठ रूपों में विराजमान होने का जो वर्णन किया है वह अतीव सरस एवं मनन करने योग्य है।

मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि भक्तजन इसको नित्य पाठ में लेकर अपना मनोरथ सिद्ध करेंगे इसमें कोई सन्देह नहीं।

पठनाच्छ्रवणान्नित्यं भक्तिमुक्तिफलप्रदम्।
श्रीमदाचार्यलिखितं निम्बार्कस्तवार्चनम्॥

विनीत--

पं० गोविन्ददास 'सन्त'

प्रचारमन्त्री-अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

प्रधान सम्पादक - ''श्रीनिम्बार्क''

श्रीनिम्बार्कनुति भवौषधम्

नित्य-निकुञ्ज में नित्य विहार-निरत सर्वेश्वर श्रीराधामाधव के रसिक उपासकों व विद्वज्जनों के सर्वस्व चक्रराज सुदर्शनावतार श्रीनिम्बार्काचार्य चरण ने भूमण्डल में वैष्णव सन्मार्ग को आलोकित किया है। श्रीगुरु रूप में आप जीवमात्र का आश्रय है। बिना गुरु कृपा के श्रीहरि कृपा सुलभ नहीं होती।

श्रीनिम्बार्काचार्यचरण ही रसिकेश्वर श्रीराधिकाजी की परमाह्लादिनी शक्ति नित्य निकुञ्जेश्वरी श्रीराधिका की परम दिव्य श्रीअङ्गकान्ति के रूप में सहचरी समाज को आह्लादित करते हैं तो सखी परिकर में श्रीरङ्गदेवी स्वरूप से श्रीप्रियाप्रियतम की अन्तरङ्ग सेवाओं द्वारा तत्सुख सुखित्व का आदर्श प्रकट करते हैं। व्रजगोपमण्डल में परम प्रिय स्तोक सखा के रूप मे व्रजेश्वर श्रीनन्दनन्दन को विविध क्रीडाओं से उल्लसित करते हैं तो व्यूहमण्डल में श्री अनिरुद्ध रूप से ज्ञान प्रकाश द्वारा अज्ञानान्धकार का उच्छेद करते हैं। एक ओर श्रीगोविन्द के गोवृन्द में धूसर गो के रूप में आनन्दित करते हैं तो वहाँ ही श्रीप्रभु के कर कमलों में श्रीलकुट रूप से सुशोभित रहते हैं। जहाँ आयुधों का प्रसंग आता है, वहाँ चक्रराज श्रीसुदर्शन के रूप में धर्म की रक्षा एवं इस धराधाम में स्वयं श्रीनिम्बार्कचार्य स्वरूप से वैष्णव सन्मार्ग का दर्शन करा के जीवमात्र का उद्धार करते हैं।

इस प्रकार श्रीनिम्बार्क भगवान् अष्टस्वरूपों में वैष्णवमात्र के उपास्य हैं। उपासना के अनेक रूप हैं। उनमें स्तोत्र पद्धति सर्वोपरि है। श्रीहरि गुरु गुणगान का यह उत्तम प्रकार है। यही भी जप यज्ञ का ही रूप है। प्रस्तुत ''श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्'' स्तोत्रात्मक सुन्दर सरस ग्रन्थ की रचना परमाराध्य अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्रीराधा-सर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने समस्त भक्त वैष्णवों के हितार्थ की है। यह ग्रन्थ सभी भक्तों के लिये परमोपादेय है और वैष्णव समाज इसका नित्य पाठ करें तो उपासकों की उपासना में बाधा पहुँचाने वाले सभी क्लेश व विघ्न बाधाओं का शमन होकर नित्यनिकुञ्जविहारी श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सहज कृपा सुलभ हो सकती है। साथ ही सुमधुर सरस इस रचना के नित्य पाठ व रसास्वाद द्वारा आनन्दानुभूति भी होगी।

संवत् २०४७ वि० (दि० ७/७/९०)

विनीत -रामगोपाल शास्त्री

श्रीनिम्बार्कस्तवार्चन का असीम लावण्य

मेरे पूर्व जन्म के संचित पुण्य कर्मों के फलस्वरूप श्रीमदाचार्य श्रीचरणारविन्दों के निजी सेवा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। और निश्चय ही मुझे जो सौभाग्य श्रीचरणारविन्दों में अध्ययन करने का आपश्री के द्वारा स्वयं ने देववाणी संस्कृत अनुवाद भाषा को अभ्यास करने का परम सौभाग्य केवल मात्र मुझे ही ऐसा नहीं वह वेद विद्यार्थियों को भी प्राप्त हुआ है। यदि हमारी संस्कृत व संस्कृति सुरक्षित है तो आध्यात्मिक जगत् के देदीप्यमान साक्षात् चक्रराज स्वयं सूर्य स्वरूप में जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज इस संसार की सम्पूर्ण कलुषता रूपी अन्धकार को दूर कर श्रीयुगलचरणारविन्द की भक्ति रूपी दिव्य ज्ञान ज्योति के द्वारा प्रकाशित कर रहे है।

मुझे स्मरण है बाल्यकाल से ही श्रीचरण सन्निधि प्राप्त हुई। रात्रि को जय जय श्री लोक मंगलार्थ दीर्घ रात्रि काल पर्यन्त भी स्वयं के कष्टों को भुलाकर सबके सुखों को ध्यान में रखते हुए, यात्राओं से कभी-कभी ३ बजे आचार्यपीठ पधारत और फिर रात्रि को भी संस्कृत और संस्कृति व गोरक्षार्थ अपने हृदय में दृढ संकल्प किए गीर्वाण वाणी में ''भारत-भारती-वैभवम्'', ''श्रीनिम्बार्कचरितम्'', ''उपदेशदर्शन'', ''भारतकल्पतरु'' विभिन्न संस्कृत व्रज भाषा व हिन्दी ग्रन्थों का आलेखन सतत् अध्यावधि करते रहे हैं। श्रीचरणों की ग्रन्थावली करते उसी के अन्तर्गत ''श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्'' दिव्य ग्रन्थ की रचना हुई। ''या निशा सर्व भूतानां यस्यां जागर्ति संयमी'' के

अनुसार प्रातः जब हम उठते उस समय भी ग्रन्थ आलेखन का कार्य जय जयश्री करते देखते व जब हम सब सोते थे तब भी आचार्यश्री ग्रन्थ लेखन करते रहे हैं।

वस्तुतः आपश्री का सम्पूर्ण जीवन लोकमंगल के लिए है। प्राणी मात्र के सुखमय कल्याणकारी जीवन के लिए है। श्रीचरण कृपार्णव है। मेरे जैसे अकिंचन को आपश्री ने उक्त ग्रन्थ के अनुवाद के लिए कहा। यह सब आचार्यचरणों का पुण्य प्रताप है। इस ग्रन्थ के माध्यम से हमें निश्चय ही हमारी दिव्य युगल प्रिया प्रियतम की रसमयी निकुञ्ज उपासना व हमारे आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का पावन चरित इस आपश्री के सरस रसयुक्त (रसमय) सरल देव भाषा में रचित यह दिव्य ''श्रीनिम्बार्कस्त-वार्चनम्'' ग्रन्थ का सभी रसिक भावुक भक्तजनों को चारों पुरुषार्थों की सिद्धि प्रदान करने वाला हो। उक्त ग्रन्थ की यह द्वितीयावृत्ति प्रस्तुत है जिसके ३६० श्लोकों का अनुवाद इस अकिंचन ने आज्ञानुसार किया है। इसके प्रथम प्रकाशन के १०० श्लोकों का भाषानुवाद स्वयं आपश्रीचरणों ने ही किया है।

श्रीचरणकिंकरीक :-
रेवतीरमण शर्मा शास्त्री, निम्बार्कभूषण
प्राध्यापक-
श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर (राजस्थान)

अभ्यर्थना

श्रीनिम्बार्क भगवान् सर्वेश्वर श्रीकृष्ण के करकमल में विराजित चक्रराज श्रीसुदर्शन के अवतार हैं। आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व द्वापरान्त एवं कलियुग के प्रारम्भ में आपका आविर्भाव भारतवर्ष के दक्षिण भाग में गोदावरी के पावन तट पर अवस्थित वैदुर्य्यपत्तन-मूंगी-पैठण के निकट अरुणाश्रम में हुआ। आपश्री के माताश्री का नाम श्रीजयन्ती देवी एवं पिताश्री श्रीअरुणमुनि थे। बाल्यकाल में ही माता-पिता सहित आपश्री व्रज में पधारे। गिरिराज श्रीगोवर्धन के निकट आपने एक सुरम्य आश्रम में तपश्चर्या की उस आश्रम का नाम आपश्री के मङ्गलमय नाम से ही विख्यात हुआ जो निम्बग्राम इस नाम से परम प्रसिद्ध है। छद्म रूप में दिवाभोजी यतिरूप से समागत ब्रह्मा को सूर्यास्त होने पर भी चक्रराज श्रीसुदर्शन का आवाहन कर निम्बवृक्ष पर सूर्यवत् दिवानुभूति कराके उनका आतिथ्य किया। भगवत्प्रसाद कर लेने के बाद हटात् रात्रि का दर्शन कर ब्रह्मा स्तम्भित रह गये और अपना यथार्थ रूप प्रकट कर आचार्यश्री को ''निम्बार्क'' नाम से सम्बोधित किया। तब से आचार्यश्री नियमानन्द नाम से भी अधिक निम्बार्क नाम से विख्यात हुए। देवर्षिवर्य श्रीनारदजी द्वारा आपको श्रीगोपालमन्त्रराज की दीक्षा एवं श्रीहंस भगवान् द्वारा प्रदत्त श्रीसनकादिक महर्षि संसेवित दक्षिणावर्ती चक्राङ्कित शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्रदान हुई।

श्रीनिम्बार्क भगवान् का दार्शनिक सिद्धान्त स्वाभाविक द्वैताद्वैत है,

उपासना भगवान् श्रीराधाकृष्ण की निकुञ्जरसपरक है। प्रस्थानत्रयी पर आपका भाष्य है। ''ब्रह्मसूत्र'' पर ''वेदान्त पारिजात सौरभ'' नामक वृत्यात्मक संक्षिप्त भाष्य है। इसी भाष्य का विशद्‌रूप ''कौस्तुभ प्रभा'' नाम से आपश्री के पट्टशिष्य पाञ्चजन्य शंखावतार श्रीश्रीनिवासाचार्यजी महाराज ने किया है। श्रीनिम्बार्क भगवान् द्वारा प्रणीत ''वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी'' अति प्रसिद्ध है। आपने इस दशश्लोकी में गागर में सागर भर दिया है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक ग्रन्थ आपके द्वारा रचित हैं जिनका परिचय साम्प्रदायिक इतिहास ग्रन्थों में परिवर्णित है। श्रीनिम्बार्क भगवान् का आविर्भाव कार्तिक शुक्ल १५ पूर्णिमा को हुआ। जयन्ती महोत्सव इसी पावन अवसर पर मनाया जाता है।

श्रीसुदर्शनावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् का दिव्यातिदिव्य महिमामय अनिर्वचनीय पावन चरित हैं। आपश्री के दिव्य स्वरूप का वर्णन वाणी किंवा लेखनी का माध्यम नहीं है। प्रस्तुत ''श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्'' में अति संक्षिप्त रूप से जो भी कुछ वर्णन हुआ है यह उन्हीं करुणावरुणालय श्रीनिम्बार्क भगवान् का अनुग्रह रूप प्रसाद का ही फल है। स्थानीय नानाविध कार्यव्यस्तता में जो भी कुछ स्वल्प समय में हो सका स्वान्तःसुखाय एवं रसिक भावुक भक्तजनों के लाभार्थ भावार्थ सहित इसे प्रकाशित करा दिया है। जिज्ञासु श्रद्धालुजन लघुकलेवर इस ग्रन्थ से कुछ भी लाभान्वित होंगे तो बहुत ही सुन्दर है।

पुनः अब इसके द्वितीय इस संस्करण में ४०० श्लोक और समाविष्ट कर दिये हैं, जिनका हिन्दी भाषानुवाद परम मनीषी पं० श्रीरेवतीरमण शर्मा

गौड़ वेदान्तशास्त्री निम्बार्कभूषण-प्राध्यापक - श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर (राजस्थान) ने किया है जो निश्चय ही उनका यह परिश्रम परम श्लाघनीय है। इन्होंने दीर्घकाल पर्यन्त ''श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय'' श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में वेदाध्यापक के रूप में रहकर अनेक छात्रों को सस्वर वेदाध्ययन की शिक्षा दी है वह भी इनकी यह शिक्षा सेवा अनुकरणीय है। ये परम सरल सौम्य स्वभाव के उत्तम विद्वान् हैं। इनके चिरायुष्य एवं सर्वविध वर्चस्व के लिए श्रीसर्वेश्वर प्रभु एवं श्रीराधामाधव भगवान् से पुनः पुनः मङ्गलमयी अभिकामना करते हैं।

उपर्युक्त ग्रन्थ को सुसज्जित करने में तत्पर अपने निजी सचिव गौड़विप्र श्रीओमप्रकाशजी शर्मा शास्त्री निम्बार्कभूषण का कार्य भी अति सराहनीय है। इसी प्रकार इस ग्रन्थ के प्रकाशनादि विविध कार्यों को सम्पादित करने में सदा सन्नद्ध 'श्रीनिम्बार्क पाक्षिक पत्र' के सह सम्पादक श्रीऋषिकुमार जासरावत भी साधुवादार्ह है जिनकी श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय की सर्वाङ्गीण व्यवस्था सेवा कार्य अतीव उत्तम है। सम्प्रति स्वकीय अस्वस्थता की इस कष्टप्रद अवस्था में जो भी ४०० श्लोकों का प्रणयन हुआ, इसमें श्रीसर्वेश्वर प्रभु का एवं उन्हीं के अनुग्रह विग्रह स्वरूप श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य चरणों का कृपा प्रसादरूप ही में यह ग्रन्थ पुनः प्रस्तुत हुआ है, जिसे विद्वज्जन रसिक महानुभाव एवं भावुक भगवज्जन अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

अन्त में भगवान् श्रीसर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु एवं उन्हीं के अभिनववपुस्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् के श्रीयुगलचरणसरोरुहों में प्रणति

पूर्वक अभ्यर्थना है कि ऐसी अहैतुकी कृपावृष्टि करें जिससे भवासक्त मानस आपके श्रीयुगलपदपङ्कजों में प्रतिष्ठित हो।

आषाढ शुक्ल १५ शनिवार
श्रीगुरु पूर्णिमा महोत्सव
वि० सं० २०४७

द्वितीय संस्करण-
मिति-कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा बुधवार
श्रीनिम्बार्क जयन्ती महोत्सव
वि० सं० २०६९
दिनांक २८/११/२०१२

श्रीसर्वेश्वर-राधामाधवकृपाभिलाषी-
--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्

मङ्गलाचरणम्

(१)

हंसरूपेण गोविन्दं कृष्णं सर्वेश्वरं हरिम् ।
अवतीर्णं जगद्बीजं नमामि मनसाऽनिशम् ॥

(२)

श्रीसनकादिकान्नित्यं देवर्षिं नारदं भजे ।
हरेश्चक्रावतारञ्ज निम्बादित्यं जगद्गुरुम् ॥

(३)

पीठाचार्यं हरिव्यास-देवाचार्यं हरिप्रियम् ।
परशुरामदेवञ्चाऽऽचार्यं पीठेशमाश्रये ॥

(४)

अस्मद्गुरुपदाम्भोजं सम्यग्ध्यात्वा विरच्यते ।
निम्बार्काऽऽदर्शसद्गीतं 'श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्' ॥

*

श्रीनिम्बार्क--चतुश्लोकी

(१)

हरेरायुधाचार्यनिम्बार्कदेवं
व्रजे धाम्नि सर्वेश्वरार्चानिमग्नम्।
सदा भक्तवृन्दैः समाराध्यमानं
भजे भानुकोटिप्रकाशं मुनीन्द्रम्।।

(२)

असीमप्रभं नौमि निम्बार्कदेवं
मुहू राधिकाकृष्णयुग्माङ्घ्रिकञ्जे।
अशेषाऽनुरक्तं पराभक्तिशीलं
महाभावसिन्धौ मुदा गाहमानम्।।

(३)

स्ववेदान्तसिद्धान्त-संस्थापकं श्री-
परब्रह्मरूपाभिव्यक्ति-प्रदाने।
श्रुतिब्रह्मसूत्रादिसद्भाष्यकारं
भजेऽहं कृपाधाम निम्बार्कदेवम्।।

(४)

मुकुन्दाङ्घ्रिभक्तिप्रचारप्रसिद्धं
श्रुतिव्याहृताऽऽचारमाख्यापयन्तम्।
असत्प्रोक्ततर्काऽपहारप्रवीणं
समाराधयामीह निम्बार्कदेवम्।।

(४)

श्रीनिम्बार्कचतुःश्लोकी हरिभक्तिप्रदायिका।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता।।

श्रीनिम्बार्क--चतुश्लोकी

(१)

श्रीव्रजधाम में श्रीसनकादि महर्षि संसेव्य श्रीसर्वेश्वर भगवान् की सेवा में सदा संलग्न करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशित, भक्तजनों द्वारा समाराधित, श्रीहरिप्रियायुध सुदर्शनचक्रावतार जगद्गुरु आद्याचार्य भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यजी का मैं भजन-स्मरण करता हूँ।

(२)

श्रीराधाकृष्ण के युगल चरणारविन्दों में अत्यन्त अखण्ड अनुराग है जिनका, ऐसे पराभक्तिशील, परम कान्तियुक्त महाभावसिन्धु में हर्ष पूर्वक अवगाहन करने वाले अर्थात् सदा दिव्य भावसिन्धु में सराबोरं रहने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को मैं बारम्बार मन से चिन्तन करता हुआ सदा सर्वदा नमन करता हूँ।

(३)

श्रीपरब्रह्म परमात्मा की अभिव्यक्ति अर्थात् दिव्य छवि-स्वरूप दर्शन प्रदान कराने हेतु अपने वेदान्त के स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के मूल संस्थापक, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और गीता इस प्रस्थानत्रयी पर भाष्यों की रचना करने वाले जगद्गुरु श्रीनिम्बार्क भगवान् का मैं भजन-स्मरण करता हूँ।

(४)

श्रीमुकुन्द (मुक्तिप्रदाता) भगवान् के चरणारविन्दों की भक्ति का प्रचार-प्रसार करने में परम प्रसिद्ध तथा वेदोक्त सदाचार और सिद्धान्त का उपदेश करने वाले, शास्त्रविरोधीजनों के कुतर्कों के खण्डन करने में अतिशय कुशल, आचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क देव का मैं आराधन समर्चन करता हूँ।

श्रीनिम्बार्कराधनाष्टकम्

(१)

निकुञ्जेश्वरी-राधिकादिव्यकान्तिं
सखीमण्डले रङ्गदेवीस्वरूपम्।
व्रजे गोपयूथे प्रियं स्तोकरूपं
भजे चाऽनिरुद्धं हरे र्वेत्ररूपम्।।

(२)

हरे र्गोगणे धूसरां सौरभेयीं
महाचक्ररूपं हरेरायुधेषु
अशेषांशुमालिप्रभं चाऽष्टरूपं
भजे नित्यमाचार्यनिम्बार्कमीशम्।।

(३)

समाराध्यमानं तपःपूतसद्भिः
समभ्यर्च्यमाणं सदाऽनन्यभक्तैः।
मुहुः स्मर्यमाणं बुधै र्भावनिष्ठै-
र्भजे नित्यमाचार्यनिम्बार्कमीशम्।।

(४)

स्तुतं भावुकैः सर्वकालं शरण्यं
वरेण्यं मुखश्रीप्रभापुञ्जदीप्तम्।
नवीनाऽम्बुदाऽनीकमञ्जुस्वरूपं
भजे नित्यमाचार्यनिम्बार्कमीशम्।।

(५)

जयन्तीसुतं राधिकाकृष्णभूमौ
सदा शोभमानं व्रजे दिव्यधाम्नि।
परब्रह्म-सर्वेश्वर-ध्यानलीनं
भजे नित्यमाचार्यनिम्बार्कमीशम्।।

श्रीनिम्बार्काराधनाष्टकम्

(स्तोत्र के प्रारम्भ में श्रीनिम्बार्क भगवान् के अष्टरूप का वर्णन है)

(१)

रसिकेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की परमाह्लादिनी शक्ति नित्यनिकुञ्जेश्वरी श्रीराधिकाजी की परम दिव्य श्रीअङ्ग-कान्ति-स्वरूप[१] नित्यसखि परिकर में श्रीरङ्गदेवी[२], व्रजगोप मण्डल में परम प्रिय श्रीस्तोकसखा[३], श्रीहरि के व्यूहमण्डल में श्रीअनिरुद्ध[४] तथा श्रीप्रभु के करकमलों में सदा सुशोभित श्रीलकुटरूप[५] हैं।

(२)

श्रीगोविन्द के गोवृन्द में श्रीधूसर गो[६] तथा नित्य दिव्य आयुधों में कोटिसूर्यसमप्रभ चक्रराज श्रीसुदर्शन[७] और इस भूतल पर आचार्य स्वरूप से जो जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य नाम से जगत् विख्यात हैं उनका हम सतत् भजन करते हैं।

(३)

तपःपूतः सन्तों द्वारा समाराधित, अनन्य भक्तजनों द्वारा सदा समर्चित, भावनिष्ठ विद्वज्जनों द्वारा अनवरत स्मरण किये जाने वाले भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य का हम निरन्तर भजन करते हैं।

(४)

भावुक भक्तजन जिनकी सर्वदा स्तुति करते हैं, जो परम शरण्य और वरेण्य है, श्रीमुखकान्ति से परम देदीप्यमान, नवीन मेघ के समान अतीव मनोहर श्रीनिम्बार्क भगवान् का नित्य भजन करते हैं।

(५)

सर्वेश्वर श्रीराधाकृष्ण भगवान् के परम पावन दिव्यातिदिव्य श्रीव्रजधाम में सदा सुशोभित, परात्पर रसब्रह्म भगवान् श्रीसर्वेश्वर के ध्यान में सदा जो तन्मय ऐसे जयन्तीनन्दन परमाचार्यवर्य भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य का प्रतिपल भजन करते हैं।

(६)

प्रपन्नाऽऽर्तिपुञ्जप्रणाशे समर्थं
सदाऽनन्तभक्तिप्रदाने सुदक्षम् ।
प्रसन्नाननं नीलराजीवनेत्रं
भजे नित्यमाचार्यनिम्बार्कमीशम् ।।

(७)

अविद्यानिरासाय लब्धावतारं
सुरै र्वन्दिते भारते पुण्यदेशे ।
इहाऽऽचार्यवर्यं मुनीन्द्रं वरिष्ठं
भजे नित्यमाचार्यनिम्बार्कमीशम् ।।

(८)

हरे र्धाम्नि वृन्दावने युग्मलीला-
रसाऽब्धौ निमग्नं सदैवाऽऽप्तमोदम् ।
कृपाधामराधापदाम्भोजभृङ्गं
भजे नित्यमाचार्यनिम्बार्कमीशम् ।।

(९)

युग्मभक्तिप्रदं स्तोत्रं निम्बार्काराधनाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

(६)

शरणागतजनों के क्लेश समूह के परिहार करने में पूर्ण समर्थ, सर्वदा भक्तों को अनन्त अर्थात् भगवान् श्रीसर्वेश्वर की पराभक्ति प्रदान करने में परम कुशल अथवा श्रीप्रभु की अनन्त अर्थात् असीम उत्तमा भक्ति को प्रदान करने में परम प्रवीण, प्रसन्नमुख नीलकमल कमनीयनेत्र, श्रीनिम्बार्क भगवान् का अहर्निश भजन करते हैं।

(७)

देववृन्दवन्दित परम पावन इस भारत देश में परिव्याप्त अविद्या के निराकरण हेतु जिन्होंने आचार्यस्वरूप से अवतार धारण किया है, परमश्रेष्ठ आचार्यवर्य्य भगवान् श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्र का सर्वदा भजन करते हैं।

(८)

वृन्दावनविहारी श्रीहरि के दिव्य धाम श्रीवृन्दावन में युगलकिशोर श्रीराधामाधव की ललित लीला रस सिन्धु में सर्वदा निमग्न एवं सतत आनन्द प्राप्त करने वाले, कृपाकोषरूप रासेश्वरी श्रीराधा के युगलचरणारविन्दों के रसपानपरायण दिव्य मधुप रूप श्रीनिम्बार्क भगवान् का प्रतिपल भजन करते हैं।

(९)

सर्वेश्वर युगलकिशोर श्रीराधामाधव की भक्ति प्रदान करने वाले इस श्रीनिम्बार्कराधनाष्टक स्तोत्र की रचना हुई यह उन्हीं आचार्यवर्य का कृपा प्रसाद है।

श्रीनिम्बार्क--गुणाष्टकम्

(१)

व्रजधाम्नि सदा गिरिराजवने
परिशोभितमद्भुतरूपनिधिम् ।
युगलाऽङ्घ्रिसरोजमहामधुपं
भज निम्बरविं नितरां मनसा ।।

(२)

श्रुतिभाष्यकरं भवतापहरं
हरिनामसुधारसपानपरम् ।
नवमेघनिभं नवनीतहृदं
भज निम्बरविं नितरां मनसा ।।

(३)

मुनि-साधुवरै रसिकैश्च बुधैः
सततं समुपासितमाप्तजनैः ।
व्रजवासिगिरा परिगीतजयं
भज निम्बरविं नितरां मनसा ।।

(४)

सुखधाम गुणै र्विविधैः सुभगं
वृषभानुसुतास्मरणे निरतम् ।
कमनीयकचं कमलाक्षमहो
भज निम्बरविं नितरां मनसा ।।

(५)

नवनीरजमाल्यधरं मधुरं
सुख-शान्तिमहोदधिमाश्रयदम् ।
करुणार्णवमात्मरहस्यविदं
भज निम्बरविं नितरां मनसा ।।

श्रीनिम्बार्क--गुणाष्टकम्

(१)

श्रीव्रजधाम में स्थित गिरिराज गोवर्धन के रमणीय वनकुञ्जों में परम सुशोभित अतीव विलक्षण सौन्दर्यनिधि, युगलकिशोर श्रीश्यामाश्याम के चरण कमलों के महा मधुकर स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् का अन्तःकरण से निरन्तर भजन करना चाहिये।

(२)

उपनिषदों पर जिन्होंने भाष्य किया है, जगत् के आध्यात्मिक आधिवैदिक, आधिभौतिक इन त्रिविध तापों को हरने वाले, सर्वेश्वर श्रीहरि के नामामृत के पान में अहर्निश संलग्न, नवनीत अर्थात् मक्खन के सदृश कोमलान्तःकरण, नवीन मेघमाला के सदृश सुन्दर श्यामल स्वरूप विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् का अनवरत अपने पवित्र मन से भजन करना परम कर्तव्य है।

(३)

ऋषि-मुनियों, सन्तों रसिकों विद्वज्जनों, उत्तम महापुरुषों द्वारा निरन्तर समुपासित, व्रजवासीजनों की मधुर वाणी से जिनके कमनीय नाम की जय ध्वनि की जाती है, ऐसे आद्याचार्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् का सर्वदा सात्विक मन से भजन-स्मरण करना परम अभीष्ट है।

(४)

उत्तमोत्तम दिव्य विविध गुण-गणों से सुशोभित, आनन्द के धाम, नित्यनिकुञ्जेश्वरी सर्वेश्वरी वृषभानुजा श्रीराधिकाजी के स्मरण चिन्तन में सर्वदा संलग्न, मनोहर श्यामल अलकावलि से अतीव शोभायमान, कमलनयन विस्मयावह भगवान् श्रीनिम्बार्क का अपने निर्मल चित्त से सदा आराधन करना चाहिये।

(५)

नवीन कमल पुष्पों की सुन्दर माला से विभूषित, सुन्दर स्वरूप, सुख और शान्ति के अगाध सागर, आश्रितजनों को अभीष्ट फल प्रदाता आत्म-परमात्म ज्ञान के परम मर्मज्ञ, करुणा-सागर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु

(६)

सकलेश्वरचिन्तननित्यरतं
प्रणतेप्सितभक्तिरसामृतदम् ।
भवनास्तिकवादनिरस्तकरं
भज निम्बरविं नितरां मनसा ।।

(७)

हरिचक्रसुदर्शनरूपमहो
निजदिव्यमरीचिमहारुचिरम् ।
शरणाभयदं सुरसेव्यतमं
भज निम्बरविं नितरां मनसा ।।

(८)

व्रजकुञ्जरसेश्वररासरसे
सततं निरतं रसदानरतम् ।
निगमागमशास्त्रविधानपरं
भज निम्बरविं नितरां मनसा ।।

(६)

भवबाधाहरं स्तोत्रं श्रीनिम्बार्कगुणाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् का प्रतिक्षण अपने शुद्ध मन से चिन्तन करना नितान्त अपेक्षित है।

(६)

श्रीसनकादि संसेव्य देवर्षिवर्य श्रीनारदजी द्वारा सम्प्राप्त शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु के पूजन-चिन्तन में सदा निरत शरणागत भक्तों को अभिलषित श्रीहरि-भक्तिरस-सुधा के प्रदाता, संसार के समग्र नास्तिकों के कुतर्कों का समाधान करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का सार्वकालिक आराधना करना अत्यन्त आवश्यक कर्तव्य है।

(७)

अनन्तकोटिब्रह्माण्डाधिपति सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के दिव्य आयुध चक्रराज श्रीसुदर्शन के ही अवतार श्रीनिम्बार्क भगवान् का स्वरूप कितना विस्मय कारक है जिनकी दिव्य प्रखर प्रभा से श्रीअङ्ग का सौन्दर्य और भी अद्भुत है। शरणागतजनों को अभय प्रदाता, देव समूह से परिसेवित श्रीनिम्बार्क भगवान् का सतत भजन करें।

(८)

व्रजकुञ्जविहारी रसेश्वर मदनमोहन श्रीकृष्ण के रास-रस पान में निरन्तर संलग्न रस अर्थात् दिव्य आनन्द रस के प्रदाता, वेद-पुराणादि शास्त्रों के वैदिक विधि से साम्प्रदायिक सदाचार उपासना नियमादि प्रतिष्ठापन में जो तत्पर हैं ऐसे आचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् का प्रतिक्षण भजन आराधन जीवन का परम ध्येय होना चाहिये।

(९)

संसार की समस्त बाधाओं को हरने वाला यह श्रीनिम्बार्कगुणाष्टक स्तोत्र जिसकी रचना हमारे द्वारा जिस प्रकार हुई प्रस्तुत है।

श्रीनिम्बार्क--स्वरूपाष्टकम्

(१)

श्रीकृष्णहस्ताम्बुजदिव्यचक्र-
राजावतारं नवमेघकान्तिम् ।
सर्वेश्वराऽऽराधनमोदमानं
निम्बार्करूपं सततं स्मरामि ।।

(२)

गो-विप्र-देवालयनित्यरक्षा-
परायणं वेदविधानदक्षम् ।
अशेषविद्याशुभकोषरूपं
निम्बार्करूपं सततं स्मरामि ।।

(३)

गोपालमन्त्राऽर्थकरं मुनीन्द्रं
सूत्राऽर्थ-वेदाऽर्थकरं सुधीशम् ।
शास्त्रीयशङ्काशमने प्रवीणं
निम्बार्करूपं सततं स्मरामि ।।

(४)

वेदान्तनिष्कर्षविचारशीलं
सर्वेशभक्ते रसवृष्टिकारम् ।
जिज्ञासुबोधार्थरतं कृपालुं
निम्बार्करूपं सततं स्मरामि ।।

श्रीनिम्बार्क--स्वरूपाष्टकम्

(१)

भगवान् श्रीकृष्ण के करकमलों में सदा सुशोभित परम दिव्य तेजोमय चक्रराज श्रीसुदर्शन के अवतार, नवीन मेघमाला के समान श्यामल जिनकी अनुपम कान्ति है जो श्रीसनकादिक महर्षि परिसेवित शालग्राम स्वरूप भगवान् श्रीसर्वेश्वर की आराधना में सदा प्रमुदित रहते हैं, ऐसे आचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का निरन्तर स्मरण करते हैं।

(२)

गोमाता, विप्रजन, देवालयों की सर्वविध सुरक्षार्थ अनवरत जो तत्पर रहते हैं, वेद-वचनों में जो परस्पर विरोधानुभूति होती है उसे तत्काल सम्यक् रूप से दक्षता पूर्वक समाधान करते हैं। असीम विविध विद्याओं के शुभ मंगलमय कोष-स्वरूप, श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम सर्वतोभावेन स्मरण करते हैं।

(३)

''श्रीगोपालतापिनी'' उपनिषद् में प्रतिपादित श्रीगोपालमन्त्रराज का ''मन्त्ररहस्यषोडशी'' नामक ग्रन्थ में जिन्होंने विशद्रूप से अर्थ किया है, इसी प्रकार ''ब्रह्मसूत्र'' ''उपनिषद्'' ''श्रीमद्भगवद्गीता'' इन प्रस्थानत्रयी पर जिन आचार्यवर्य ने सुन्दर भाष्यों का प्रणयन किया है, वेदान्त दर्शनादि विविध शास्त्रों में विद्वज्जनों द्वारा उपस्थापित नाना शङ्काओं के सम्यक् समाधान करने में जो अत्यन्त प्रवीण हैं, ऐसे जगद्गुरुवर्य आद्याचार्य महा-मुनीन्द्र श्रीनिम्बार्क भगवान् का पुनः पुनः स्मरण चिन्तन करते हैं।

(४)

वेदान्त दर्शन के गूढतम रहस्यमय निष्कर्ष को बताने में जो अतिशय दक्ष हैं, भगवान् श्रीसर्वेश्वर के पराभक्ति-रस का जो अपने दिव्य उपदेशों में अभिवर्षण करते हैं। भगवद् विषयक विविध जिज्ञासा करने वाले जिज्ञासुजनों को सरलतया उन्हें सम्यक् रूप से ज्ञान कराने के लिये सदा निरत रहते हैं। ऐसे परम कृपालु जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यचरणों का सदा अपने मन, वाणी, कर्म से स्मरण करते हैं।

(५)

श्रीधामवृन्दावनयुग्मलीला-
रासोत्सवाऽऽनन्दसदानिमग्नम् ।
स्मिताननं पीतपटै र्मनोज्ञं
निम्बार्करूपं सततं स्मरामि ।।

(६)

राधामुकुन्दप्रियमर्करूपं
सद्भिः प्रसेव्यं बुधवृन्दवन्द्यम् ।
जगद्गुरुं विश्वनरेशवन्द्यं
निम्बार्करूपं सततं स्मरामि ।।

(७)

शान्तस्वभावं शुभकर्मशीलं
शास्त्रार्थकर्त्तारमनन्तशौर्यम् ।
विशालभालं परमं ललामं
निम्बार्करूपं सततं स्मरामि ।।

(८)

विश्वस्य लाभाय धृतावतारं
श्रीभारताऽऽनन्तवसुन्धरायाम् ।
दिव्यप्रभं क्लेशहरं परेशं
निम्बार्करूपं सततं स्मरामि ।।

(९)

निम्बार्करूपाष्टकमिष्टरूपं
सर्वार्थदं सर्वसुखावहञ्च ।
संसारदावानलतापहारं
स्तोत्रं कृतं श्रीशरणेन भक्त्या ।।

(५)

श्रीमद्-वृन्दावनधाम के सर्वस्व युगलकिशोर श्रीराधाकृष्णविहारी की रसमयी ललित रासोत्सव लीला के रसानन्द-आस्वादन में जो सदा संलग्न रहते हैं। पीत वस्त्रों से परम सुशोभित सदा प्रसन्नमुख आचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम मुहुर्मुहुः स्मरण करते हैं।

(६)

भगवान् श्रीराधामाधव के जो अतिशय प्रिय हैं। सन्तों द्वारा परिसेवित महामनीषी विद्वद्वृन्दों द्वारा सम्पूजित, विश्व भर के समस्त राजा-महाराजाओं द्वारा सदा अभिवन्दित सूर्यवत् तेजोमय प्रतिभा सम्पन्न जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य महाराज का प्रतिपल हम स्मरण करते हैं।

(७)

शास्त्रार्थ करने में अतीव कुशल, सर्वदा उत्तमोत्तम कार्यों के करने में संलग्न, असीम प्रतिभाशाली सुन्दर दर्शनीय विशाल ललाट अत्यन्त शान्त स्वभाव परम मनोहर श्रीनिम्बार्क भगवान् का स्मरण करते हैं।

(८)

भारतवर्ष की परम पावन भूमि पर कोटिसूर्यसमप्रभ चक्रराज श्रीसुदर्शन ने सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के लिये श्रीनिम्बार्क रूप से अवतार धारण किया है। जगत् के सम्पूर्ण कष्टों का शमन करने वाले, दिव्यकान्ति से युक्त सबके स्वामी जगद्गुरु श्रीनिम्बार्क भगवान् का सर्वदा स्मरण करते हैं।

(९)

संसार रूप के भीषण ताप को शान्त करने वाला, अति सुन्दर समस्त शुभ इच्छाओं की पूर्ति करने वाला, सभी को सुखप्रद इष्ट रूप यह श्रीनिम्बार्क रूपाष्टक स्तोत्र जिसकी रचना भक्तिपूर्वक सम्पन्न हुई है।

श्रीनिम्बार्क--भजनाष्टकम्

(१)

मुकुन्दहस्ताम्बुजचक्रराजं
कोट्यर्कपुञ्जोत्तमदिव्यकान्तिम् ।
आचार्यवर्यं भुवि राजमानं
निम्बार्करूपं प्रभजामि नित्यम् ।।

(२)

वेदान्ततत्त्वज्ञमनन्तविज्ञं
गोविन्दपादाम्बुजभक्तिपूर्णम् ।
अशेषविद्याकमनीयकोषं
निम्बार्करूपं प्रभजामि नित्यम् ।।

(३)

वेदादिशास्त्रीयरहस्यविज्ञं
वादीन्द्रतर्काऽद्रिविवेधदक्षम् ।
जगद्गुरुं श्रीरसिकेशभूपं
निम्बार्करूपं प्रभजामि नित्यम् ।।

(४)

श्रीराधिकाकृष्णनिकुञ्जलीला-
विलाससेवानिरतं प्रसिद्धम् ।
सर्वेश्वराऽऽराधनसावधानं
निम्बार्करूपं प्रभजामि नित्यम् ।।

(५)

शान्तं गभीरं करुणाऽऽर्द्रचित्तं
विशालभालं लसदब्जमालम् ।
श्रीशंख-चक्राङ्कितमञ्जुबाहुं
निम्बार्करूपं प्रभजामि नित्यम् ।।

श्रीनिम्बार्क--भजनाष्टक

(१)

सर्वेश्वर श्रीगोविन्द के करकमलों से सुशोभित सुदर्शन चक्रराज रूप, करोड़ों सूर्यों से भी अधिक दिव्य कान्ति वाले, भूतल पर विराजमान आचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का प्रतिदिन भजन करते हैं।

(२)

वेदान्ततत्त्व के परम मर्मज्ञ, अनन्तविज्ञ अर्थात् अनन्त जो श्रीहरि हैं उनके स्वरूप को जानने वाले अथवा अनन्त अर्थात् निखिल सृष्टि के वेत्ता, भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमलों के भक्तिरस से परिपूर्ण, समस्त विद्याओं के कोषरूप श्रीनिम्बार्क स्वरूप का प्रतिपल भजन करते हैं।

(३)

वेदादि सम्पूर्ण शास्त्रों के रहस्य को जानने वाले, विरोधी-दल के तर्करूप पर्वत के भेदन करने में परम कुशल, रसिक-शेखर जगद्गुरु निम्बार्काचार्यश्री का निरन्तर भजन करते हैं।

(४)

नित्यनिकुञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण की निकुञ्जलीलारस विलास की विविध सेवाओं में सदा निरत, श्रीसनकादि संसेव्य शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की नित्य आराधना में अत्यन्त सावधान एवंविध श्रीनिम्बार्क भगवान् का अहर्निश भजन करते हैं।

(५)

श्रीभगवत्पार्षदरूप शंख-चक्र से अङ्कित जिनके युगल बाहु प्रदेश हैं, परम भव्य जिनका ललाट है, कमल पुष्पों की माला से सुशोभित, करुणा-दया से भरे हुए मनोहर मन वाले परमशान्त अति गम्भीर सुदर्शनावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् का सतत भजन करते हैं।

(६)

पीताभगोपीशुभचन्दनेनाऽऽ-

लिप्तोर्ध्वपुण्ड्रं सुवृहल्ललाटम् ।

संलग्नवृन्दातरुदारुमालं

निम्बार्करूपं प्रभजामि नित्यम् ।।

(७)

श्रीश्यामबिन्द्वद्भुतरम्यभालं

कौशेयपीताम्बरदर्शनीयम् ।

महास्तवैश्चारुनिरूपणीयं

निम्बार्करूपं प्रभजामि नित्यम् ।।

(८)

सद्ध्यानमुद्राऽऽसनशोभमानं

मन्दस्मितं पङ्कजचारुनेत्रम् ।

नवाऽभ्रमालासुमनोज्ञरूपं

निम्बार्करूपं प्रभजामि नित्यम् ।।

(९)

सर्वार्थसम्प्रदं स्तोत्रं निम्बार्कभजनाष्टकम् ।

राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

(६)

पीतवर्णयुक्त श्रीगोपीचन्दन से अति कमनीय ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करने वाले, विशाल ललाट से कमनीयता जिनकी और भी अधिक सुशोभित है, तुलसी कण्ठी से जिनकी ग्रीवा एवं कण्ठ स्थान अतिशय मनोहर लग रहा है ऐसे आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का सतत भजन करते हैं।

(७)

भ्रुवों के मध्य गोपीचन्दन चर्चित तिलक में धारण की हुई गोलाकार श्यामबिन्दु से ललाट और भी अधिक शोभायमान हो रहा है, रेशम के कमनीय पीताम्बर से जो अत्यन्त दर्शनीय है, वृहद् स्तोत्रों द्वारा जिनके मङ्गल-स्वरमय सुन्दर निरूपण किया जाता है ऐसे श्रीनिम्बार्काचार्यचरण का भजन करते हैं।

(८)

सुन्दर ध्यान-मुद्रासन से अतीव सुशोभित मन्दहास्ययुक्त, कमलनेत्र, नवीन नील मेघमालावत् जिनके श्रीअङ्ग का अति मनोहर स्वरूप है ऐसे जगद्गुरुवर्य आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का अनवरत भजन करते हैं।

(९)

समस्त सद्कामनाओं की पूर्ति करने वाला यह ''श्रीनिम्बार्क-भजनाष्टक'' स्तोत्र जिसकी रचना जिस विधा से हुई एकमात्र आद्याचार्यश्री का कृपारूप ही है।

श्रीनिम्बार्कविंशतिस्तोत्रम्

(१)

आद्याचार्यं धराऽऽख्यातमनन्तश्रीविभूषितम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(२)

अखण्डमण्डलाचार्यं चक्रचूडामणिं परम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(३)

सर्वतन्त्र स्वतन्त्रञ्च मुनीन्द्रैरभिसेवितम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(४)

हरिचक्रावतारञ्च योगिभिः समुपासितम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(५)

श्रीहंस-सनकादीनां नारदर्षेः पथे स्थितम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(६)

श्रीदेवर्षेः प्रियं शिष्यं प्रसिद्धं निम्बदेशिकम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(७)

गीताया ब्रह्मसूत्रस्य श्रुतीनां भाष्यलेखकम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

श्रीनिम्बार्कविंशतिस्तोत्र

(१)

इस समस्त भूमण्डल पर परम प्रसिद्ध, परमात्मतत्त्वविद् अनन्त श्रीविभूषित आद्याचार्य श्रीमद् जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् की अभिवन्दना करते हैं।

(२)

अखण्डभूमण्डलाचार्य चक्रचूड़ामणि परमात्मज्ञान के परम वेत्ता श्रीमद् जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं।

(३)

सर्वतन्त्र स्वतन्त्र, मुनीन्द्र-यतीन्द्रादिपरिसेव्यमान, आत्मवेत्ता श्रीमज्जगद्गुरु भगवन्निम्बार्काचार्य का अभिवन्दन करते हैं।

(४)

भगवान् श्रीकृष्णकरारविन्द विराजित श्रीसुदर्शन चक्रराज़ के अवतार, योगीजनों द्वारा समाराधित, आत्म-परमात्मज्ञानी श्रीमज्जगद्गुरु आचार्यमूर्धन्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का मनसा, वाचा, कर्मणा अभिनमन करते हैं।

(५)

श्रीहंस भगवान् श्रीसनकादि महर्षि एवं देवर्षिवर्य श्रीनारदजी द्वारा परम्परानुसार समुपदिष्ट मार्ग पर समारूढ, परमात्म-तत्त्वज्ञ श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यचरणारविन्दों का वन्दन करते हैं।

(६)

देवर्षिवर्य श्रीनारदजी के परमप्रिय शिष्य, श्रीनिम्बार्काचार्य नाम से परम प्रख्यात परमात्मतत्त्ववेत्ता श्रीमज्जगद्गुरु भगवन्निम्बार्काचार्यश्री की वन्दना करते हैं।

(७)

श्रीमद्भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् इन प्रस्थानत्रयी पर भाष्य रचयिता आत्मज्ञाता श्रीमद्-जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् की वन्दना करते हैं।

(८)

लोके स्वाभाविक-द्वैता-द्वैतमतप्रवर्तकम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(९)

राधाकृष्णपराभक्ति-समुपासनतत्परम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(१०)

सनकादिसमाराध्य-सर्वेश्वराऽर्चने रतम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(११)

गोदावरीतटं येन दक्षिणे दिशि शोभितम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(१२)

व्रजे गोवर्धनक्षेत्रे निम्बग्रामे विराजितम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(१३)

नियमानन्दरूपेण जातश्चाऽरुणनन्दनम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(८)

इस सम्पूर्ण विश्व में जिन्होंने प्रस्थानत्रयी सम्मत स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रवर्तन किया, जो परमात्मबोध मर्मज्ञ हैं ऐसे श्रीमज्जगद्गुरुवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् की वन्दना करते हैं।

(९)

वृन्दावनविहारी युगलकिशोर भगवान् श्रीराधाकृष्ण की रसमयी पराभक्ति के समुपासन में सदा अभिरत, आत्मविवेकसम्पन्न श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य की आराधना-वन्दना ही अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य है।

(१०)

महर्षि श्रीसनकादि द्वारा संसेव्य, शालग्राम स्वरूप श्री सर्वेश्वर प्रभु की सर्वविध सेवा एवं नित्यार्चना में प्रवृत्त, परमात्मविवेकी श्रीमज्जगद्गुरु निम्बार्काचार्यश्री का अभिवन्दन करते हैं।

(११)

भारतवर्ष के परम पुनीत दक्षिण अञ्चल में पुण्य सलिला गोदावरी गङ्गा के पावन तट को जिन्होंने अलङ्कृत किया, परमात्म-ज्ञानप्रदायक श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज का मनसा, वाचा, कर्मणा अभिवन्दन करते हैं।

(१२)

व्रजमण्डल के श्रीगोवर्धन क्षेत्र में सुप्रसिद्ध निम्बग्राम में सदा विराजमान आत्मविद् श्रीमज्जगद्गुरु भगवन्निम्बार्काचार्यवर्य की अभिवन्दना करते हैं।

(१३)

मुनिवर श्रीअरुण के दिव्य कुमार जो नियमानन्द नाम से इस धरातल पर प्रकट होकर सुविख्यात हुए। वे ही नियमानन्द पितामह ब्रह्मा द्वारा निम्बार्क नाम से सम्बोधित होकर सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया, ऐसे परमात्मज्ञ श्रीमज्जगद्गुरु भगवन्निम्बार्काचार्य चरण का वन्दन करते हैं।

(१४)

जयन्तीनन्दनं दिव्यं नीलेन्दीवरविग्रहम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(१५)

निशायां दर्शितो येन भास्करो बेधसे च तम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(१६)

नैमिषे चक्रतीर्थेऽपि पुरा येन विराजितम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(१७)

असंख्यैः साधुभि र्नित्यं भारते भ्रमणे रतम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(१८)

कुतर्कखण्डने दक्षं भक्तिमार्गप्रदर्शकम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(१९)

वेदान्ततत्त्वमर्मज्ञं सदाचारप्रबोधकम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(१४)

जयन्ती माता के परम प्रिय तेजस्वी सुत, नीलकमल के सदृश श्यामल श्रीवपु, परमात्मबोधकर्ता श्रीमद्-जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य का अभिवन्दन करते हैं।

(१५)

रात्रि होने पर भी छद्मरूप में यतिवेषधारी सृष्टि रचयिता श्रीब्रह्मा को सूर्यालोक से दिवानुभूति कराके उनका भगवत्प्रसादादि से आतिथ्य किया ऐसे आद्याचार्यवर्य परमात्मविद् श्रीनिम्बार्क भगवान् की वन्दना करते हैं।

(१६)

नैमिषारण्य के चक्रतीर्थ को आपने बहुत समय तक सुशोभित किया (आपश्री सुदर्शन चक्रराज के ही अवतार हैं, श्रीसुदर्शन चक्र के नेमी स्पर्श से ही चक्रतीर्थ की उत्पत्ति हुई है, इससे श्रीनिम्बार्क भगवान् का वहाँ अधिक समय पर्यन्त विराजना स्वाभाविक है) ऐसे परमात्म विवेकशील आचार्यवर्य श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् की अभिवन्दना करते हैं।

(१७)

असंख्य साधु-सन्तों के साथ भारत के विभिन्न तीर्थों क्षेत्रों अञ्चलों में परिभ्रमण करते हुए सनातन वैष्णवधर्म की विजयध्वनि करने वाले आत्मज्ञाता श्रीमद्-जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री की वन्दना करते हैं।

(१८)

नास्तिकों द्वारा उपस्थापित कुतर्क के खण्डन में अतीव कुशल, भक्तिमार्ग का सम्यक् बोध कराने वाले, आत्मज्ञ श्रीनिम्बार्क भगवान् का अभिवन्दन करते हैं।

(१९)

वेदान्त के परम मर्मज्ञ, शास्त्रोपदिष्ट सदाचार का बोध कराने वाले, परमात्मज्ञ श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्र के चरणों की वन्दना करते हैं।

(२०)

विविधैश्चरतै र्दिव्यैः प्रसिद्धं सर्वसिद्धिदम् ।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ।।

(२१)

निम्बार्कविंशतिस्तोत्रं प्रभुप्रीतिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीनिम्बार्क-स्तवराजः

(१)

सुधीशवृन्दवन्दितं गिरीशसन्निधौ स्थितं
वरेण्यवैष्णवैः स्तुतं हरेरुपासने रतम् ।
पुराण-तन्त्रवर्णितं श्रुतिप्रशस्तपण्डितं
व्रजे सदा सुशोभितं नमामि निम्बभास्करम् ।।

(२)

अभेद-भेद वेदवाक्यपालने महोत्सुकं
श्रुतिप्रसूतसूत्रवृत्तिभाष्यकारदेशिकम् ।
निकुञ्जयुग्मलीलया प्रफुल्लमानसं प्रियं
व्रजे सदा सुशोभितं नमामि निम्बभास्करम् ।।

(२०)

दिव्यातिदिव्य नानाविध सुन्दर गरिमामय चरितों से जो अतीव प्रसिद्ध हैं, अभिलषित समस्त सिद्धियों के प्रदाता, परमात्मतत्त्वविद् श्रीमज्जगद्गुरु भगवन्निम्बार्काचार्यश्री का अभिवन्दन करते हैं।

(२१)

श्रीसर्वेश्वर प्रभु के चरणारविन्दों में अनन्य भक्ति प्रदान करने वाला ''श्रीनिम्बार्कविंशति स्तोत्र'' जिसका प्रणयन श्रीनिम्बार्क भगवान् का प्रसाद ही है।

श्रीनिम्बार्क-स्तवराजः

(१)

तत्त्वज्ञ विशिष्ट मनीषीजनों द्वारा अभिवन्दित, गिरिराज श्रीगोवर्धन के अति सन्निकट निम्बग्राम (निम्बार्क-आश्रम) किंवा श्रीनिम्बार्क तपःस्थली पर सदा विराजित एवं परम श्रेष्ठ वैष्णव वृन्दों द्वारा स्तुति किये गये। भगवान् सर्वेश्वर श्रीमुकुन्द के मंगलमय स्वरूप चिन्तन में अभिरत, अष्टादश पुराण, श्रीनारदपाञ्चरात्र आदि तन्त्र ग्रन्थों में जिनका सुन्दर वर्णन समाविष्ट है। निगमागमादि शास्त्रों के मर्मज्ञ मनीषी, व्रजधाम के निम्बग्राम की अपनी तपोभूमि पर सदा शोभायमान श्रीनिम्बार्क भगवान् को प्रणाम समर्पित करते हैं।

(२)

स्वाभाविक भेदाभेद परक श्रुतिवचनों का समान रूप से अर्थावबोध पालन में सर्वदा तत्पर एवं परम प्रख्यात भगवान् श्रीवेदव्यास प्रणीत श्रुतिसाररूप समस्त वेदान्त ब्रह्मसूत्र पर ''वेदान्त पारिजात सौरभ'' नामक वृत्यात्मक भाष्य के रचयिता एवं वृन्दावन नवनिकुञ्जविहारी युगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण की दिव्यतम मधुर लीला चिन्तन से जिनका मन अति प्रमुदित है और परम आनन्द स्वरूप अतिमनोहर जो सदा व्रज धाम में दिव्य शोभायुक्त सुदर्शन चक्रावतार आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को समग्रविधा कोटि-कोटि साष्टाङ्ग सश्रद्ध प्रणाम करते हैं।

(३)

निकुञ्जराधिकाप्रिया-मुकुन्दकेलिचिन्तकं
व्रजस्थकानने शुभे विराजितं सुशोभनम्।
अहो कृपादयार्णवं सुमन्त्रदानतत्परं
व्रजे सदा सुशोभितं नमामि निम्बभास्करम्।।

(४)

अनेकशास्त्रनिर्मितौ नितान्तरूपपाटवे
प्रसिद्धदेशिकं हृदा गिरीन्द्रकुञ्जराजितम्।
समेश्वराऽर्चने रतं प्रसन्नशान्तविग्रहं
व्रजे सदा सुशोभितं नमामि निम्बभास्करम्।।

(५)

रसैकमात्रजीवनं विशुद्धविप्ररूपिणं
पवित्रभारतस्थले युगाऽङ्घ्रिभक्तिपूरकम्।
निजं मतं प्रकाशितं क्षितौ च येन तं प्रभुं
व्रजे सदा सुशोभितं नमामि निम्बभास्करम्।।

•

(६)

कदाचिदर्कजातटे कदाचिदद्रिकानने
कदाचिदात्मसाधने कदाचिदीशचिन्तने।
कदाचिदार्तरक्षणे रतं कदाचिदर्चने
व्रजे सदा सुशोभितं नमामि निम्बभास्करम्।।

(३)

वृन्दावन निकुञ्जविहारी प्रियाप्रियतम भगवान् श्रीराधाकृष्ण की परम दिव्य ललित लीलाओं के चिन्तन-ध्यान में अभिरत एवं व्रज के विविध सुरम्य वनोपवनों में शोभायुत विराजमान तथा यह परमाश्चर्य है कि आप अत्यन्त कृपा और दया के अगाध सिन्धु स्वरूप हैं। श्रीमन्मुकुन्दशरणागति मन्त्र एवं श्रीगोपालमन्त्रराज के दीक्षादान में अनुग्रह परायण हैं ऐसे व्रज में सदा सुशोभित जगद्गुरुवरेण्य श्रीमन्निम्बार्काचार्य भगवान् को सभक्ति नमन करते हैं।

(४)

श्रीवेदान्तकामधेनु दशश्लोकी, वेदान्तपारिजात सौरभ (ब्रह्मसूत्र भाष्य), प्रातःस्तवराज, श्रीराधाष्टक स्तोत्र, मन्त्र रहस्यषोडशी, प्रपन्नसुरतमञ्जरी आदि अनेक ग्रन्थों की रचना में अत्यन्त कुशल एवं श्रीसनकादि नारद संसेवित गुञ्जाफल सदृश सूक्ष्म शालग्राम विग्रह स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में सर्वदा तत्पर, गिरिराज गोवर्धन की उपत्यका में स्थित निम्बग्राम की निम्बकुञ्जों में विराजित सदा प्रसन्न और शान्त स्वरूप अति प्रसिद्ध व्रज में सुशोभित आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् उनके श्रीचरण कमलों में अन्तःकरण से पुनः पुनः प्रणति अर्पित है।

(५)

भगवदीय युगल रस ही जिनके मंगलमय जीवन का एकमात्र परमाधार रूप है विशुद्ध भृगुवंशोद्भव विप्रवर महर्षि श्रीअरुण के पवित्र विप्ररूप में प्रकट एवं परम पावन भारतवर्ष की सुरमणीय वसुधा पर युगलकिशोर भगवान् की चरणाम्बुजों की दिव्य मधुर भक्ति के प्रचार में सदा सन्नद्ध। इस सम्पूर्ण भूतल पर अपने स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त का जिन्होंने प्रतिष्ठापन किया जो व्रज धरणी पर सदा ही अत्यन्त शोभित श्रीनिम्बार्क भगवान् उनकी पावन वन्दना करते हैं।

(६)

कभी तो गम्भीर धारावाहिनी श्रीयमुना के कमनीय तट पर तो कभी गिरिराज श्रीगोवर्धन सन्निकटवर्ती निम्बग्राम समीपस्थ वनोपवनों में, कभी अपने आत्मचिन्तन साधनों में, कभी अपने परमाराध्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु के

(७)

समस्तशास्त्रसम्मतं समस्तवेदकोविदं
समस्तभावभावितं समस्तसारसारदम् ।
समस्तभक्तसेवितं समस्तदेवमण्डितं
व्रजे सदा सुशोभितं नमामि निम्बभास्करम् ।।

(८)

सुचन्दनाङ्कितोर्ध्वपुण्ड्रभव्यभालभासितं
सुपीतवस्त्रभूषितं मनोज्ञकान्तिमन्दिरम् ।
कुतर्कखण्डने पटुं वरेण्यदिव्यविग्रहं
व्रजे सदा सुशोभितं नमामि निम्बभास्करम् ।।

(९)

निम्बार्कस्तवराजोऽयं द्वैताद्वैतनिदर्शकः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ।।

ध्यान में तो कभी दुःखीजनों के कष्ट निवारणादि सर्वविध सुरक्षा करने में, और कभी अपने स्वाराध्य की अर्चा सेवा में सदा अवस्थित व्रज में सर्वदा सुशोभित श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् को अभिनमन करते हैं।

(७)

पुराणादि शास्त्रों एवं स्वसाम्प्रदायिक समस्त शास्त्रों में जिनका वर्णन पर्याप्त रूप से प्राप्त है। समस्त वेदोपनिषदों के साङ्गोपाङ्ग परम मर्मज्ञ। समस्त भगवदीय दिव्य भावों से जो सदा प्रपूरित हैं। समस्त श्रेष्ठतम भगवत्परक रस सार के भी सार को प्रदान करने वाले, समस्त भावुक भक्त समुदाय द्वारा सर्वदा परिसेवित, समस्त उत्तमोत्तम देववृन्दों द्वारा सुशोभित श्रीव्रजमण्डल की दिव्य धरा पर प्रकाशमान श्रीनिम्बार्क भगवान् को नित्यशः प्रणति पूर्वक अभिवन्दना करते हैं।

(८)

सुन्दर गोपीचन्दन से जिनके अति कमनीय ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक सुशोभित है, पीताम्बर धारण किये, परम मनोहर तेजोमय कान्ति स्वरूप, प्रतिवादियों के कुतर्क खण्डन में अतिशय प्रवीण एवं परम श्रेष्ठ देदीप्यमान सुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् को जो व्रज वसुधा स्थित गिरिराज श्रीगोवर्धन निकटवर्ती निम्बग्राम में सदा सुशोभित उन्हें सनिष्ठ प्रणामाञ्जलि समर्पित करते हैं।

(९)

स्वाभाविक द्वैताद्वैत प्रतिपादक एवं भगवान् श्रीराधाकृष्ण की उपासना द्योतक श्रीनिम्बार्क-स्तवराज की रचना जिस विधा से सम्पन्न हुई समर्पित है।

श्रीनिम्बार्कचरिताष्टकम्

(१)

श्रीकृष्णहस्ताम्बुजचक्ररूपं
वेदान्तसूत्रादिकभाष्यकारम् ।
सर्वेश्वराराधननित्यलीनं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(२)

देवर्षिवर्येण च लब्धदीक्षं
राधामुकुन्देप्सितकर्मदक्षम् ।
जगद्गुरुं श्रीरसिकेशमाद्यं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(३)

श्रीवेधसाऽवाप्तविशेषनाम्ना
विख्यातनिम्बार्कमतीवदिव्यम् ।
प्रचण्ड-वादीन्द्र-करीन्द्रसिंहं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(४)

श्रीयुग्मभक्तिप्रचुरप्रचारे
सदा सुदक्षं गिरिराजवासम् ।
नीलाब्जरूपं परमं शरण्यं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

श्रीनिम्बार्कचरिताष्टकम्

(१)

निखिलभुवनमोहन सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के कर-कमलों में सदा सुशोभित चक्रराज श्रीसुदर्शन के मङ्गलमय स्वरूप ब्रह्मसूत्र, उपनिषद्, श्रीमद्भगवद्गीता इस प्रस्थानत्रयी पर जिन्होंने भाष्य की रचना की, श्रीसनकादि संसेव्य भगवान् सर्वेश्वर की पावन आराधना में सर्वदा तल्लीन आद्याचार्यवर्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य जिनका अचिन्त्य स्वरूप है। उनकी हम मनसा-वाचा-कर्मणा समग्र विधि से स्तुति करते हैं।

(२)

देवर्षिवर्य श्रीनारदजी से जिन्होंने श्रीगोपालमन्त्रराज की वैष्णवी दीक्षा प्राप्त की, युगलकिशोर भगवान् श्रीराधामुकुन्द की अभिलषित सेवा सम्पादन में जो परम कुशल है ऐसे रसिकेश्वर आद्याचार्यवर्य जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य के अनिर्वचनीय स्वरूप की सर्वात्मना स्तुति करते हैं।

(३)

समग्र सृष्टि के रचयिता श्रीब्रह्मा द्वारा जिन्होंने परम दिव्य निम्बार्क नाम को प्राप्त कर परम विख्यात हुए, प्रबलतम तर्क परायण जो वादियों में उच्चतम हस्ति (हाथी) रूप उनके लिए सिंह के समान जिनका सर्वोच्च स्वरूप है। ऐसे आचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् उनके अचिन्त्य स्वरूप की वन्दना करते हैं।

(४)

वृन्दावन नित्यनिकुञ्जविहारी युगलकिशोर श्यामाश्याम भगवान् श्रीराधाकृष्ण की दिव्य भक्ति के प्रचुर प्रचार-प्रसार में जो अत्यन्त कुशल हैं एवं सर्वदा गिरिराज श्रीगोवर्धन की उपत्यका में निवास करते हैं। नील-कमल के सदृश जिनका मंगलमय स्वरूप है, तथा परम शरण्य आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् के असीम स्वरूप की प्रार्थना करते हैं।

(५)

श्रीनिम्बधाम्नि प्रभुभक्तिमग्नं
महर्षिवर्याऽरुणदिव्यसूनुम् ।
श्रीमज्जयन्तीसुतमर्चनीयं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(६)

राधापदाम्भोजपरागभृङ्गं
कृष्णाऽङ्घ्रिसेवापरिलग्नचित्तम् ।
वृन्दावनश्रीरविजातटस्थं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(७)

श्रुत्यर्थगाम्भीर्यसुबोधकारं
गोपालमन्त्रार्थरहस्यविज्ञम् ।
मुकुन्दमन्त्रार्थविवेकशीलं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(८)

सदा मुदा वैष्णवताप्रचारे
तल्लीनमाचार्यमतीवनिष्ठम् ।
सनन्दनाद्याश्रितनित्यहृद्यं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(९)

निम्बार्कमहिमापूर्णं निम्बार्कचरिताष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

(५)

व्रजस्थ श्रीगोवर्धन के निकटवर्ती निम्बार्कधाम-निम्बग्राम में सर्वेश्वर प्रभु की पराभक्ति में संलग्न महर्षिवर्य श्रीअरुण के दिव्य आत्मज माता जयन्ती के मंगलमय तनय जो सर्वदा अर्चनीय है ऐसे परमाचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् के लोकोत्तर स्वरूप की मंगलमयी स्तुति करते हैं।

(६)

वृन्दावनाधीश्वर, सर्वेश्वरी, श्रीराधाप्रियाजू के युगल चरणारविन्द के दिव्य पराग मकरन्द के पान में भृङ्ग स्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण के चरण-कमलों में जिनका मन परम तल्लीन है श्रीधाम वृन्दावन की शोभा स्वरूप श्रीयमुना के पावन पुलिन पर विराजित आचार्यवर श्रीनिम्बार्क भगवान् की कमनीय आराधना करते हैं।

(७)

उपनिषदों में श्रुति मन्त्रों का जो गम्भीर अर्थ उसको सरलता से बोध कराने वाले एवं श्रीगोपालतापिनी-उपनिषद् में परिवर्णित श्रीगोपाल-मन्त्रराज के रहस्यपूर्ण अर्थ के परम मर्मज्ञ एवं उसके अवबोध कराने में परम प्रवीण एवंविध आद्याचार्य वरेण्य श्रीनिम्बार्क भगवान् की पावन स्तुति करते हैं।

(८)

वैष्णवता के प्रचुर प्रचार में सदा सर्वदा परम उल्लास पूर्वक जो सदा तत्पर हैं भगवान् की नित्य परिचर्या में परम निष्ठावान् श्रीसनकादि महर्षियों एवं देवर्षि श्रीनारदजी का समाश्रय पाकर जो अत्यन्त प्रमुदित रहते हैं, उन आचार्यवर्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य के अचिन्त्य स्वरूप की स्तुति करते हैं।

(९)

श्रीनिम्बार्क महिमा से परिपूर्ण इस श्रीनिम्बार्कचरिताष्टक स्तोत्र की हमारे द्वारा जिस विधा से रचना हुई सेवा में प्रस्तुत है।

श्रीनिम्बार्क षोडशी

(१)

प्रसिद्धं नियमानन्दं जयन्तीनन्दनं भजे ।
निम्बार्कमाद्यमाचार्यं राधाकृष्णऽङ्घ्रिचिन्तकम् ।।

(२)

अरुणात्मजमाराध्यं द्वैताद्वैतप्रवर्तकम् ।
हरेश्चक्रावतारश्च नमामि निम्बभास्करम् ।।

(३)

श्रीराधाकृष्णकुञ्जेश - पराभक्तिप्रचारकम् ।
कपालवेधसिद्धान्त-दर्शकं देशिकं भजे ।।

(४)

भारतस्य महाराष्ट्र-राज्ये गोदावरीतटे ।
सुरम्येऽजनि यः पूर्वं तं निम्बार्कं भजाम्यहम् ।।

(५)

श्रीहंस-सनकादीनां देवर्षिनारदस्य च ।
दिव्यपरम्परायां श्री-निम्बार्कं हृदि भावये ।।

(६)

गोपालमन्त्रदीक्षासु कृपादाने च तत्परम् ।
सर्वेश्वराऽर्चने दक्षं नौमि निम्बदिवाकरम् ।।

श्रीनिम्बार्क षोडशी

(१)

भगवान् श्रीराधाकृष्ण के युगल चरण-कमलों के चिन्तन में अभिरत आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् जो कि नियमानन्द नाम से माता श्रीजयन्ती के पुत्र रूप में प्रकट उन श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(२)

महर्षि श्रीअरुण के परम प्रिय आत्मज रूप में विराजमान भगवान् श्रीकृष्ण के कर-कमलों में सर्वदा शोभायमान चक्रराज श्रीसुदर्शन के अवतार रूप स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को अभिवन्दन करते हैं।

(३)

वृन्दावन निकुञ्जेश्वर भगवान् श्रीराधामाधव उनकी रसमयी पराभक्ति के परम प्रचारक कपालवेध (एकादशी व्रतादि में) सुप्रसिद्ध सिद्धान्त के प्रदर्शक आचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क का भजन करते हैं।

(४)

भारतवर्ष के महाराष्ट्र क्षेत्र में पुण्य सलिला गोदावरी के रमणीय तट पर (मूंगी ग्राम में) जिन्होंने प्राचीन काल में आचार्य स्वरूप से सुदर्शन चक्र ने ही अवतार धारण कर श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य के रूप में लोक विख्यात हुए। उन श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(५)

श्रीहंस भगवान् श्रीमहर्षिवर्य सनकादिक एवं देवर्षि प्रवर श्रीनारदजी की पावन दिव्य परम्परा में श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भूतल पर प्रगट होकर सम्प्रदाय का शुभारम्भ किया। एवंविध श्रीनिम्बार्क भगवान् को अपने अन्तःकरण में धारण करते हैं।

(६)

श्रीगोपालमन्त्रराज की दीक्षा कृपा पूर्वक प्रदान करने में सदा तत्पर श्रीसनकादि संसेवित देवर्षिवर्य नारदजी से सम्प्राप्त गुञ्जाफल सम शालग्राम स्वरूप भगवान् श्रीसर्वेश्वर की पावन अर्चना में परम प्रवीण श्रीनिम्बार्क

(७)

सुरम्ये दक्षिणे मूंगी-ग्रामे पैठणसन्निधौ
गोदावरीप्रतीरे च निम्बार्कं समुपाश्रये ।

(८)

व्रजे वृन्दावने रम्ये यमुनापुलिने स्थितम्
जगद्गुरुवरं नित्यं निम्बार्काचार्यमाश्रये ।

(९)

श्रीगोपीचन्दनाऽलिप्तमूर्ध्वपुण्ड्रधरं सदा
सत्प्रस्थानत्रयीभाष्य-कारं निम्बार्कमाश्रये ।

(१०)

श्यामश्रीसंयुताऽजस्रंतिलकाऽङ्कितशोभनम्
सततं नौमि निम्बार्कं कोटिसाष्टाङ्गकर्मणा ।

(११)

तुलसीकाष्ठसन्माला-शोभितं निम्बभास्करम्
अतीवकमनीयञ्च नीलाभं नौमि नित्यशः ।

(१२)

भावुकैः श्रद्धया भक्तैरुपास्यं रसिकैर्हृदा
आचार्यप्रवरं वन्दे निम्बार्कं करुणालयम् ।

(१३)

श्रीश्रीनिवासवर्याय' कृतोपदेशकं परम्
स्वशिष्याय प्रशस्ताय निम्बार्कं तं विभावये ।

भगवान् उनकी वन्दना करते हैं।

(७)

भारत के दक्षिण भाग में पैठण के समीप परम सुरमणीय मूँगी ग्राम में पुण्य तोया गोदावरी के परम मनोहर तट पर स्थित अरुणाश्रम में शोभायमान श्रीनिम्बार्क भगवान् का सर्वविध रूप से हम आश्रय्र लेते हैं।

(८)

व्रजमण्डल में परम सुरम्य वृन्दावन धाम के यमुना पुनिल पर अतिशय सुशोभित जगद्गुरु वरेण्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य उनका नित्य आश्रय शाश्वत रूप से ग्रहण करते हैं।

(९)

श्रीगोपीचन्दन से कमनीय ललाट पर अंक्रित ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक सदा शोभायमान है जिनके उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, श्रीमद्भगवद्गीता इस प्रस्थानत्रयी पर जिन्होंने भाष्य की रचना की है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् के हम समाश्रित्त हैं।

(१०)

श्यामश्री जिनके युगल भ्रुवों के मध्य में और गोपीचन्दन के तिलक से जिनका भव्य ललाट अत्यन्त शोभायमान है। ऐसे आद्याचार्यवर्य श्रीभगवन्निम्बार्क की कोटि-कोटि साष्टाङ्ग प्रणति पूर्वक निरन्तर वन्दना करते हैं।

(११)

श्रीतुलसी की मञ्जुल कण्ठी माला जिनके कण्ठ प्रदेश में अति सुशोभित है, नीलाभ स्वरूप अत्यन्त मनोहर श्रीनिम्बार्क भगवान् को नित्यप्रति अभिनमन करते हैं।

(१२)

परम भावुक भक्ति परायण रसिक भक्तों के अन्तर्हृदय से उपासनीय करुणावरुणालय आचार्यप्रवर श्रीभगवन्निम्बार्क की सर्वतोभावेन अभिवन्दना करते हैं।

(१३)

अपने परम पट्टशिष्य वेदान्त कौस्तुभ भाष्यकार पाञ्चजन्य शंखावतार

(१४)

श्रीमन्निम्बार्कवर्यञ्च स्मरामि श्रद्धयान्वितम्
मनसा कर्मणा वाचा निम्बग्रामनिवासिनम् ।

(१५)

युगलाराधने लीनं जीवकल्याणभावनम्
व्रजस्थरसिकै-र्गेयं निम्बार्कं हृदि भावये ।

(१६)

शरणवत्सलं धीरं वन्दे निम्बदिवाकरम्
आद्याचार्यं समाख्यातं सम्प्रदायप्रवर्तकम् ।

(१७)

निम्बार्कषोडशी गेया सर्वतापनिवारणी
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ।

श्री श्रीनिवासाचार्यवर्य को जिन्होंने वेदान्त एवं उपासना परक परम मंगलमय उपदेश प्रदान किये एतादृश श्रीनिम्बार्क भगवान् की मंगलमयी भावना करते हैं।

(१४)

व्रजस्थ गोवर्धन के सन्निकटवर्ती निम्बग्राम में जिनका सतत निवास है उन श्रीनिम्बार्क भगवान् का मन, वाणी, कर्म से श्रद्धा पूर्वक स्मरण करते हैं।

(१५)

प्राणीमात्र के कल्याण के लिए जो सदा तत्पर रहते हैं भगवान् श्रीराधाकृष्ण की आराधना में सदा लीन व्रज के रसिक भक्तों द्वारा जिनका सदा मंगलमय गान होता है। उन श्रीनिम्बार्क भगवान् की अपने हृदय में भावना करते हैं।

(१६)

निम्बार्क सम्प्रदाय के आद्य प्रवर्तक परमधीर अर्थात् श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि यावन्निखिल शास्त्रों के परिज्ञाता, महामनीषी वरेण्य, शरणागत वत्सल आद्याचार्य स्वरूप से परम प्रसिद्ध श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य की वन्दना करते हैं।

(१७)

आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन त्रिविध तापों का निवारण करने वाली यह निम्बार्क षोडशी जो गेय योग्य है इसकी रचना श्रीनिम्बार्क भगवान् की कृपा से हमें निमित्त बनाकर सम्पादित हुई।

श्रीनिम्बार्क - गीतिका

(१)

जयति सर्वदा निम्बदेशिको व्रजवने मुदा रासदर्शकः
युगलराधिकाकृष्णभावनः परमशोभनो निम्बभास्करः ।

(२)

युगलभक्तिदो युग्मचिन्तको व्रजति भूतले शास्त्रविद्वरः
हरिपदाम्बुजध्यानमानसः प्रतिपलं मुदा निम्बभास्करः ।

(३)

तिलकशोभितश्चन्दनाऽर्चितो नलिनमालया मञ्जुविग्रहः
सुरमते महाशान्तदर्शनो विपिनधाम्नि वै निम्बभास्करः ।

(४)

निखिलसंसृतेस्तापमोचकः श्रुतिमताम्बुधेः पारदर्शकः
सकलशास्त्रविद्भक्तिपोषको भुवि सुशोभते निम्बभास्करः ।

(५)

अखिलवैष्णवाऽऽनन्दवर्द्धको रससुधाप्रदो मानमर्दनः
जयति नित्यदा भानुसुप्रभाप्रकटकारको निम्बभास्करः ।

श्रीनिम्बार्क गीतिका

(१)

श्रीवृन्दावन धाम में सर्वदा प्रिया प्रियतम की छवि को अपने हृदय में विराजमान कर नित्यनिकुञ्जविहारी युगलप्रियाप्रियतम की रासलीला का दर्शन कर आह्लादित मन, परम शोभायमान श्रीगिरिराज गोवर्धन की उपत्यका में स्थित निम्बग्राम में सुशोभित श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(२)

जो सर्वदा युगल प्रियाप्रियतम का चिन्तन करते हुए इस भूतल पर विचरण करते हैं और हमें युगल प्रियाप्रियतम की भक्ति प्रदान करने वाले हैं और जो वेदादि शास्त्रों के विद्वानों में श्रेष्ठ प्रतिपल युगल प्रिया प्रियतम के चरणारविन्द का ध्यान अपने हृदय में करते हैं ऐसे परम आह्लादित श्रीनिम्बार्क प्रभु की जय हो।

(३)

परम सुन्दर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक जिनके कमनीय ललाट पर शोभायमान है जो अगर चन्दन आदि से समर्चित, कमल की माला धारण किए हुए, मनोहारी परम रमणीय श्रीवृन्दावन धाम में परम शान्त जिनके दर्शन हैं, ऐसे श्रीनिम्बार्क प्रभु की जय हो ।

(४)

जो सम्पूर्ण संसार के कष्टों का निवारण करने वाले हैं और जो वैदिक सिद्धान्त रूपी सागर के ज्ञाता, स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त प्रवर्तक वेदादि सम्पूर्ण शास्त्रों को जानने वाले, युगल प्रिया-प्रियतम की पराऽपरा भक्ति के संपोषक इस भूतल पर परम शोभायमान श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(५)

जो सम्पूर्ण वैष्णव जन भगवद्भक्तों को आनन्द प्रदान करने वाले हैं जो वैष्णवजनों के अभिमान को मर्दन कर युगल चरणारविन्दों में भक्ति रसामृत प्रदान करने वाले तथा जगत्सृष्टा ब्रह्माजी को निम्बवृक्ष पर सूर्य भगवान् के दर्शन कराके उनके संशय को नष्ट करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान्

(६)

शरणसौख्यदो राजते व्रजे गिरिधराश्रितो निम्बसारभुक् ।
अमितगोधनाऽऽनन्दसम्प्रदो मतिमतां वरो निम्बभास्करः ।।

(७)

पतितपावनो ब्रह्मविद्वरो गुणिजनैः स्तुतो विज्ञसत्तमैः ।
मधुरिमायुतश्चारु दीप्यते प्रणतिपोषको निम्बभास्करः ।।

(८)

यति-मुनीश्वरै-र्नित्यसेवितः सततगोप्रियो देशिकोत्तमः ।
हरिकरायुधः श्रौतधर्मदो विलसतीष्टदो निम्बभास्करः ।।

(६)

मुनिवरश्वरः कण्ठिकाधरो वसति सर्वदा निम्बपत्तने ।
तरणिजातटे तूर्णतुष्टिदः करुणया गिरा निम्बभास्करः ।।

(१०)

अथ सुदीक्षितो नारदेन वै विजयते सदा विश्वशान्तिदः ।
सुकचमञ्जुलो युग्मसेवया मुदितमानसो निम्बभास्करः ।।

(११)

उपदिशत्यहो निम्बपत्तने विविधवेदविद् - वैष्णवाग्रजः ।
सुभगशोभितो वन्दया व्रजे गिरिवनान्तिके निम्बभास्करः ।।

की जय हो।

(६)

जो व्रज में गिरिराज गोवर्धन की तलहटी में स्थित निम्बग्राम में असंख्य गोवृन्द की सेवा करते हुए शोभायमान सभी को आनन्द प्रदान करते हैं, निम्ब क्काथ (रस) का सेवन करने वाले वेदादि शास्त्रों के विद्वानों में श्रेष्ठ जिनकी शरण में हमें सभी सुखों की प्राप्ति होती है ऐसे श्रीनिम्बार्क प्रभु की जय हो।

(७)

ब्रह्म को जानने वालों में श्रेष्ठ गुणीजनों विद्वानों के द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है, शरणागत रक्षक हमारे सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाले, परम देदीप्यमान सुन्दर मधुरातिमधुर जिनके दर्शन हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(८)

ऋषि-मुनियों के द्वारा जिनकी आराधना की जाती है निरन्तर जो गोसेवा में संलग्न रहते हैं जो हमारी मनोवांछित कामनाओं को पूर्ण करने वाले है ऐसे सुदर्शन चक्रावतार वैदिक सनातन धर्म के रक्षक सम्पोषक निम्बग्राम में शोभायमान श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(९)

जिन्होंने सुन्दर तुलसी की कण्ठी अपने गले में धारण की हुई हैं, ऋषि-मुनियों में श्रेष्ठ जो श्रीयमुनाजी के पावन पुलिन पर एवं निम्बग्राम में विराजते हैं तथा जिन्हें करुण आर्त्त स्वर से पुकारने पर हमें त्वरित आनन्द प्रदान करते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(१०)

देवर्षि नारदजी से वैष्णवी दीक्षा प्राप्त कर सदा श्रीराधामाधवजी की युगल उपासना में प्रसन्न चित्त रहने वाले सुन्दर काले घुंघराले बालों वाले जो सम्पूर्ण संसार के क्लेशों को हरण कर शान्ति प्रदान करते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(११)

विविध वेदान्तादि शास्त्रों के ज्ञाता वैष्णवों के आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क

(१२)

उपनिषन्मना सूत्रभाष्यकृत् कलिकलाहरः शास्त्रसृष्टिकः ।
इह विभासते निम्बसूर्यकृत् व्रजलतावने निम्बभास्करः ।।

(१३)

हरिपदाम्बुजे तृप्तिसम्प्रदे विधि-हराञ्चिते नित्यचिन्तकः ।
जनमतिप्रदो मन्त्रकोविदो हरति कल्मषं निम्बभास्करः ।।

(१४)

जयति नित्यशो मन्त्रजापको निगमतत्त्वविद् तन्त्रपारगः ।
कलितकोकिलानादफुल्लितस्तरुलतातले निम्बभास्करः ।।

(१५)

प्रणतिपालकः साधुसेवितः प्रतिदिशं गतः स्वेष्टसम्प्रदः ।
अति सुशोभते दैन्यभावितः स्मितमुखाम्बुजो निम्बभास्करः ।।

(१६)

नियमपालने नित्यदा रतो नवनिकुञ्जगो राजते व्रजे ।
तरणिपूजने चारु संस्थितः परिकरैः सह निम्बभास्करः ।।

भगवान् श्रीगिरिराजजी के सन्निकट व्रजक्षेत्र निम्बग्राम में जहाँ तुलसी का बगीचा परम शोभायमान है वहाँ भगवद् भक्तों को उपदेश देते हुए विराज रहे हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(१२)

व्रजक्षेत्र की लता वितानों से सुसज्जित निम्बग्राम जहाँ निम्बवृक्ष पर अपने तेज को समारोपित किया वहाँ श्रीनिम्बार्क भगवान् उपनिषदों का मनन परिशीलन करते हुए श्रुति सम्मत ''वेदान्त पारिजात सौरभ'' महाभाष्य एवं विविध शास्त्रों की रचना करते हुए परम शोभायमान है वे हमारे सतापों का निवारण करने वाले हैं। ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(१३)

जगत्पिता ब्रह्मा एवं चन्द्रमौलि भगवान् शंकर के द्वारा जिनकी समभ्यर्चना की जाती है, ऐसे श्रीयुगलकिशोर श्यामाश्याम के चरणारविन्द का श्रीनिम्बार्क भगवान् नित्य चिन्तन करते हैं, वैदिक मन्त्रज्ञ ऋषि मुनियों में श्रेष्ठ हमारे पापों को नष्ट कर सभी को दिव्य ज्ञान ज्योति प्रदान करते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(१४)

जो वृन्दावनविहारी युगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण के युगल मन्त्रराज का जप करते हुए उनके ध्यान में संलग्न वैदिक तत्वज्ञ तन्त्रविद्या में पांरगत श्रीनिम्बार्क भगवान् जो कोयल-मयूरादि की मधुर गुंजार से प्रफुल्लित तरु लताओं के नीचे विराजमान है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(१५)

जो प्रत्येक दिशाओं में परिभ्रमण कर साधु सज्जनों की दैन्यपूर्ण भाव से सेवा करते हैं, वे शरणागत रक्षक है वे हमारी सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं, जिनके मुखारविन्द पर मधुर मन्द हास्य परम शोभायमान है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(१६)

व्रजमण्डल की लता निकुञ्जों में विहरण करते हुए प्रिया प्रियतम श्रीश्यामाश्याम की युगल छवि की नित्य नियम पूर्वक सेवा करते हुए अपने परिकर के साथ में तरणिजा श्रीयमुनाजी के पूजन में विराजे हुए है ऐसे

(१७)

निम्बार्कगीतिका गेया निम्बार्कभक्तिसम्प्रदा ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ।।

श्रीनिम्बार्क-दशश्लोकी

(१)

निम्बार्क निम्बभानुञ्च निम्बदिवाकरं भजे ।
निम्बच्छायासमारूढं `निम्बग्रामे व्रजावनौ ।।

(२)

निम्बकुञ्जाऽङ्गणे नौमि नन्दितं निम्बभास्करम् ।
नन्दनन्दनगोविन्दनृत्यकेलिकलाविदम् । ।

(३)

नववृन्दावने धाम्नि, नूतनहर्म्यनिवासिनम् ।
नवनीरदश्यामाभं नित्यं निम्बरविं भजे ।।

(४)

निम्बपत्रावलीमालानव्यपुष्परसप्रियम् ।
निम्बकान्तिधरं देवं निम्बादित्यं नमाम्यहम् ।।

(५)

निम्बद्रुसेवया तुष्टं निम्बक्वाथैकभोजनम् ।
निम्बद्युमणिमाचार्यं नमामि कञ्जलोचनम् ।।

श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(१७)

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी के द्वारा रचित यह श्रीनिम्बार्क गीतिका गेय है गान करने योग्य है, जो श्रीनिम्बार्क भगवान् के चरणों में भक्ति प्रीति प्रदान करने वाली है।

श्रीनिम्बार्क - दशश्लोकी

(१)

व्रज वृन्दावन क्षेत्रान्तर्गत स्थित श्रीनिम्बग्राम में निम्बवृक्ष की छाया में समासीन श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम आराधना करते हैं

(२)

आनन्दकन्दनन्दनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण की नित्य कला रास़लीला के तत्व को जो भली भाँति जानते हैं जो निम्बलता कुञ्ज में विराजित आनन्दस्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(३)

नवीन लतापल्लवाच्छादित श्रीवृन्दावन धाम में स्थित नूतन प्रासाद में निवास करने वाले नवीन बादलों के समान (सदृश) श्याम कान्ति स्वरूप में विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम उपासना करते हैं।

(४)

जिन्होंने निम्बपत्र से बनी हुई सुन्दर माला अपने गले में धारण किए हुए हैं और नवीन पुष्प रस के जो प्रिय है ऐसे निम्ब कान्ति सदृश स्वरूप को धारण करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को मैं प्रणाम करता हूँ।

(५)

जो निम्ब की द्रुम लताओं के सेवन से परम आह्लादित होते हैं एवं निम्बरस ही जिनका भोजन है निम्ब कान्ति से युक्त मणि स्वरूप सुन्दर कञ्ज पुष्प के समान जिनके नेत्र है ऐसे आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को मैं प्रणाम करता हूँ।

(६)

निकुञ्जराधिकाकृष्णनित्यध्याने रतं हृदा ।
निकुञ्जे रङ्गदेवीश्च निम्बार्कं नौमि नित्यशः ।।

(७)

नवीनवसनै रम्यं नवकौशेयधारिणम् ।
निम्बविभाकरं नौमि नवश्यामलसुन्दरम् ।।

(८)

निर्जरैः किन्नरैरर्च्यं नवरत्नावलीधरम् ।
निम्बदिनेशमाचार्यं नमामि करुणाकरम् ।।

(९)

निम्बद्रुमेऽर्कदेवेन निशायां स्थापितो यदा ।
निम्बार्कः येन तं नौमि नितरां न्यायदायकम् ।।

(१०)

निवासो यस्य सद्भूमौ निम्बतरुवराङ्गणे ।
नमामि निम्बभानुं तं नित्यं वृन्दावने निभम् ।।

(११)

श्रीनिम्बार्कदशश्लोकी युग्मभक्तिप्रदायिनी ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ।।

(१)

सुदर्शनस्वरूपेण श्रीकृष्णकरशोभितः ।
प्रियाद्याचार्यरूपेण निम्बार्कोभुवि राजते ।।

(६)

वृन्दावन की लता कुञ्ज में रङ्गदेव्यादि सखियों के साथ नित्यनिकुञ्ज विहारी श्रीराधाकृष्ण के युगल स्वरूप का अपने हृदय में जो निरन्तर ध्यान करते हैं, ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् को मैं हम नित्य प्रणाम करता हूँ।

(७)

जो नवीन रमणीय सुन्दर वस्त्र एवं नवीन रेशमी (कौशेय) वस्त्र धारण किए हुए हैं, ऐसे नवीन श्यामल सुन्दर शरीर वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(८)

जिनकी गान नृत्य कला आदि में प्रवीण देववृन्द किन्नरों के द्वारा अभ्यर्चना (पूजन) की जाती है एवं जिन्होंने हीरा, मोती, माणिक्यादि नवरत्नों की सुन्दर माला अपने गले में धारण कर रखी है, जो हम पर कृपा बरसाने वाले हैं, ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् के चरणों में हम प्रणाम करते हैं।

(९)

जब श्रीनिम्बार्क भगवान् ने अपने ही स्वरूप को रात्रिकाल में निम्बवृक्ष पर स्थापित किया और (ब्रह्माजी) के सुदर्शनचक्रावतार होने रूपी संशय को मिटाया) सुन्दर न्याय प्रदान करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं ।

(१०)

जिनका सद्धर्म भूमि श्रीवृन्दावन धाम में निम्बतरुवरलता-पादपाच्छादित सुन्दर छाया में जिनका निवास है, ऐसे सुन्दर स्वरूप में विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् को सदा हम प्रणाम करते हैं।

(११)

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के द्वारा विनिर्मित ''श्रीनिम्बार्क दशश्लोकी'' हमको युगलकिशोर श्यामाश्याम के चरणों में भक्ति प्रदान करने वाली है।

(१)

जो सुदर्शनचक्रराज के रूप में भगवान् श्रीकृष्ण के कर कमल मे सुशोभित होते हैं, ऐसे हमारे प्रिय आद्याचार्य भगवान् इस परम पवित्र

(२)

महामङ्गलरूपोऽयं द्वैताद्वैतप्रकाशकः ।
असीमानन्ददायी च निम्बार्को भुवि राजते ।।

(३)

राधाकृष्णपराभक्तिसर्वदासमुपासकः ।
अप्रतिमप्रभापूर्णो निम्बार्को भुवि राजते ।।

(४)

सनकादिसमाराध्यसर्वेश्वराऽर्चनारतः ।
लोककल्याणसंलग्नो निम्बार्को भुवि राजते ।।

(५)

वृन्दावने व्रजे नित्यं निकुञ्जरसपोषकः ।
निम्बग्रामसदा सेवी निम्बार्को भुवि राजते ।।

(६)

एकादश्युपवासेषु कपालवेधसेवनः ।
जगद्गुरुवरेण्यश्च निम्बार्को भुवि राजते ।।

(७)

श्रीप्रस्थानत्रयीभाष्यकर्ता वेदान्तचिन्तकः ।
दाता गोपालमन्त्रस्य निम्बार्को भुवि राजते ।।

(८)

गोपालमन्त्रजापेऽग्य्रो वैष्णवाचार्यसत्तमः ।
मन्त्रदीक्षाप्रदाता वै निम्बार्को भुवि राजते ।।

भारतभूमि पर विराजते हैं।

(२)

द्वैताद्वैत सिद्धान्त प्रवर्तक जिनका महान् मङ्गलमय कल्याणकारी स्वरूप है, वे हमें असीम आनन्द प्रदान करने वाले है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भारतभूमि पर शोभित होते हैं।

(३)

जो चरणकिंकरीक के रूप में श्रीराधाकृष्ण के युगल चरणारविन्द की पराभक्ति पूर्ण उपासना करते हैं, और जो देदीप्यमान कान्ति युक्त श्रीनिम्बार्क भगवान् के स्वरूप में इस भारतभूमि पर सुशोभित होते हैं।

(४)

सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार द्वारा संसेवित श्रीसर्वेश्वर भगवान् की समर्चना में सदा अनुरक्त रहने वाले एवं संसार के कल्याणकारी मङ्गलप्रद कार्यों में सन्नद्ध श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भारमभूमि पर विराजते हैं।

(५)

व्रजक्षेत्र श्रीवृन्दावन धाम की प्रफुल्लित नव लता निकुञ्जों में विराजित श्रीराधाकृष्ण के युगल चरणारविन्द में अनुरक्ति रूपी निकुञ्ज भक्ति रस के प्रकाशक सदा निम्बग्राम में निवास करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भारतभूमि पर सुशोभित होते हैं।

(६)

एकादशी उपवास में ''कपाल वेध'' नामक सिद्धान्त प्रवर्तक जगद्गुरु वरेण्य आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भूतल पर सुशोभित होते हैं।

(७)

''श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषद् ब्रह्मसूत्र'' नाम्नि श्रीप्रस्थानत्रयी सम्मत महाभाष्य ''वेदान्त पारिजात सौरभ'' नामक भाष्यकार एवं उपनिषद् वेद वेदान्तादि का हमेशा चिन्तन करने वाले तथा युगल श्रीराधाकृष्ण के अष्टादशाक्षरी ''श्रीगोपालमन्त्रराज'' प्रदान करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भारतभूमि पर परम सुशोभित होते हैं।

(८)

जो समस्त वैष्णवाचार्यों में सर्वोत्तम है एवं ''श्रीगोपालमन्त्रराज''

(९)

कामधेनुदशश्लोकीप्रणेता सद्भिरर्चितः।
उर्ध्वपुण्ड्रधरो धीमान्निम्बार्को भुवि राजते ।।

(१०)

तुलसीमालया रम्यो गोपीचन्दनचर्चितः।
स्वाध्यायी वेदशास्त्रस्य निम्बार्को भुवि राजते ।।

(११)

श्रीनिकुञ्जरसाचार्यो युग्मलीलासुचिन्तकः।
श्यामश्रीशोभितश्चारु निम्बार्को भुवि राजते ।।

(१२)

श्रीकृष्णद्वारकाधाम्नि तप्तमुद्रा तिरोहिता।
समारब्धा पुनर्येन निम्बार्को भुवि राजते ।।

(१३)

व्रजजनैः प्रपूज्यश्च रसिकैर्भावुकैः सदा।
अनन्तगुणसम्पन्नो निम्बार्को भुवि राजते ।।

(१४)

नैमिषारण्यभूभागे गोमतीपुलिने प्रिये।
नितरां शोभितस्तत्र निम्बार्को भुवि राजते ।।

का जप करने वालों में अग्रणी ''श्रीगोपाल मन्त्रराज'' की दीक्षा प्रदान करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भूतल पर सुशोभित होते हैं।

(९)

साधु सज्जनों के द्वारा समर्चित ''श्रीवेदान्त कामधेनु'' दशश्लोकी के प्रणेता, सुन्दर ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण किए हुए मतिमान श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भारतभूमि पर सुशोभित होते हैं।

(१०)

निरन्तर वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय चिन्तन मनन में संलग्न रहने वाले भव्य ललाट पर गोपीचन्दन का सुन्दर तिलक किए हुए गले में रमणीय तुलसी की माला धारण किए हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भारत भू पर शोभायमान है।

(११)

श्रीवृन्दावन धाम की लतानिकुञ्जों में विहरण करतें हुए युगल प्रिया-प्रियतम श्रीश्यामाश्याम के चरणारविन्दों में चिन्तन सदा अनुरक्ति रूपी पराभक्ति निकुञ्ज रस के परमाचार्य सुन्दर ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र मध्य श्रीसर्वेश्वर स्वरूप ''श्यामश्री'' धारण किए हुए निम्बार्क भगवान् इस भूतल पर सुशोभित होते हैं।

(१२)

श्रीकृष्णद्वारकापुरी नाम्नि धाम में दोनों भुजाओं पर शङ्ख-चक्राङ्कन रूपी तप्तमुद्रा का विसर्जन कर पुनः शीतल मुद्राङ्कन का समारम्भ जिनके द्वारा किया गया ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भूतल पर सुशोभित होते हैं।

(१३)

जो सदा व्रजवासी सहृदय रसिक भावुक भक्तजनों के द्वारा सम्पूजित सौशील्य, माधुर्य, लावण्य-कारुण्यादि अनन्त गुणों के भण्डार श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भूतल पर परम सुशोभित होते हैं।

(१४)

नैमिषारण्य तीर्थ के परम पवित्र भूभाग पर प्रवाहित कल-कल कल्लौलिनी गोमती नदी के परम प्रिय तट पर विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् अत्यधिक सुशोभित होते हैं।

(१५)

सुदर्शनमहाकुण्डतीरे द्रुकुञ्जसेवनः ।
करुणार्द्रमना शान्तो निम्बार्को भुवि राजते ।।

(१६)

दक्षिणाञ्चलभागे यो मूंगीग्रामेऽरुणाश्रमे ।
जनिं लब्ध्वा मुदा सो वै निम्बार्को भुवि राजते ।।

श्रीनिम्बार्कसुयशश्श्लोकी

(१)

राधिकानवनिकुञ्जमाधव-
नित्यदिव्यपदकञ्जचिन्तकम् ।
चक्रराजशुभरूपशोभितं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(२)

कृष्णहस्तनलिनाङ्गलिस्थितं
आयुधेश्वरसुदर्शनं प्रियम् ।
विश्वशान्ति-सुखसृष्टितत्परं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(३)

आर्ततापशमने निरन्तरं
पूर्णतत्परमहो सुदर्शनम् ।
मन्त्रजापनिरतं सुधाप्रदं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(४)

मन्त्रदानकरणे कृपाकरं
भक्तितत्त्वप्रतिपादने रतम् ।
युग्मकीर्तनपरं रसाधिपं

(१५)

श्रीसुदर्शन महाकुण्ड के पावन तट पर लतापादपादि द्रुम कुञ्ज में विराजित करुण रसार्द्रचित्त परम शान्त स्वभाव श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भूतल पर सुशोभित होते हैं।

(१६)

जो भारत के दक्षिणाञ्चल में महाराष्ट्र के प्रान्त भाग में स्थित मूंगी ग्राम में परम पावन अरुणाश्रम में जिन्होंने जन्म लिया ऐसे प्रसन्नचित्त निम्बार्क भगवान् इस भारतभूमि पर शोभायमान है।

श्रीनिम्बार्कसुयशश्लोकी

(१)

श्रीवृन्दावन धाम में नव नित्य निकुञ्ज में विहरण करते हुए श्रीराधामाधव भगवान् के चरण चिह्नों का सदा चिन्तन करने वाले, श्रीसुदर्शन चक्रराज स्वयं श्रीनिम्बार्क भगवान् के परम मङ्गलमय स्वरूप का हम सदा आश्रय लेते हैं।

(२)

श्रीकृष्ण भगवान् के हस्त कमल की अंगुलि में परम शोभायमान (प्रिय) आयुधराज श्रीसुदर्शन चक्रावतार के रूप में श्रीनिम्बार्क भगवान् जो कि सकल संसार को शान्ति एवं सभी सुखों को प्रदान करने वाले है, ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम आराधना करते है।

(३)

दीन दुःखियों के कष्टों का शमन करने में सदैव तत्पर श्रीसुदर्शन चक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् एवं अमृत प्रदान करने वाले व गोपाल मन्त्रराज के जप करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम उपासना करते हैं।

(४)

श्रीगोपाल मन्त्रराज की दीक्षा देकर हमें कृतार्थ एवं हम पर कृपा करने वाले एवं रसराज श्रीकृष्ण भगवान् एवं श्रीप्रियाजी के युगल स्वरूप का कीर्तन करने में संलग्न तथा युगलचरणारविन्द में अनुरक्ति रूपी भक्ति तत्व

निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(५)

निम्बपत्ररसपानभोजनं
निम्बवृक्षरविकान्तिकारकम् ।
निम्बपत्तनसरस्तटसंस्थितं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(६)

दिव्यधाम्नि गिरिराजसन्निधौ
स्वाश्रमे सुभगकुञ्जराजितम् ।
साधु-गो-द्विजसुमण्डितं परं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(७)

वादितर्कविनिवारणे पटुं
तर्कशास्त्रकथने सुधीश्वरम् ।
शब्दशास्त्रप्रतिपादने रतं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(८)

शब्दसृष्टिकरणे च तत्परं
मञ्जुकुञ्जभजने मनोरमम् ।
कुञ्जकृष्णचरणाम्बुजाश्रितं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(९)

वाग्विलासकुशलं विशेषतो
युग्मचिन्तनपरं सुनिष्ठया ।
भक्तिभावरमणं जगद्गुरुं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(१०)

वेद-तन्त्रविविधागमाम्बुधिं
सूक्ष्मदृष्टिपरिचिन्तने स्थितम् ।

का प्रतिपादन करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम आराधना करते हैं।

(५)

जो निम्ब पत्र के रस का पान एवं इसके क्वाथ का भोजन करने वाले एवं निम्बवृक्ष पर सूर्य के तेज को अवस्थित करने वाले तथा निम्बग्राम में श्रीसुदर्शन सरोवर के पावन तट पर विराजमान श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम उपासना करते हैं।

(६)

दिव्य वृन्दावन धाम में श्रीगिरिराज गोवर्धन के अत्यन्त सन्निकट श्रीअरुणाश्रम की मनोहर लता कुञ्जों में संविराजित एवं गो-ब्राह्मण-साधु-सन्तों की सेवा में सदैव तत्पर रहने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम ध्यान करते हैं।

(७)

वेदादि शास्त्र कथन में तार्किक बुद्धि वाले विद्वानों में श्रेष्ठ एवं उनके वाद का तर्क सम्मत निवारण करने में पटु (कुशल) तथा वेदादि शास्त्र सम्मत शब्द प्रमाण स्वरूप ''वेदान्तपारिजात सौरभ'' का प्रतिपादन करने वाले, श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम समाश्रय लेते हैं।

(८)

मनोहर लता निकुञ्जों में अवस्थित होकर सद् शास्त्रों की रचना करने में सदैव संलग्न रहने वाले तथा लता-पादपाच्छादित कुञ्ज में श्रीकृष्ण भगवान् के पादारविन्द का ध्यान करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम उपासना करते हैं।

(९)

विशेष रूप से जो वाणी विन्यास शास्त्र रचना करने में पटु है और निष्ठा पूर्वक श्रीराधाकृष्ण की युगल छवि का भक्ति भाव से चिन्तन करते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम सदैव ध्यान करते हैं।

(१०)

जो सकल वेदादि तन्त्र-मन्त्र-आगम-निगमादि शास्त्र ज्ञान के समुद्र है जिनका सूक्ष्म दृष्टि से सदैव चिन्तन किया करते हैं, जो समय ज्ञान विधि में श्रेष्ठ कपालवेध प्रवर्तक कला मर्मज्ञ श्रीनिम्बार्क भगवान् का सदैव हम

कालबोधनविधौ कलाधिपं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।
(११)
उत्तमोत्तमसुकर्मबोधकं
युग्मभक्तिरससुप्रचारकम् ।
कृष्णभक्तपरितापवारकं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।
(१२)
शास्त्रवैभवनिभं परात्परं
विश्वसिन्धुपतितार्तिवारकम् ।
वेदधर्मपरिपोषणे रतं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।
(१३)
ध्यान-गाननिरतं मुदा हरेः
पुष्पकुञ्जलसितं व्रजस्थले ।
कोकिलाकलितनादपूरिते
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।
(१४)
सर्वदा-युगलदर्शनोत्सुकं
सौरिकूलविपिने तपोरतम् ।
नीलरूपसुभगं कचान्वितं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।
(१५)
श्यामसुन्दरविभोः पदाम्बुज-
ध्यानलग्नहृदयं दयानिधिम् ।
पञ्चगव्य-मधुपर्कसेवनं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।
(१६)
त्यागरूपचरितं तपोधनं
तुष्टिपुष्टिभरितं मनस्विनम् ।

चिन्तन करते हैं।

(११)

जो अच्छे सुन्दर उत्तम कर्मों का ज्ञान कराने वाले,, युगलकिशोर श्यामाश्याम के चरणाविन्द में अनुरक्ति रूपी भक्ति रस का इस संसार में प्रसार करने वाले, भगवद्भक्तों के कष्टों का निवारण करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम उपासना करते हैं।

(१२)

जो वेदादि शास्त्रों के ज्ञान से परिपूर्ण एवं इस संसार सागर के कष्टों का निवारण करने वाले तथा वैदिक सनातन धर्म के परिज्ञान में सदैव संलग्न श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम उपासना करते हैं।

(१३)

आनन्दकन्द नन्दनन्दन व्रज वृन्दावन में लता पल्लवाच्छादित कोयल केका कीरादि के मधुर स्वर से गुञ्जायमान विविध प्रफुल्लित पुष्पित निकुञ्ज में विराजित श्रीहरि राधामाधव भगवान् के ध्यान-गान में निरत श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम शरण लेते हैं।

(१४)

सदैव युगल प्रिया प्रियतम के दर्शनों की उत्कण्ठा वाले, श्रीयमुनाजी के पावन पुलिन (तट) पर स्थित मनोरम उद्यान में तपश्चर्या निरत, नील कमल के समान सुन्दर श्यामवर्ण घुंघराले काले बाल जिनके मुखारविन्द पर शोभायमान है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम आश्रय लेते हैं।

(१५)

परम ऐश्वर्यशाली सकल विभवादि युक्त भगवान् श्रीश्यामसुन्दर के चरणकमलों का ध्यान सदा अपने चित्त में करने वाले दया के सागर, नित्य पञ्चगव्य (गो दुग्ध, गोघृत, गोदधि, गोमय, गोमूत्र) व मधुपर्क का पान करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम आश्रय लेते है।

(१६)

जिनका त्याग स्वरूप सम्पूर्ण जीवन चरित है व तप ही जिनका परम धन है सुगठित देह यष्टि से युक्त सन्तुष्ट शान्त मुद्रा वाले, धैर्यवान् साधु सज्जनों के साथ अवस्थित, कर्त्तव्याकर्त्तव्य (धर्माधर्म) विवेक शालिनी

धीरवृन्दसहितं सदास्थितं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(१७)

गीयमानमनिशं सुधीवरैः
स्मर्यमाणमनिशं गुणीगणैः ।
धार्यमाणमनिशं जनाधिपै-
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(१८)

कूटनीतिनिपुणाद्रिवारकं
शब्दनीति-नयशास्त्रधारिणम् ।
तन्त्र-मन्त्रशुभकोशरूपकं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(१९)

आश्रयं द्विजसतां महीयसां
ज्ञान-भक्तिरसदं सुदेशिकम् ।
दिव्यपक्वफलदं सुमङ्गलं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(२०)

शुद्धदृष्टिपथबोधदायकं
हार्दकष्टसुविपद्विनाशकम् ।
संसृतेः परमतापवारकं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(२१)

श्रेष्ठकर्मगतिदायकं वरं
प्रेष्ठकार्यकरणे मतिप्रदम् ।
स्वेष्टचिन्तनपरं तमाहरं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

प्रखर प्रज्ञा वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम शरण लेते है।

(१७)

श्रेष्ठ बुद्धि सम्पन्न विद्वानों के द्वारा जिनका निरन्तर गुणगान किया जाता है व श्रीगुण सम्पन्न गुणीजनों के द्वारा जिनको सदैव स्मरण किया जाता है तथा सज्जनों के द्वारा जिन्हें सदैव अपने हृदय में धारण किया जाता हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम स्मरण करते हैं।

(१८)

कूटनीति में निपुण हमारे कष्टों का निवारण करने वाले व वेदादि शास्त्र सम्मत नीति व न्याय शास्त्र को धारण करने वाले तथा जो शुभ तन्त्र-मन्त्र के भण्डार स्वरूप है, ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम उपासना करते हैं।

(१९)

श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मणों के जो आश्रय स्थान हैं तथा हमें ज्ञान रूपी भक्ति रस प्रदान करने वाले परम पवित्र गोदावरी नदी के तट पर महाराष्ट्र में मूंगी पैठण ग्राम में जन्म धारण करने वाले व हमें दिव्य पके हुए स्वादु फल प्रदान करने वाले, मंगलमय कल्याणकारी स्वरूप को धारण किए हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम निरन्तर ध्यान करते हैं।

(२०)

हमें सन्मार्ग का अबवोध कराने वाले तथा हमारे हृदय के कष्टों व आपत्तियों का नाश करने वाले व इस संसार के सकल दुःखों का निवारण करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम समाश्रय लेते हैं।

(२१)

हमें श्रेष्ठ कर्म में प्रवृत्त करने वाले व हमें मनवांछित कार्य करने सम्बन्धित श्रेष्ठ बुद्धि प्रदान करने वाले तथा जो अपने इष्ट भगवान् श्रीराधा-माधव का चिन्तन सदैव अपने हृदय में किया करते हैं ऐसे इस संसार के अज्ञान रूपी अन्धकार का हरण करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम निरन्तर ध्यान करते हैं।

(२२)

मूंगि-पत्तनविराजितं प्रभुं
दक्षिणे सुभगभारते त्विह ।
मञ्जुलेऽरुणशुभाश्रमे मुदा
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(२३)

नैमिषोपवनपावनस्थले
भारतोत्तरसुमङ्गलाञ्चले ।
नित्यशोभितमहोऽथमञ्जुले
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(२४)

वैष्णवोत्तमसुदेशिकं प्रियं
श्रीप्रियापदसरोजषट्पदम् ।
यत्कले-र्विविधदोषवारकं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(२५)

दिव्यमङ्गलनिकेतनं सदा
श्रीहरे-र्विमलभक्तिचिन्तकम् ।
दैन्यधर्मपरमोपदेशकं
निम्बभानुमनिशं समाश्रये ।।

(२६)

निम्बार्कसुयशश्श्लोकी सर्वाभीष्टप्रदायिका ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ।।

(२२)

इस भारतभूमि के दक्षिण में महाराष्ट्र प्रान्तान्तर्गत मूंगी-पैठण ग्राम में मनोरम श्रीअरुण मुनि के आश्रम में परम प्रसन्न मुद्रा में सुशोभित श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम शरण हैं।

(२३)

परम मंगलमय भारतवर्ष के उत्तराञ्चल में परम पवित्र नैमिषारण्य तीर्थ में सुन्दर लता-पादपाच्छादित उद्यान में विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम आश्रय लेते हैं।

(२४)

श्रीगोदावरी नदी के पावन क्रोड में जन्म धारण करने वाले वैष्णवों में परमोत्तम श्रीयुगलकिशोर श्यामा-श्याम के युगल चरणारविन्द में भ्रमर स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् सदैव अनुरक्त रहते हैं, जो इस कलिकाल में हमारे समस्त विविध पापों व कष्टों का निवारण करते है, उनकी हम शरण है।

(२५)

जो दिव्य मङ्गलों के भण्डार (कोष) है और जो श्रीराधा-माधव भगवान् की निर्मल भक्ति (उपासना) करते हैं तथा हम सभी को दैन्य भावपूर्ण सनातन धर्म का उपदेश देते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम समाश्रय लेते हैं।

(२६)

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी के द्वारा विनिर्मित श्रीनिम्बार्क सुयशश्लोकी हमारी मनवांछित सभी कामनाओं को पूर्ण कराने वाली हैं।

श्रीनिम्बार्कषोडशी

(१)

निम्बार्कदेशिकवरो हरिचक्रराजः
सर्वेश्वराङ्घ्रिकमले परिलग्नचेता।
संसारतापशमने परमप्रवीणो
गोविन्दभक्तिनिरतोजयतीह विश्वे।।

(२)

आलोड्य शास्त्रनिकरं श्रुतिशास्त्रवक्ता
शास्त्रार्थसिन्धुवरुणोबुधवृन्दवन्द्यः।
राधापदाम्बुजमना व्रजकुञ्जलीला-
ध्यानाभिसक्तमुदितो जयतीह लोके।।

(३)

आचार्यरूपसुभगः तिलकाच्छभालो
वृन्दासुमाल्यरुचिरः श्रुतिशास्त्रदक्षः।
गीतागमादिकथने परिपूर्णबुद्धिः
सम्पूर्णरम्यभुवने जयतीह नित्यम्।।

(४)

कादम्बपुष्परचितप्रियमाल्यशोभो
गोविन्दभक्तिरससारपयोधिरूपः।
प्रेमाश्रुनेत्रभरितो व्रजकुञ्जमध्ये
निम्बार्कसुन्दरवपुर्जयतीह चारु।।

(५)

वैराग्यभक्तिभरितो रसधाम्नि भव्ये
वृन्दावने निधिवने हरिरूपमग्नः।

श्रीनिम्बार्क षोडशी

(१)

भगवान् श्रीकृष्ण के प्रिय आयुध श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् जिनका चित्त श्रीसर्वेश्वर प्रभु के चरण कमल में सदैव अनुरक्त रहता है, जो इस संसार के समस्त क्लेशों को हरण करने में परम कुशल है, तथा भगवान् राधामाधव की भक्ति में सदा संलग्न रहने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की संसार में जय हो।

(२)

जिहोंने वेदादि शास्त्रों के आलोडन से प्राप्त सुन्दर नवनीत स्वरूप दिव्य ज्ञान के द्वारा वेदादि शास्त्र सम्मत दिव्य उपदेश देने वाले, ऐसे विद्वद् मण्डल द्वारा अभिवन्दनीय शास्त्रार्थ निपुण श्रीनिम्बार्क भगवान् जिनका चित्त सदैव व्रजमण्डल की लता निकुञ्जों में विहरण करते हुए श्रीयुगल प्रिया प्रियतम श्यामाश्याम के चरण कमल में ध्यानासक्त है परम मुदित कल्याणकारी स्वरूप में विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् की अखिल विश्व में जय हो।

(३)

वेदादि शास्त्र ज्ञान से परिपूर्ण बुद्धि के द्वारा गीता ब्रह्मसूत्र शास्त्र सम्मत मंगलमय दिव्य उपदेश देते हुए आद्याचार्य स्वरूप में विराजमान जिनके ललाट पर सुन्दर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक व सुन्दर तुलसी माला धारण किए हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् की इस धरा धाम पर जय हो।

(४)

जो व्रज की लता निकुञ्ज में विहरत युगलकिशोर श्यामाश्याम की निकुञ्ज भक्ति रसाप्लावित अमृत के समुद्र स्वरूप, सुन्दर कदम्ब पुष्प की बनी हुई चित्ताकर्षक सुन्दर माला धारण किए हुए सुन्दर देह यष्टि वाले अपने श्रीसर्वेश्वर प्रभु के ध्यानासक्त प्रेमाश्रुपूरित सुन्दर नयन वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की इस संसार में जय हो।

(५)

रस स्वरूप आनन्द कन्द नन्दनन्दन के लतापादपाच्छादित भव्य वृन्दावन धाम में स्थित निधिवन में विराजे हुए श्रीहरि के स्वरूप में ध्यानमग्न

सौरीसमीपपुलिने शुभनिम्बभानुः
सम्पूर्णभव्यभुवने जयतीह नित्यम् ।।

(६)

वेदान्तदर्शनसुधीः श्रुतिसारविज्ञ-
स्तत्त्वार्थबोधकुशलो रसधामवासः ।
राधामुकुन्दयुगलाङ्घ्रिरसावगाहो
निम्बार्कदेशिकवरो जयतीह लोके ।।

(७)

शास्त्रीयज्ञानमतिमान्गुणवान्पुरोधा
धर्मार्थतत्त्वरससारमहाबुधश्च ।
वेदान्तसूत्रशुभभाष्यकरो वरेण्यो
निम्बार्कनामरुचिरो जयति प्रभाते ।।

(८)

वृन्दावने नवनिकुञ्जविहारभूमौ
युग्माङ्घ्रिचिन्तनरतः पिचमन्दभानुः ।
पञ्चार्थबोधनपरायण आप्तकाम-
आनन्ददो विजयते खलु मञ्जुरूपः ।।

(९)

संसारभीषणमहापरितापहर्ता
स्वीयप्रपन्नजनकृष्णरसप्रदाता ।
गोविन्दरासरसलीनवरेण्यरूपो
निम्बार्कदेशिकवरो जयतीह भूमौ ।।

(१०)

श्रुत्यर्थसारकथने कुशलो वरीया-
न्ध्याता हरेरविरलं गिरिराजपार्श्वे ।
निम्बद्रुमे रविमदर्शयादात्मशक्त्या
शीलस्वभावसुभगो जयतीह पूर्णः ।।

परा वैराग्य भक्ति रस से परिपूर्ण, सुन्दर यमुनाजी के पावन पुलिन पर विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् की इस भव्य भारत भुवन में जय हो।

(६)

वेदान्तादि षड्दर्शन में प्रखर प्रज्ञा वाले, वेद-वेदान्तादि के सार को जानने वाले, तत्त्वार्थ ज्ञान में पटु रसब्रह्म श्रीसर्वेश्वर के श्रीवृन्दावन धाम में निवास करते हुए श्रीराधामाधव भगवान् के युगलचरणारविन्द की भक्ति रस में अभिषिक्त श्रीनिम्बग्राम में परम सुशोभित श्रीनिम्बार्क भगवान् की इस संसार में जय हो ।

(७)

शास्त्रीय ज्ञान में प्रखर मति वाले विद्वान् गुणज्ञों में श्रेष्ठ, सनातन वैदिक धर्म के अर्थ रसामृत तत्त्व सार को भली भाँति जानने वाले, वेद-वेदान्त (गीता-उपनिषद्-ब्रह्मसूत्र) प्रस्थानत्रयी सम्मत ''वेदान्तपारिजात सौरभ'' नामक महाभाष्य सिद्धान्त ग्रन्थ की रचना करने वाले श्रेष्ठ हृदयाकर्षक ''श्रीनिम्बार्क नाम'' को धारण करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(८)

श्रीवृन्दावन की नव लता पादपाच्छादित नव निकुञ्जों में विहरण करते हुए युगल श्रीश्यामाश्याम के युगल चरणारविन्द का चिन्तन करते हुए ध्यान मग्न, पञ्चार्थ ज्ञान परायण निश्चय ही हमारी सम्पूर्ण मनोकामनाओं को पूर्णकर हमें आनन्द प्रदान करने वाले सुभग स्वरूप वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

(९)

इस संसार के भीषण कष्टों का हरण करने वाले, अपनी शरण में आए हुए भक्तजनों को श्रीकृष्ण भगवान् की भक्ति रस प्रदाता, श्रीराधा गोविन्द की रासलीला में तल्लीन श्रेष्ठ स्वरूप वाले निम्ब प्रदेश में निवास करने वाले श्रेष्ठ श्रीनिम्बार्क भगवान् की इस भारतभूमि पर जय हो।

(१०)

वेद-वेदान्तादि सम्मत अमृत स्वरूप उपदेशकों मे कुशल, निरन्तर भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु के ध्यान में संलग्न अपनी शक्ति के प्रभाव से श्रीगिरिराज गोवर्धन के सन्निकट निम्बग्राम में ब्रह्माजी को निम्ब के वृक्ष पर सूर्य भगवान

(११)

सर्वार्थदः सुरगवीवदने प्रवीणो
मे रक्षणे प्रतिपलं नितरां प्रबुद्धः ।
आर्तार्तिवारणपरः परमार्थलक्ष्यो
निम्बार्कदेववरदो जयतीह वन्द्यः ।।

(१२)

राधामुकुन्दपदकञ्जकृपापिपासुः
शान्तिप्रियो भुवनभीतिनिवारणेशः ।
प्राप्य प्रभुं प्रमुदितः करुणाकरश्च
निम्बार्कचारुचरणो जयतीह देवः ।

(१३)

राधाविहारिपदभक्तिरसप्रवाह-
लीनः सदा मुदितचित्तविवेकशीलः ।
आचारशास्त्रनियमे प्रतिबद्धकक्षो
निम्बार्कपूज्यचरणो जयतीह नित्यम् ।।

(१४)

आचार्यरूपरुचिरोव्रजवासकारी
श्रीनिम्बधाम्नि हरिपूजनपूर्णदक्षः ।
दिव्यद्रुकुञ्जविपिने प्रभुकीर्तनादि-
कर्ता सदा जयतीह निम्बदिनेशरूपः ।।

(१५)

सर्वागमादिशुचिशास्त्रमहामनीषी
सर्वत्रतीर्थगमनेन कृतप्रचारः ।
चक्रादिचिह्नपरिचिह्नितबाहुदण्डो
निम्बार्कपावनवरो जयतीह मञ्जुः ।।

के दर्शन कराने वाले, सुशील सुभग स्वभाव वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की इस भारतभूमि पर जय हो।

(११)

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारों पुरुषार्थों की सिद्धि प्रदान करने वाले, देव-स्तुति गान में प्रवीण, निरन्तर मेरी व शरणागतों की सुरक्षा में तत्पर दूसरों की सेवा धर्म ही जिनका एकमात्र लक्ष्य है ऐसे दीन दुःखियों के कष्टों का निवारण करने में सन्नद्ध हम सभी के वन्दनीय श्रीनिम्बग्राम में श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो ।

(१२)

श्रीराधामुकुन्द भगवान् के युगल चरणाविन्द की कृपाकाङ्क्षी शान्तिप्रिय इस संसार के भय का क्लेशों का निवारण करने वाले, प्रभु प्राप्ति से सदा आनन्दित रहने वाले हमारे ऊपर करुणा बरसाने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की इस भारतभूमि पर जय हो।

(१३)

श्रीराधाविहारी भगवान् के युगल चरणारविन्द में भक्ति रस प्रवाह में निमज्जित सदा प्रसन्नचित्त रहने वाले, विवेकवान, शास्त्रोक्त आचार विचार पूर्वक नियम पालन में प्रतिबद्ध परम अर्चनीय आचार्यचरण श्रीनिम्बार्क भगवान् की इस भारतभूमि पर जय हो।

(१४)

व्रज प्रदेश में निवास करने वाले आद्याचार्य के स्वरूप में श्रीनिम्बग्राम में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सम्यक्तया पूजा अर्चना करते हुए, दिव्य लताद्रुमाच्छादित निकुञ्ज वन में श्रीराधामाधव भगवान् का संकीर्तन करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् की सदा इस भूमण्डल पर जय हो।

(१५)

सभी वेदादि आगम शास्त्रोक्त पवित्र ज्ञान को धारण करने वाले व सनातन धर्म व वैदिक संस्कृति का भारतवर्ष के समस्त तीर्थों में इतस्ततः परिभ्रमण कर प्रचार-प्रसार करने वाले, दोनों भुजाओं पर सुन्दर शंख-चक्र चिह्न धारण किए हुए, श्रीनिम्बार्क भगवान् की पवित्र इस भारतभूमि पर जय हो।

(१६)

भालप्रभापरियुतस्तिलकादिदिव्यो
वृन्दासुमाल्यसुभगः शुभदानशीलः ।
अम्भोजहारलसितो रसकुञ्जकेलि-
ध्याने रतो रसभरो जयतीह शुद्धः ।।

श्रीनिम्बार्काराधनास्तवः

(१)

सकलशास्त्रसुधीप्रवरं परं मुनिजनैर्नितरां भजितं हृदा ।
हरिकरस्थसुचक्रसुरूपिणं सुभगनिम्बरविं हृदि भावये ।।

(२)

विपिनकुञ्जरसेश्वरसन्निधौ सहचरीरहो सह शोभितम् ।
युगलरङ्गसखीप्रियरूपकं सुभगनिम्बरविं हृदि भावये ।।

(३)

रुचिरदर्शनरूपमनोहरं स्वगिरिराजवने परिराजितम् ।
व्रजधरोपवने प्रभुपूजकं सुभगनिम्बरविं हृदि भावये ।।

(४)

व्रजरसेशसुकेलिसुदर्शकं रसिकराजकृपापरिरञ्जितम् ।
मधुपगुञ्जमुदं रसवर्धकं सुभगनिम्बरविं हृदि भावये ।।

(१६)

जिनके देदीप्यमान सुन्दर ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक शोभित है और तुलसी की सुन्दर माला कण्ठ प्रदेश में शोभायमान है तथा यत्तद् वस्तु वाञ्छावान् जनों को तत्तद् वस्तु का दान करते हुए सुन्दर हृदय पर जिनके कमल माल सुशोभित है तथा रसब्रह्म श्रीसर्वेश्वर भगवान् की निकुञ्ज रस लीला में ध्यान मग्न, युगल भक्ति रस से परिपूर्ण श्रीनिम्बार्क भगवान् की जय हो।

श्रीनिम्बार्काराधनास्तवः

(१)

सभी वेदादि शास्त्रों में प्रखर प्रज्ञा वाले आचार्यप्रवर जिनका मुनिजन हृदय से सदा ध्यान करते हैं जो भगवान् श्रीकृष्ण के हस्त कमल में सुदर्शन चक्र के रूप में शोभित होते हैं ऐसे सुभग स्वरूप वाले श्रीनिम्बार्क प्रभु का हृदय में हम ध्यान करते हैं।

(२)

श्रीवृन्दावन धाम की लता कुञ्जों में, सहस्रों सखियों के साथ परम सुशोभित, युगल रसराज आनन्द कन्द नन्दनन्दन श्रीकृष्ण भगवान् के सान्निध्य में, युगल रङ्ग सखि के प्रिय स्वरूप को धारण करने वाले सुभग स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् का हृदय में हम ध्यान करते है।

(३)

सुभग दर्शनीय चित्ताकर्षक स्वरूप वाले श्रीगिरिराजजी की उपत्यका में विराजित व्रज की पावन धरा पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु का पूजन करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हृदय में हम स्मरण करते हैं।

(४)

व्रजरसेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की नित्य रासलीलाओं का दर्शन करने वाले रसिकेश्वर आनन्दकन्द श्रीकृष्ण भगवान् की कृपा मे परिरञ्जित भक्तिरस में भीगे हुए भ्रमर की मधुर गुञ्जार सुनकर प्रसन्न चित्त हमारे हृदय में भक्ति रस का वर्द्धन करने वाले सुभग स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमारे हृदय में ध्यान करते हैं।

(५)

शरणभक्तदयाकरुणाकरं रसिकसाधुजनैः परिसेवितम् ।
बुधवरैर्मनसा च समाश्रितं सुभगनिम्बरविं हृदि भावये ।।

(६)

परमदेशिकवर्यकृपाकरं प्रचुरभक्तिभरै रसिकैः स्तुतम् ।
निखिलवैष्णवमानसभावितं सुभगनिम्बरविं हृदि भावये ।।

(७)

परमवैष्णवतानियमावलीसविधिसेवनपालनतत्परम् ।
विपदि बोधकरं धरणीतले सुभगनिम्बरविं हृदि भावये ।।

(८)

सनकनारददिव्यपथानुगं युगलभक्तिभरं भजने रतम् ।
तरणिजातटयुग्मसुदर्शकं सुभगनिम्बरविं हृदि भावये ।।

(९)

युगलकेलिविलासमहास्थले विपिनकुञ्जवने मुदिताननम् ।
भवपयोधिरतोद्धरणे स्थितं सुभगनिम्बरविं हृदि भावये ।।

(१०)

नवकुशासनसंस्थितसोत्सुकं श्रुतिसुमन्त्रसुवाचनतत्परम् ।
सदुपदेशकरञ्च निरन्तरं सुभगनिम्बरविं हृदि भावये ।।

(५)

शरणागत भक्तजनों पर दया करने वाले करुणा के समुद्र स्वरूप भगवान् के युगलचरणारविन्द की भक्ति रस में डूबे रसिक सज्जन साधुजनों के द्वारा समर्चित व श्रेष्ठ विद्वान के द्वारा मन से जिनका समाश्रय लेते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमारे चित्त में हम ध्यान करते हैं।

(६)

परम पवित्र श्रीगिरिराज गोवर्धन व्रजक्षेत्र में परम पूजित श्रेष्ठ कृपा के समुद्र प्रचुर युगल भक्ति रसाप्लावित भावुक भक्तजनों के द्वारा स्तुति किये जाने योग्य, समस्त वैष्णव भक्तजनों के मान सम्मान का रक्षक सुभग स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् का हृदय में स्मरण करते हैं।

(७)

परम वैष्णव भक्तजनों की नियम पूर्वक विधि से सेवा में संलग्न व उनकी विपत्तियों को जानने वाले व उनकी रक्षा पालन धर्म में सदैव तत्पर, इस धरणी तल पर सुभग स्वरूप में विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमारे हृदय में ध्यान करते है।

(८)

सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमारों व देवर्षि नारदजी के द्वारा दर्शित दिव्य पथ का अनुसरण करने वाले, युगल चरणारविन्द की भक्ति रस से परिपूरित भगवान् श्रीराधामाधवजी के भजन में संलग्न, श्रीयमुनाजी के पावन पुलिन पर श्रीयुगल प्रिया-प्रियतम के दर्शन करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का अपने हृदय में स्मरण करते हैं।

(९)

युगल श्रीवृन्दावन धाम की नव निकुञ्ज में जहाँ युगल प्रिया प्रियतम श्रीश्यामाश्याम की नित्य रासलीला स्थल पर प्रसन्नचित्त विराजे हुए, इस संसार रूपी सागर के समस्त क्लेशों के उद्धरण हेतु सुभग स्वरूप में विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में चिन्तन करते हैं।

(१०)

नव कुश निर्मित आसन पर विराजे हुए वैदिक मन्त्रों का सुन्दर वाचन करते हुए एवं निरन्तर भक्तों को सदुपदेश देते हुए सुभग स्वरूप

(११)

सुशिखिकीर-पिकादिककूजिते गिरिवरान्तिकरम्यतमाश्रमे।
खलु सुदर्शनकुण्डशुभस्थले सुभगनिम्बरविं हृदि भावये।।

(१२)

विविधपादपमञ्जुलमन्दिरे स्फटिक-मौक्तिकमण्डितसुन्दरे।
मणिमयेऽङ्गपानित्यविराजितं सुभगनिम्बरविं हृदि भावये।।

(१३)

सलिलपूरितचारुसरोवरे कमठ-मीनमनोहरपावने।
नलिनपुञ्जसुरम्यतमे प्रियं सुभगनिम्बरविं हृदि भावये।।

(१४)

कनकहर्म्यविशालतमाङ्गणे युगलदर्शनकीर्तनभावनम्।
परिकरैः सह शोभितदेशिकं सुभगनिम्बरविं हृदि कामये।।

(१५)

अतिमनोहरचन्दनचर्चितं युगलचन्द्रसुकीर्तनकारिणाम्।
अमितकान्तिधरं भुवि सर्वदा सुभगनिम्बरविं हृदि कामये।।

(१६)

प्रणतपोषकपावनपावनं प्रियवरं परमार्थपरं वरम्।
प्रबलभक्तिरतं वरदं सदा सुभगनिम्बरविं हृदि कामये।।

श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में ध्यान करते हैं।

(११)

सुन्दर मयूर-शुक-कोकिलादि के मधुर स्वर से गुञ्जायमान गिरिराज गोवर्धनजी की उपत्यका में स्थित रमणीय आश्रम में श्रीसुदर्शन कुण्ड के पावन स्थल पर विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम चित्त में ध्यान करते हैं।

(१२)

विभिन्न पादपाच्छादित वृक्षावलियों से सुसज्जित सुन्दर स्फटिक मौक्तिक मणि मालाओं से मण्डित मन्दिर के सुन्दर प्राङ्गण में विराजित सुन्दर स्वरूप वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में चिन्तन करते हैं।

(१३)

जल से परिपूरित सुन्दर सुदर्शन सरोवर में कछुए मत्स्य आदि से युक्त हमारे चित्त को स्वतः आकर्षित करने वाले परम पवित्र कमल पुष्पों से अतीव रमणीय सरोवर पर विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में ध्यान करते हैं।

(१४)

स्वर्ण निर्मित विशाल भवन के चौक में युगलकिशोर श्यामाश्याम का कीर्तन करते हुए अपने परिकर के साथ शोभायमान गिरिराज गोवर्धन की उपत्यका में स्थित निम्बग्राम में विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में ध्यान करते हैं।

(१५)

अति मनोहर सुन्दर गोपीचन्दन से सुभग ललाट पर उर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण किए हुए युगल प्रिया प्रियतम का संकीर्तन करते हुए असीम कान्ति को धारण करने वाले इस भारत भूमि पर विराजे हुए सुभग स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् की सदैव हमारे हृदय में कामना करते हैं।

(१६)

शरणागत भक्तों के सम्पोषक अति पावनतम, परमार्थ धर्म की पालना करने में तत्पर युगलकिशोर राधामाधवजी की भक्ति में संलग्न व हमें मनवांछित वरदान प्रदान करने वाले सुभग स्वरूप में विराजित श्रीनिम्बार्क

(१७)

तमनिरासकरं भवभास्करं सदुपदेशकरञ्च मुनीश्वरम् ।
अरुणकीर्तिकरं करुणाकरं सुभगनिम्बरविं हृदि कामये ।।

(१८)

अतुलवैभवदानकरं वरं स्मरनिवारणतत्परमद्भुतम् सुखसागरम् ।
निगमचिन्तनपूर्णमुदाननं सुभगनिम्बरविं हृदि कामये ।।

(१९)

मधुरभावरसामृतसागरं रसमयं रसदं रसजीवनम् ।
सकलजीवदयाकरमुत्तमं सुभगनिम्बरविं हृदि कामये ।।

(२०)

सरल-दीन कृपारसवर्षणं गुणनिधिं गुणदर्शनभावनम् ।
तरणिकान्तिधरं सुरसेवितं सुभगनिम्बरविं हृदि कामये ।।

(२१)

अचलभावसुधारसवर्षकं हरिकृपारसवांछकमद्भुतम् ।
भवपयोधिनिमग्ननिवारकं सुभगनिम्बरविं हृदि कामये ।।

भगवान् का हम हृदय में ध्यान करते हैं।

(१७)

इस सम्पूर्ण संसार के अज्ञान रूपी अन्धकार को मिटाकर भगवान् भास्कर के ज्ञान रूपी प्रकाश से इस संसार को प्रकाशित करने वाले भगवान् भास्कर के समान स्वरूप और भक्तों को सुमार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करने वाले सदुपदेश देते हुए मुनिराज श्रीनिम्बार्क भगवान् महर्षि अरुण की कीर्ति को फैलाने वाले भक्तों पर करुणा करने वाले सुभग स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम हृदय में कामना करते हैं।

(१८)

हमारे मन इच्छित असीम वरदान स्वरूप असीम धन सत्पत्ति प्रदान करने वाले स्मरण करते ही हमारे समस्त सन्ताप कष्टों का निवारण करते हुए हमें अद्भुत आनन्द प्रदान करने वाले सुख सागर स्वरूप, वेद वेदान्तादि का चिन्तन करते हुए आनन्दित चित्त प्रसन्न मुद्रा में विराजे हुए सुभग स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम चित्त में ध्यान करते हैं।

(१९)

युगलचरणारविन्द की भक्ति रसामृत परिपूर्ण सिन्धु स्वरूप मधुर भक्ति रस ही जिनका जीवन है, हमें युगल चरणारविन्द में भक्ति रस रूपी आनन्द को प्रदान करने वाले, संसार के समस्त प्राणियों पर उत्तम दया करने वाले सुभग स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में कामना करते हैं।

(२०)

देववृन्द द्वारा परिसेवित अत्यन्त सरल हृदय दीन दुःखियों पर अपनी कृपा रूपी रस का वर्षण करने वाले, सौन्दर्य, माधुर्य, लावण्य, कारुण्यादि गुणों के समुद्र, गुण दर्शन कर उनका परिचिन्तन करने वाले, श्रीयमुनाजी की श्यामल कान्ति को धारण करने वाले सुभग स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में ध्यान करते हैं।

(२१)

सुदृढ भावरूपी कृपा भक्ति रसामृत का वर्षण करने वाले, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा रूपी अद्भुत भक्ति रसामृत की इच्छा वाले, इस संसार सागर में निमग्न भक्तों के समस्त क्लेशों का निवारण करने वाले सुभग स्वरूप में

(२२)

युग्मभक्तिप्रदश्चारु निम्बार्काराधनास्तवः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ।।

श्रीनिम्बार्कस्मरणस्तवः

(१)

हृदा नौमि निम्बार्कदेवं वरेण्यं
सदाराधिकानामपीयूषधाराम् ।
समास्वादयन्तं व्रजे धाम्नि कुञ्जे
हरे रासलीलारसाब्धौ प्रसन्नम् ।।

(२)

प्रियादिव्यकुञ्जाऽद्भुतरङ्गदेवी-
स्वरूपे प्रसिद्धश्च निम्बार्कवर्यम् ।
प्रणौमीष्टरूपं व्रजे निम्बपुर्यां
सुशोभायमानं हरेश्चक्रराजम् ।।

(३)

हरेरुक्तिगीतादिसद्भाष्यकारं
सदाराध्यनिम्बार्कदेवं सभक्तिम् ।
स्वकीये मुदा मानसेऽहं भजामि
प्रियाचार्यवर्यं कृपाधामरूपम् ।।

(४)

सदा राधिकाकृष्णलीलारसज्ञं
महानन्दसिन्धुं दयालुं शरण्यम् ।
अनन्तप्रभावं भजे निम्बभानुं
स्वधर्मप्रचारे जगत्यां भ्रमन्तम् ।।

विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में चिन्तन करते हैं।

(२२)

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा रचित ''श्रीनिम्बार्काराधनास्तवः'' हमें निश्चय ही श्रीयुगल-चरणारविन्द की सुन्दर भक्ति प्रदान करने वाला है।

श्रीनिम्बार्कस्मरणस्तवः

(१)

श्रीव्रज वृन्दावन धाम की नित्य निकुञ्जों में अनवरत रासेश्वरी श्रीप्रियाजी के नाम रूपी रसामृत धारा का आस्वादन करने वाले एवं परब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण की रासलीला रूपी सागर में अवगाहन से प्रसन्नचित्त श्रीनिम्बार्क भगवान् को हृदय से हम प्रणाम करते हैं।

(२)

श्रीवृन्दावन धाम की दिव्य कुञ्ज में विराजित श्रीप्रियाजी की अष्ट सखियों में प्रसिद्ध श्रीरङ्गदेवीजी के दिव्य सखि स्वरूप में श्रीनिम्बार्क भगवान्, श्रीहरि के प्रिय आयुधराज श्रीसुदर्शनचक्रावतार व्रजक्षेत्र में स्थित श्रीनिम्बग्राम में विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(३)

भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा उपदिष्ट श्रीमद्भगवद्गीता व ब्रह्मसूत्र (प्रस्थान त्रयी) सम्मत ''श्रीवेदान्त पारिजात सौरभ'' नामक भाष्य के प्रणेता (श्री निम्बार्क भगवान्) हमारे प्रिय आद्याचार्यवर्य, कृपा के धाम स्वरूप हमारे आराध्यदेव श्रीनिम्बार्क प्रभु का भक्तिभावपूर्ण मन से हमारे हृदय में हम भजन (आराधना) करते हैं।

(४)

युगल प्रिया प्रियतम श्रीश्यामाश्याम की लीला रूपी रस को जानने वाले, जो महान् आनन्द के सागर है, ऐसे दया भाव से परिपूर्ण शरणागत रक्षक, अनन्त प्रभाव वाले सनातन धर्म का इस जगत् में परिभ्रमण करते हुए प्रचार-प्रसार करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(५)

सुधारूपवाण्या जगज्जीवहेतोः
कृपां वर्षयन्तं रसब्रह्मनिष्ठम्।
स्वसर्वेश्वरार्चा सुसम्पादयन्तं
भजे निम्बभानुं हरेरङ्घ्रिभृङ्गम्।।

(६)

सतां गोद्विजानाञ्च संरक्षणार्थं
लसद्विग्रहं यो नराकाररूपम्।
रसाब्धिं प्रभुं तं हरेश्चक्ररूपं
मुनीन्द्रं सदाऽहं भजे निम्बभानुम्।

(७)

शुभे नैमिषारण्यतीर्थे पवित्रे
निजोपास्यलीनश्च निम्बार्कवर्यम्।
मुनिश्रेष्ठसेव्यं महोदाररूपं
भजे निम्बभानुं नुतं साधुवृन्दैः।।

(८)

अहो हंसवीथीसमारूढमीशं
प्रसन्नं स्वचित्तेऽनिशं प्रेमसिन्धुम्।
प्रपन्नाभिलाषाऽभिपूर्तौ प्रवृत्तं
भजे निम्बभानुं युगाऽङ्घ्रिद्विरेफम्।।

(९)

सदा निम्बपत्राऽम्बुपाने प्रसन्नं
पुराणादिशास्त्राऽतिगम्भीरधीरम्।
सखीरङ्गदेवीस्वरूपप्रसिद्धं
सभक्तिं प्रणौम्यत्र निम्बार्करूपम्।।

(१०)

मुने वै मतङ्गस्य चोद्धारकारं
सदा वैष्णवीदीक्षया संप्रदं यः।

(५)

रसब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण में समर्पण भाव वाले, इस संसार के प्राणी मात्र के उद्धार हेतु अपनी अमृतमयी वाणी के द्वारा कृपा का वर्षण करते हुए, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सम्पादन में संलग्न, श्रीहरि के चरण कमल की भक्तिरस का पान करने वाले भ्रमर रूप श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(६)

साधु सज्जन, गोमाता व ब्राह्मणवृन्द के सुरक्षा हेतु श्रीकृष्ण भगवान् के प्रिय आयुध चक्रराज ने मनुष्य स्वरूप को धारण किया, ऐसे रस के समुद्र रूप महामुनीन्द्र श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम सदैव उपासना करते हैं।

(७)

परम पवित्र श्रीनैमिषारण्य तीर्थ में अपने आराध्य देव श्रीसर्वेश्वर प्रभु की उपासना में संलग्न, साधुवृन्द श्रेष्ठ मुनीश्वरों के द्वारा परिसेवनीय महान् उदार स्वरूप वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(८)

श्रीहंस सम्प्रदाय के आद्याचार्य के रूप में समारूढ सदैव प्रसन्नचित्त वाले, प्रेम के सागर रूप, शरणागत भक्तों की सम्पूर्ण अभिलाषाओं की पूर्ति करने में संलग्न, श्रीयुगल प्रिया-प्रियतम के चरण-कमल की भक्ति रस का पान करने वाले भ्रमर के समान श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम उपासना करते हैं।

(९)

सदैव निम्ब-रसयुक्त जल का पान करने में प्रसन्न चित्त वाले, वेद पुराणादि शास्त्रों का धैर्यता पूर्वक गम्भीर चिन्तन करने वाले, श्रीप्रियाजी की सखियों में प्रसिद्ध श्रीरंगदेवी के स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम भक्ति भावपूर्ण हृदय से प्रणाम करते हैं।

(१०)

श्रीमतङ्ग ऋषि का उद्धार करने वाले एवं सदैव अपने भक्तों को वैष्णवी दीक्षा प्रदान करने वाले, अपने इष्ट श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अत्यन्त प्रिय,

तमिष्टप्रियं वेद-सूत्रार्थ भाष्य-
प्रणेतारमग्र्यं भजे निम्बभानुम् ।।

(११)

समर्च्यः कुमारैस्तथानारदेन
प्रलब्धः सुचक्राङ्कितो येन सर्वेश्वरो वै ।
तमाचार्यनिम्बार्कमाद्यं रसेश-
महं भावयामि स्वकान्तः प्रदेशे ।।

(१२)

तमालप्रकुञ्जे प्रभाते पवित्रे
स्मिताऽऽस्यं मनोज्ञं महादैन्यरूपम् ।
सदा शोभमानं युगाऽङ्घ्रिनिमग्नं
मुहुः सम्भजे निम्बभानुं रसेशम् ।।

(१३)

स्थलोत्फुल्लकञ्जाऽच्छचम्पासुमाल्य-
महारम्यदिव्यं प्रसिद्धं जगत्याम् ।
स्वकोपास्यलीलासमाधौ सुलीनं
गुणागाररूपं भजे निम्बभानुम् ।।

(१४)

प्रवीणञ्च युग्माऽङ्गभृङ्गारकार्ये
सखीरङ्गदेवीस्वरूपेण रम्यम् ।
प्रियाह्लादिनी राधिकाकिङ्करीषु
स्मरामि प्रभातेऽह्नि निम्बार्कदेवम् ।।

(१५)

स्वकीयै-र्वचोभिर्जगच्छ्रेयसे यः
सदेष्टप्रदातारमचिन्त्यस्वरूपम् ।
अशेषै-र्महद्भिः समुपासितं तं

वेद सूत्रादि सम्मत ''श्रीवेदान्तपारिजात सौरभ'' नामक भाष्य के प्रणेता श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम आराधना करते हैं।

(११)

सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार व देवर्षि नारद के द्वारा समर्चित सुचक्रांकित श्रीसर्वेश्वर प्रभु को सम्प्राप्त करने वाले उन रसेश्वर श्रीआद्याचार्य श्रीनिम्बार्क प्रभु की अपने अन्तर्हृदय में हम उपासना करते हैं।

(१२)

परम पवित्र तमाल कुञ्ज में प्रभातकाल में महादैन्य स्वरूप में प्रसन्न चित्त विराजे हुए, श्रीयुगल चरणारविन्द की भक्ति रस में निमग्न रसेश्वर, अतिशय शोभायमान श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम पुनः पुनः भजन करते हैं।

(१३)

महान् रमणीय इस दिव्यातिदिव्य प्रसिद्ध प्रफुल्लित कुञ्ज, चम्पादि मालाओं से पुष्प स्तवकादि से युक्त रमणीय स्थल पर अपने उपास्य की लीला समाधि में लीन, सौन्दर्य, माधुर्य, लावण्यादि समस्त गुणों के निधि रूप श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(१४)

श्रीयुगलकिशोर श्यामाश्याम के नख-शिख सर्वाङ्ग शृङ्गार कार्य में परम प्रवीण, श्रीरङ्गदेवीजी के रमणीय सखी स्वरूप में विराजित, श्रीकृष्ण भगवान् की आह्लादिनी शक्ति प्रिया श्रीराधिकाजी के चरण किङ्करीक श्रीनिम्बार्क भगवान् का प्रातःकाल की प्रभात वेला में हम स्मरण करते हैं।

(१५)

अपनी दिव्य वाणी के द्वारा इस जगत् के मङ्गलार्थ हमें मनवांछित फल प्रदान करने वाले, अचिन्त्य स्वरूप जिनकी उपासना ऋषि-मुनीश्वरों के द्वारा की जाती है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम समाराधना करते हैं।

समाराधयामीह निम्बार्कवर्यम् ।।

(१६)

हरे र्दिव्यनामानि संकीर्तयन्तं
मनोहारिगोवर्धने धाम्नि पूज्ये ।
मृगै-र्धेनुयूथैः प्लवङ्गैः सुरम्येऽ-
निशं भावये निम्बभानुं सभक्तिम् ।।

(१७)

गिरा निम्बभानुं हृदा नौमि नित्यं
सदा कर्मणा तञ्च देदीप्यमानम् ।
शुभं श्यामरूपं वरेण्यं शरण्यं
कृपावृष्टिकारं सुशास्त्रैकसारम् ।।

(१८)

निकुञ्जे प्रियाश्यामपादाम्बुजानां
स्वकीयैः कराब्जैश्च सेवानुरक्तम् ।
सखीरूपदिव्यं प्रभापुञ्जपूर्णं
सदा कामयेऽहं हृदा निम्बभानुम् ।।

(१९)

लसच्चारुहस्तारविन्दाऽऽप्तशास्त्रं
विरोधीभहातर्कक्षीणप्रवीणम् ।
स्वयं दैन्यभावेन मुहुः शोभमानं
प्रसन्नं भजे पूज्यनिम्बार्कवर्यम् ।।

(२०)

सुधापूरितैर्दिव्यभावान्वितैश्च
कृपापूर्णशब्दै रसं वर्षयन्तम् ।
दयौदार्यसिक्तैः स्मिताऽऽस्यं वरिष्ठं
सदा शान्तरूपं भजे निम्बभानुम् ।।

(२१)

प्रियालालराधामुकुन्दाऽङ्घ्रिचित्तं

(१६)

सहस्रों मृग-धेनु (गोमाता) प्लवङ्ग (वानर) आदि के द्वारा अत्यन्त रमणीय, चित्ताकर्षक परम पवित्र श्रीगोवर्धन धाम में विराजित श्रीहरि के दिव्य नामों का संकीर्तन करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भक्तिपूर्ण भाव से स्मरण करते हैं।

(१७)

देदीप्यमान दिव्य कान्ति से युक्त, सद् वेदादि शास्त्रों के एकमात्र सार स्वरूप परम वरेण्य, दिव्य श्याम कान्ति वाले शरणागत रक्षक और अपनी दिव्य वाणी एवं कर्म के द्वारा हम पर कृपा वृष्टि करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को हृदय से हम प्रणाम करते हैं।

(१८)

अपने कर-कमलों के द्वारा नित्य निकुञ्ज में विराजे हुए श्रीश्यामा-श्याम के चरणारविन्दों की सेवा करते हुए, दिव्य कान्तिपूर्ण श्रीरङ्गदेवीजी के सखी स्वरूप में विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय से स्मरण करते हैं।

(१९)

अपने हस्तकमल में दिव्य महापुरुषों के आप्त शास्त्र को धारण किये हुए विरोधियों के महान् तर्क का खण्डन करने में पटु, दैन्य भाव से शोभायमान प्रसन्न चित्त वाले श्रीनिम्बार्कवर्य भगवान् का हम स्मरण करते हैं।

(२०)

अमृत से परिपूर्ण दिव्य भावमय, दया दाक्षिण्य, औदार्यादि से सिक्त कृपा पूर्ण शब्दों के द्वारा रस का वर्षण करते हुए, मधुर मन्द मञ्जुल हास युक्त शान्त स्वरूप वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय से ध्यान करते हैं।

(२१)

श्रीव्रज वृन्दावन धाम की लता निकुञ्जों में विहार करते हुए युगल प्रियालाल श्रीश्यामाश्याम के चरणारविन्द का ध्यान करते हुए, वेदादि शास्त्रों को जानने वाले अपने शिष्यों, साधुवृन्दों के साथ शास्त्रों को धारण

व्रजन्तं व्रजे कुञ्जमध्ये सदैव।
सशिष्यं ससाधुं सशास्त्रं प्रसिद्धं
भजामि श्रुतिज्ञं हृदा निम्बभानुम्।।

(२२)

महारासलीलारसाम्भोधिभङ्गै-
रसीमोद्भवोल्लासलीनं शुभाङ्गम्।
अहो दिव्यवृन्दावनाऽऽलीस्वरूपं
स्मरामीड्यमानं सुरैर्निम्बभानुम्।।

(२३)

सुगेयं सुधीभिः सदा शास्त्रविज्ञै-
र्वरेण्यं धरायां हरे र्ध्यानशीलम्।
अचिन्त्यस्वरूपं महानन्दधाम
रसाचार्यनिम्बार्करूपं स्मरामि।।

(२४)

गिरीशेऽत्र गोवर्धने कृष्णधाम्नि
गुहाकन्दरे च समाधौ निमग्नम्।
महाचक्ररूपं सुधीशं शरण्यं
सदा चिन्तयामीह निम्बार्कमाद्यम्।।

(२५)

भवारण्यतीव्राऽऽपदाध्वान्तनाशे
प्रसिद्धार्करूपं प्रभापूर्णबिम्बम्।
अनन्ताऽङ्घ्रिराजीवभूयिष्ठदिव्य-
सुगन्धाऽऽप्तकामं भजे निम्बभानुम्।।

(२६)

युगे द्वापरान्ते प्रभो-र्भक्तिसार-
प्रसाराय भूमौ कृताऽतीवयत्नम्।
हरे-र्हस्तचक्रश्च निम्बार्करूपं

किये हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हृदय से भजन करते हैं।

(२२)

महा रासलीला रूपी समुद्र से उत्पन्न असीम आनन्द उल्लास में स्निग्ध शुभ अङ्ग वाले, दिव्य वृन्दावन की रंगदेवीजी के सखि स्वरूप को धारण किए हुए सुरवृन्द के द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है, ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय से स्मरण करते हैं।

(२३)

सदा शास्त्रों के ज्ञाता विद्वद्वृन्द के द्वारा जिनकी स्तुति गान की जाती है एवं आनन्दकन्द नन्दनन्दन के ध्यान में संलग्न, जगत् में पूजित, महान् आनन्द के कोष रूप अचिन्त्य स्वरूप वाले रस के आचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम स्मरण करते हैं।

(२४)

श्रीकृष्ण के व्रज वृन्दावन धाम में श्रीगिरिराज गोवर्धन की (गुफा) कन्दरा में समाधिस्थ श्रीसुदर्शन चक्रावतार विद्वद्वरेण्य, शरणागत रक्षक, आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम चिन्तन करते हैं।

(२५)

इस संसार के सकल अन्धकार को नष्ट करने व आपत्तियों का निवारण करने में प्रसिद्ध दिव्य प्रकाशित पूर्ण बिम्ब भगवान् सूर्य के तेज स्वरूप को धारण करने वाले अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक भगवान् श्रीकृष्ण के चरण-कमल की भक्ति स्वरूपी दिव्य सुगन्ध की कामना करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(२६)

द्वापर युग के अन्त में भगवान् श्रीयुगलकिशोर श्यामा-श्याम की युगल भक्तिरस के प्रचार-प्रसार हेतु भगवान् श्रीकृष्ण के प्रिय आयुध सुदर्शन चक्रराज के रूप में इस भूतल पर अवतार धारण करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम निष्ठा से प्रातः प्रणाम करते हैं।

व्रजन्तं व्रजे कुञ्जमध्ये सदैव ।
सशिष्यं ससाधुं सशास्त्रं प्रसिद्धं
भजामि श्रुतिज्ञं हृदा निम्बभानुम् ।।

(२२)

महारासलीलारसाम्भोधिभङ्गै-
रसीमोद्भवोल्लासलीनं शुभाङ्गम् ।
अहो दिव्यवृन्दावनाऽऽलीस्वरूपं
स्मरामीड्यमानं सुरैर्निम्बभानुम् ।।

(२३)

सुगेयं सुधीभिः सदा शास्त्रविज्ञै-
र्वरिण्यं धरायां हरे र्ध्यानशीलम् ।
अचिन्त्यस्वरूपं महानन्दधाम
रसाचार्यनिम्बार्करूपं स्मरामि ।।

(२४)

गिरीशेऽत्र गोवर्धने कृष्णधाम्नि
गुहाकन्दरे च समाधौ निमग्नम् ।
महाचक्ररूपं सुधीशं शरण्यं
सदा चिन्तयामीह निम्बार्कमाद्यम् ।।

(२५)

भवारण्यतीव्राऽऽपदाध्वान्तनाशे
प्रसिद्धार्करूपं प्रभापूर्णबिम्बम् ।
अनन्ताऽङ्घ्रिराजीवभूयिष्ठदिव्य-
सुगन्धाऽऽप्तकामं भजे निम्बभानुम् ।।

(२६)

युगे द्वापरान्ते प्रभो-र्भक्तिसार-
प्रसाराय भूमौ कृताऽतीवयत्नम् ।
हरे-र्हस्तचक्रश्च निम्बार्करूपं

किये हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हृदय से भजन करते हैं।

(२२)

महा रासलीला रूपी समुद्र से उत्पन्न असीम आनन्द उल्लास में स्निग्ध शुभ अङ्ग वाले, दिव्य वृन्दावन की रंगदेवीजी के सखि स्वरूप को धारण किए हुए सुरवृन्द के द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है, ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय से स्मरण करते हैं।

(२३)

सदा शास्त्रों के ज्ञाता विद्वद्वृन्द के द्वारा जिनकी स्तुति गान की जाती है एवं आनन्दकन्द नन्दनन्दन के ध्यान में संलग्न, जगत् में पूजित, महान् आनन्द के कोष रूप अचिन्त्य स्वरूप वाले रस के आचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम स्मरण करते हैं।

(२४)

श्रीकृष्ण के व्रज वृन्दावन धाम में श्रीगिरिराज गोवर्धन की (गुफा) कन्दरा में समाधिस्थ श्रीसुदर्शन चक्रावतार विद्वद्वरेण्य, शरणागत रक्षक, आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम चिन्तन करते हैं।

(२५)

इस संसार के सकल अन्धकार को नष्ट करने व आपत्तियों का निवारण करने में प्रसिद्ध दिव्य प्रकाशित पूर्ण बिम्ब भगवान् सूर्य के तेज स्वरूप को धारण करने वाले अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक भगवान् श्रीकृष्ण के चरण-कमल की भक्ति स्वरूपी दिव्य सुगन्ध की कामना करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(२६)

द्वापर युग के अन्त में भगवान् श्रीयुगलकिशोर श्यामा-श्याम की युगल भक्तिरस के प्रचार-प्रसार हेतु भगवान् श्रीकृष्ण के प्रिय आयुध सुदर्शन चक्रराज के रूप में इस भूतल पर अवतार धारण करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम निष्ठा से प्रातः प्रणाम करते हैं।

हृदाऽहं नमामि प्रभाते सनिष्ठम् ।।

(२७)

हरे-र्मन्त्रजापादिसद्बोधकारं
स्वकीयोच्चभावै-र्महाज्ञानदञ्च ।
प्रभो-र्नामकीर्त्या सुसन्तोषपूर्णं
भजे निम्बभानुं सदैव प्रभाते ।।

(२८)

मुकुन्दाऽङ्गसौन्दर्यमाधुर्यरूप-
सुधासिन्धुधाराप्रवाहे निमग्नम् ।
सदाचारबोधाय यो यत्नशील-
स्तमोदारमूर्तिं भजे निम्बभानुम् ।।

(२९)

व्रजे राधिकादिव्यपादाम्बुजेषु
हृदा ध्यानशीलं प्रियाचार्यरूपम् ।
हरेरायुधोत्तमचक्रस्वरूपं
सदाऽहं भजे चारुनिम्बार्कवर्यम् ।।

(३०)

मनोमुग्धकारं नराकारहृद्यं
जयन्त्याः कुमारं जगद्वन्द्यरूपम् ।
असीमोत्तमाङ्ग श्रुतेः सारभाव-
मभिव्यञ्जयन्तं भजे निम्बभानुम् ।।

(३१)

भवतापहरोदिव्योनिम्बार्कस्मरणस्तवः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ।।

(२७)

परब्रह्म परमात्मा के मन्त्र जाप और भक्ति भाव आदि के द्वारा जो बोधगम्य है, और जो अपने उच्च भावपूर्ण महान् ज्ञान हमें प्रदान करने वाले है तथा भगवान् श्रीराधामाधवजी के नाम संकीर्तन के द्वारा सन्तोषपूर्ण हृदय वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का सदैव प्रातः हम भजन (स्मरण) करते हैं।

(२८)

आनन्दकन्द श्रीमुकुन्द भगवान् के सर्वाङ्ग लावण्य, माधुर्य, कारुण्यादि सौन्दर्य रूपी अमृत समुद्र की धारा के प्रवाह में निमज्जित और जो हमें सदाचार का बोध कराने के लिए सदैव प्रयत्नशील, ऐसे उदारता की प्रतिमूर्ति स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(२९)

श्रीव्रजधाम वृन्दावन में श्रीप्रियाजी के चरण-कमल में जो हृदय से ध्यान मग्न हैं, ऐसे श्रीहरि के उत्तम आयुध श्रीसुदर्शन चक्रावतार स्वरूप ऐसे हमारे प्रिय आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का सदा हम स्मरण करते हैं।

(३०)

प्रसन्नचित्त वाले, मनुष्य के स्वरूप में, माता जयन्ती के सुकुमार, इस जगत् के वन्दनीय असीम उत्तम अंग वाले, वेदादि शास्त्रों के साररूप भाव को प्रकट करते हुए, श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(३१)

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के द्वारा विरचित यह दिव्य श्रीनिम्बार्कस्मरणस्तवः इस संसार के समस्त सन्तापों को, कष्टों को हरण करने वाला है।

श्रीनिम्बार्कस्तवराजः

(१)

व्रजधामनिकुञ्जसेविनं गिरिराजाऽर्चनमग्नमानसम् ।
रसिकैः समुपासितं मुहुः प्रभजे निम्बविभाकरं परम् ।।

(२)

प्रियया सह कृष्णदर्शने विपिने ध्यानरतं निरन्तरम् ।
रसरासविलासभावुकं प्रभजे निम्बरविं सुदर्शनम् ।।

(३)

अरुणाम्बुजमाल्यशोभितं नवपीताम्बरकान्तिधारिणम् ।
तिलकाङ्कितभालमद्भुतं प्रणमामि प्रियनिम्बभास्करम् ।।

(४)

करुणाजलधिं दयाकरं रसरासेश्वरकीर्तनप्रियम् ।
यमुनाजलनित्यसेवनं प्रणुमो निम्बदिवाकरं हृदा ।।

(५)

स्मरणीयमहो गुणाकरं व्रजवृन्दावनधामकुञ्जगम् ।
बुधवृन्दसुगीतसुप्रभं हृदि निम्बार्कमनुस्मराम्यहम् ।।

(६)

शरणागतरक्षणे रतं रसवृन्दावनधूलिलुण्ठितम् ।
युगलाङ्घ्रिसरोजषट्पदं पिचुमन्दार्कशुभप्रदं भजे ।।

श्रीनिम्बार्कस्तवराजः

(१)

श्रीव्रज वृन्दावन धाम की नित्यनिकुञ्जों में विराजित, श्रीगिरिराज गोवर्धनजी का अपने मानस में अर्चन करते हुए, भगवद् प्रेमरस पिपासु रसिकों के द्वारा समुपासित श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(२)

श्रीवृन्दावन धाम में श्रीप्रियाजी के साथ में विहार करते हुए श्रीकृष्ण भगवान् के दर्शन में अनवरत ध्यान मग्न, युगलकिशोर श्यामा-श्याम की नित्य रासलीला का भाव जिनके हृदय में निरन्तर रहता है ऐसे श्रीसुदर्शन चक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम उपासना करते हैं।

(३)

अरुण कमल की माला जिनके सुन्दर कण्ठ प्रदेश में शोभायमान है, नवीन पीतवर्ण का सुन्दर दुपट्टा जिन्होंने धारण किया है, सुन्दर दिव्य ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक शोभित है, ऐसे हमारे प्रिय श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(४)

जो करुणा के समुद्र और दया के सागर है, जिनको रसब्रह्म, रासेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का कीर्तन ही प्रिय है, जो नित्य श्रीयमुनाजी के जल का सेवन किया करते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम हृदय से प्रणाम करते हैं।

(५)

सौन्दर्य, माधुर्य, कारुण्य, लावण्य, मार्दवादि गुणों के समुद्र, हमारे नित्य स्मरणीय, श्रीव्रज वृन्दावन धाम की नव निकुञ्ज में सुशोभित जिनकी सौन्दर्यता का गान बुधवृन्द के द्वारा किया जाता है, ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम अनुस्मरण करते हैं।

(६)

सर्वदा शरणागत भक्तों की रक्षा में संलग्न, श्रीवृन्दावन धाम की रज में लुण्ठन (लोट पोट) होने वाले, युगल श्रीप्रिया-प्रियतम के चरणारविन्द

(७)

गमने मधुरं मनोहरं वरणीयं सततं स्वकान्तरे।
कृपया शरणे समागत-प्रभुभक्ताय शुभप्रदं द्रुतम्।।

(८)

रविकोटिनिभं सुदर्शनं सुभगं दिव्यमहास्वरूपकम्।
अथ निम्बरविं स्वमानसे रुचिरं नौमि सुधीजनैः स्तुतम्।।

(९)

अलिगुञ्जनमञ्जुले शुभे रमणीये लतिकाद्रुमायिते।
गिरिनिर्झरशोभिताश्रमे व्रजकुञ्जे भज निम्बभास्करम्।।

(१०)

उपदेशकरं सनातनं रसराधापदचिन्तने रतम्।
मुनिवृन्दसदासुसेवितं रट निम्बार्कमचिन्त्यमुत्तमम्।।

(११)

मुखपङ्कजकान्तिशोभनं निजहस्ताम्बुजलेखने पटुम्।
श्रुति-सूत्र-पुराणचिन्तकं भजनीयं भज निम्बभास्करम्।।

(१२)

विपरीतकुतर्कखण्डने भुवि विख्याततमं मनीषिणम्।
हृदि निम्बविभाकरं भजे श्रुतिसिद्धान्तसमन्वये रतम्।।

के मकरन्द का पान करने वाले भ्रमर रूप में शोभित, हमें शुभ फल प्रदान करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(७)

अपने अन्तहृर्दय में जिनके मनोहर चित्ताकर्षक स्वरूप का व जिनकी सतत् चलने की मधुर क्रिया वर्णनीय है, जो शरणागत भगवद् भक्तों के लिए कृपापूर्ण भाव से त्वरित शुभ फल प्रदान करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम स्मरण करते हैं।

(८)

करोड़ों सूर्य की आभा वाले श्रीसुदर्शन चक्रावतार, दिव्य महास्वरूप धारण करने वाले, जिनकी सुधीजनों के द्वारा अपने मानस में स्तुति की जाती है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम अपने मानस में प्रणाम करते हैं।

(९)

परम रमणीय सुन्दर लता-द्रुमादि जो कि वायु के द्वारा सञ्चरित भ्रमरादि के सुन्दर गुञ्जन से युक्त लतावितानाच्छादित व्रजक्षेत्र में सुन्दर निर्मल जल के झर्झरित झरनों से परम शोभायमान श्रीगिरिराज की उपत्यका में स्थित आश्रम में शोभित श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(१०)

रसराज एवं श्रीप्रियाजी के पादारविन्द के ध्यान में संलग्न, हमें दिव्य उपदेश प्रदान करने वाले, सनातन, मुनिजनों के द्वारा सदैव सुसेवित उत्तम अचिन्तनीय श्रीनिम्बार्क भगवान् का नाम संकीर्तन करना चाहिये।

(११)

जिनका मुख-कमल अतुलनीय कान्ति आभायुक्त परम शोभनीय है एवं वेदादि शास्त्र, पुराण, पारस्करादि सूत्रों के चिन्तन में सदैव संलग्न रहने वाले व स्वयं अपने हस्त-कमल से शास्त्र लेखन में प्रवीण श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें निरन्तर भजन करना चाहिये।

(१२)

इस भूतल पर विपरीत कुतर्क करने वालों का खण्डन करने वालों में परम विख्यात, तीक्ष्ण मेधा सम्पन्न, वेद-वेदान्तादि समस्त सिद्धान्तों का समन्वय करने में अनुरक्त श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में भजन करते हैं।

(१३)

विविधद्रु-लताऽऽवलीतते पिक-कीरादिनिनादगुञ्जिते ।
व्रजनिम्बपुरे विराजितं रुचिरं निम्बविभाकरं भजे ।।

(१४)

अरुणात्मजनिम्बभास्करं स्वजयन्तीतनुजं विभावये ।
रविजातटयुग्मचिन्तकं व्रततीकुञ्जतले मनोहरम् ।।

(१५)

स्वसुदर्शनकुण्डघट्टके विहरन्तं मुदितं सशिष्यकम् ।
निगमागममतत्त्वदर्शकं स्वकनिम्बार्कमिहं प्रणौम्यहम् ।।

(१६)

वृषभानुपुरे च राधिका-पदकञ्जाऽर्चनहृद्यमानसम् ।
व्रजभूमिजनैः प्रसेवितं नितरां निम्बविभाकरं भजे ।।

(१७)

विधये रविदर्शकं द्रुतं शुभसायं समये समागते ।
रविकोटिसमप्रभं प्रभुं प्रणुमो निम्बविभाकरं वरम् ।।

(१८)

व्रजकुञ्जवने द्रुमावली-कमनीये शुक-कोकिलारवैः ।
अभिगुञ्जितयुत्तमे स्थितं सततं निम्बविभावसुं भजे ।।

(१९)

खगवृन्दसुगुञ्जिताऽऽश्रमे वटुकोच्चारितवेदपावनैः ।
बहुमन्त्रवचोभिरञ्चिते रुचिरं निम्बदिनेशमाश्रये ।।

(१३)

विभिन्न प्रकार की लता पल्लवाच्छादित एवं मयूर, शुक, सारिकादि की मधुर ध्वनि के द्वारा गुञ्जायमान व्रजक्षेत्र में स्थित श्रीनिम्बग्राम में अतीव चित्ताकर्षक स्वरूप में विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें नाम स्मरण करना चाहिये।

(१४)

महर्षि अरुण ऋषि के पुत्र रूप में परम शोभायमान श्रीनिम्बार्क भगवान् एवं माता जयन्ती के उदर से जन्म धारण करने वाले, लतानिकुञ्ज में विराजे हुए सूर्य पुत्री श्रीयमुनाजी के पावन पुलिन पर युगल सरकार श्रीश्यामा-श्याम का ध्यान करते हुए, मनोहर स्वरूप में शोभायमान है।

(१५)

अपने शिष्यों के साथ में परम प्रसन्न मुद्रा में श्रीसुदर्शन सरोवर के रमणीय घाट पर विहार करते हुए श्रुति शास्त्रों के तत्वों का विचार-विमर्श करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१६)

श्रीव्रज बरसाना धाम में श्रीप्रियाजी के चरण कमलों का अपने हृदय में अर्चन करते हुए एवं व्रजवासीजनों के द्वारा नित्य समर्चित श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम निरन्तर नाम स्मरण करते हैं।

(१७)

दिवाभोजी सन्यासी के स्वरूप में अपने अरुणाश्रम में पधारे हुए श्रीब्रह्माजी के लिए शुभ सन्ध्याकाल के उपस्थित हो जाने पर भी सूर्य के दर्शन कराने वाले, करोड़ों सूर्य की कान्ति को धारण करने वाले, श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१८)

विविध द्रुमावलियों से अत्यन्त रमणीय व्रजक्षेत्र की निकुञ्जों में शुक, कोकिल आदि की मधुर ध्वनि से गुञ्जायमान उत्तम स्थान पर परम शोभायमान श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम स्मरण करते हैं।

(१९)

छोटे-छोटे ब्राह्मण वटुकों के द्वारा उच्चरित वेद मन्त्रों के द्वारा

(२०)

श्रुति-तन्त्र-पुराणभाषकं नय-वेदान्तविदं मनीषिणम् ।
रसगीतिसुगायकं परं नितरां निम्बरविं समाश्रये ।।

(२१)

मृग-गोसमुदायसुन्दरे लतिकापुष्पसुगन्धशोभने ।
रमणीयशुभाश्रमेऽश्चितं भज निम्बार्कमहो सुदेशिकम् ।।

(२२)

सुसरोवरतीरकानने विहरन्तं मुदितं मनोरमे ।
तुलसी-मणिमाल्यधारिणं प्रणमामि प्रियनिम्बभास्करम् ।।

(२३)

कुसुमाऽश्चितदिव्यविग्रहं नवरत्नोत्तमहारभूषितम् ।
कलिकल्मषपुञ्जभञ्जकं हृदि नित्यं भज निम्बभास्करम् ।।

(२४)

रसिकं हरिदर्शनस्य च प्रियं भावाञ्जलिसागरं परम् ।
अनिशं प्रभुभक्तिसम्प्रदं स्वकचित्ते भज निम्बभास्करम् ।।

पवित्र एवं विभिन्न पक्षि समूह की सुन्दर ध्वनि से गुञ्जायमान आश्रम में परम शोभायमान विभिन्न मन्त्रों से अर्चित श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम शरण लेते हैं।

(२०)

वेद-पुराण-तन्त्र-सम्मत प्रवचन करने वाले, न्याय, उपनिषदादि के ज्ञान को धारण करने वाले, महामनीषि, युगल भक्तिरसपूर्ण गीति शास्त्र का गान करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम आश्रय लेते हैं।

(२१)

मृग-गो यूथ के विचरण करने से परम सुन्दर एवं विभिन्न लता-द्रुमों के पुष्पों की सुगन्ध के प्रवाहित होने से अत्यन्त रमणीय आश्रम में भक्तों के द्वारा समर्चित श्रीनिम्बग्राम में विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें भजन करना चाहिये।

(२२)

जो कण्ठ प्रदेश में सुन्दर तुलसी की माला धारण किए हुए सुदर्शन सरोवर पर शोभायमान सुन्दर उद्यान में विहार करते हुए, परम प्रसन्न चित्त श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(२३)

विभिन्न पुष्पों के द्वारा समर्चित दिव्य स्वरूप वाले, जिन्होंने नव रत्न का हीरा, मोती, पन्ना, माणिक्य आदि का उत्तम हार जिनके हृदय स्थल पर शोभायमान है, एवं जो इस कलियुग के समस्त कल्मष अर्थात् कष्टों व सन्तापों को नष्ट करने वाले है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में नित्य स्मरण करते हैं।

(२४)

जो आनन्द कन्द नन्दनन्दन भगवान् सर्वेश्वर के दर्शनों के पिपासु परम रसिक, प्रभु भक्ति भाव के समुद्र हमें श्रीयुगलचरणारविन्द की भक्ति प्रदान करने वाले, हमारे प्रिय श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम सदैव हमारे हृदय में नाम स्मरण करते हैं।

(२५)

मुनिनारदमार्गदर्शकं प्रभुसर्वेश्वरसेवयोल्लसम् ।
व्रजकाननकुञ्जभावनं नितरां निम्बरविञ्च भावये ।।

(२६)

रसवर्षणपूर्णपाटवे रससिद्धं रसदिव्यसागरम् ।
सुभगस्मितसुन्दराननं भज मायाविनिवारणे दृढम् ।।

(२७)

हरिभक्तिविरुद्धवारणे बहुदक्षं सकलागमाकरम् ।
भज निम्बरविं कृपार्णवं प्रभुपादोदकनित्यसेवनम् ।।

(२८)

शुभतीर्थससेवने रतं बुध-सद्भिः सह भारतावनौ ।
भवबन्धनमुक्तिकारकं हृदि वन्दे पिचुमन्दभास्करम् ।।

(२९)

प्रभुरूपनिरूपणे पटुं हरिगङ्गोदकपानसेवनम् ।
जनमङ्गलज्ञानबोधकं भज निम्बार्कगुरुं जगद्गुरुम् ।।

(३०)

स्तवपुञ्जसुगीतिसंस्तुतं मनसा देवगिरा विपश्चितम् ।
गुणिवृन्दविदां सुवर्णितं हरिचक्रं भज निम्बभास्करम् ।।

(२५)

देवर्षि नारदजी के द्वारा सम्प्रदत्त भक्ति मार्ग को प्रदर्शित करने वाले भगवान् श्रीसर्वेश्वरजी की सेवा से हर्षित हृदय वाले, व्रज वृन्दावन की नित्य निकुञ्जों में युगल प्रिया-प्रियतम का स्मरण करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में चिन्तन करते हैं।

(२६)

जो श्रीयुगल भक्तिरस के दिव्य सागर है, श्रीयुगल भक्तिरस के पूर्ण ज्ञाता जो कि भगवद् चरणानुरागी भक्तों पर युगल भक्तिरस का वर्षण करने में कुशल, मधुर मृदुहास से युक्त मुखारविन्द वाले, भगवद् भक्तों के दृढता पूर्वक माया मोह का निवारण करने में कुशल श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें नाम स्मरण करना चाहिए।

(२७)

श्रीहरि भक्ति में संलग्न भक्तों पर विपरीत आचरण करने वाले आततायियों से रक्षा करने वाले, सकल वेदादि शास्त्र ज्ञान के कोष रूप, कृपा के सागर, जो कि श्रीसर्वेश्वर प्रभु के चरणामृत का नित्य सेवन करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें भजन करना चाहिए।

(२८)

वेदादि शास्त्रों के ज्ञाता विद्वानों के साथ में भारत की रम्य धरा पर स्थित पवित्र तीर्थों की यात्रा करने में संलग्न, हमें इस संसार के बन्धनों से मुक्ति प्रदान करने वाले, श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम हृदय में वन्दना करते हैं।

(२९)

श्रीयुगलकिशोर श्यामा-श्याम के नख शिख स्वरूप का निरूपण करने में कुशल, गङ्गोदक का नित्य पान करने वाले व इस संसार के सहृदय जनों को मंगलप्रद ज्ञान प्रदान करने वाले, जगद्गुरु श्रीनिम्बार्क प्रभु का हमें नाम स्मरण करना चाहिए।

(३०)

श्रीयुगल चरणारविन्द की देववाणी अर्थात् संस्कृत भाषा में स्वयं द्वारा विनिर्मित स्तव गीतिकाओं के द्वारा स्तुति (वन्दना) करने वाले गुणवृन्द

(३१)

भवसिन्धुनिमग्नतारणे कुशलं कृष्णकचं कलास्पदम् ।
भज निम्बरविं दयार्णवं परिपूर्णं शरणार्तिवारणम् ।।

(३२)

नवनीरददिव्यविग्रहं नलिनाक्षं प्रियदर्शनं भजे ।
नवचारुकुशासने शुभे सुसमासीनमहो सुदर्शनम् ।।

(३३)

अतिदैन्यसुवृत्तिबोधकं रससङ्गीतसुधाऽभिवर्षकम् ।
व्रजमाधवरूपचिन्तकं भज कुञ्जे सुसखीस्वरूपकम् ।।

(३४)

अरविन्दसुमाल्यशोभनं रसिकै र्भावभरैर्निसेवितम् ।
परमार्थपरायणं सदा प्रभजामि प्रभुनिम्बभास्करम् ।।

(३५)

युगलाऽङ्घ्रिसरोजषट्पदं प्रभुसर्वेश्वरनामजापकम् ।
विपिनाङ्गणयुग्मलीलयाऽमृतपूर्णं भज निम्बभास्करम् ।।

सहृदयों के द्वारा सुवर्णित श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें भजन करना चाहिये।

(३१)

इस संसार सागर में निमग्न सहृदय जनों का उद्धार करने वाले, काले सुन्दर घुँघराले बालों वाले, विभिन्न कलाओं के आस्पद (स्थान) शरणागत भक्तों के कष्टों को हरण करने वाले, दया के सागर, सभी सौशिल्य मार्दवादि गुणों से परिपूर्ण, श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें नाम स्मरण करना चाहिये।

(३२)

नवीन बादलों के समान दिव्य कान्ति वाले, जिनके नील-कमल के समान नेत्र है, ऐसे सर्वाङ्ग सुन्दर दर्शन वाले, नवीन सुन्दर कुश निर्मित आसन पर विराजे हुए, श्रीसुदर्शन चक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें भजन करना चाहिए।

(३३)

भगवद् प्राप्ति का अन्यतम साधन अत्यन्त दैन्य भाव का बोध कराने वाले (कृपास्यदैन्यादियुजि प्रजायते) भगवद् भक्ति रस रसामृत का सङ्गीत के माध्यम से अभिवर्षण करने वाले, व्रज वृन्दावन धाम की लता कुञ्ज में विराजे हुए श्रीराधामाधवजी के स्वरूप का चिन्तन करने वाले, श्रीरङ्गदेवीजी के सुन्दर सखी स्वरूप को धारण करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें भजन करना चाहिये।

(३४)

जिनके हृदय स्थल पर कमल की सुन्दर माला शोभायमान है, भगवद् भक्ति भाव से परिपूरित भगवद् भक्ति रस मर्मज्ञ रसिकों के द्वारा सदा अर्चनीय परमार्थ साधन ही जिनका एकमात्र लक्ष्य है, ऐसे प्रभु श्रीनिम्बार्क भगवान् का सदैव हम भजन करते हैं।

(३५)

श्रीयुगल चरणारविन्द के भक्ति रस रूपी मकरन्द का पान करने वाले भ्रमर रूप श्रीनिम्बार्क प्रभु श्रीसर्वेश्वर भगवान् के सुन्दर नामों का जप करते हैं, श्रीवृन्दावन धाम में विहार करते हुए श्रीप्रिया प्रियतम की लीला

(३६)

हरिकेलिविलासदर्शकं विपिने दिव्यसरोवरे स्थितम् ।
कदलीदलकुञ्जमण्डिते प्रभजे निम्बदिवाकरं मुहुः ।।

(३७)

हरिभक्तिरसाम्बुसेवनं गिरिगोवर्धनगह्वरे सदा ।
तुलसीद्रुप्रपूजने रतं रुचिरं निम्बविभाकरं भजे ।।

(३८)

पिचुमन्दनिकुञ्जशोभितं यमुनावारिजवृष्टिमण्डितम् ।
व्रजनीपनवीनकानने रमणीयं भज निम्बभास्करम् ।।

(३९)

रसधाम्नि मनोज्ञमौक्तिक-स्थलभागे सततं विराजितम् ।
अतिमोहकरूपदर्शनं प्रभजे निम्बविभावसुं वरम् ।।

(४०)

अलिवृन्दसुगुञ्जगुञ्जितेऽनुपमे दिव्य शुभाश्रमे व्रजे ।
युगलाङ्घ्रिसरोजभावितं भजनीयं भज निम्बभास्करम् ।।

(४१)

निम्बार्कस्तवराजश्च राधाकृष्णाऽङ्घ्रिभक्तिदः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ।।

रस से परिपूर्ण श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें नाम स्मरण करना चाहिये।

(३६)

श्रीनिम्बग्राम में श्रीसुदर्शन सरोवर पर कदली अर्थात् केलों के द्वारा विनिर्मित सुन्दर निकुञ्ज मण्डप में विराजे हुए श्रीयुगलकिशोर श्यामा-श्याम की दिव्य लीलाओं का दर्शन करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम सदा भजन करते हैं।

(३७)

श्रीगिरिराज गोवर्धन की उपत्यका में श्रीयुगल चरणारविन्द की भक्ति रस का पान करते हुए, श्रीतुलसी अर्चना में संलग्न सुन्दर स्वरूप वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम नाम स्मरण करते हैं।

(३८)

श्रीव्रज वृन्दावन श्रीयमुनाजी के जल की वृष्टि से मण्डित सुन्दर निम्ब निकुञ्ज में परम शोभायमान (विराजे हुए) अति रमणीय स्वरूप वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें सतत नाम स्मरण करना चाहिये।

(३९)

श्रीयुगलकिशोर श्यामा-श्याम की भक्ति रस से परिपूरित श्रीवृन्दावन धाम में मणि-मालाओं सुसज्जित स्थल पर विराजे हुए, अत्यन्त चित्ताकर्षक सुन्दर स्वरूप वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(४०)

व्रजक्षेत्र में सुन्दर भ्रमर समूह की गुञ्जार से गुञ्जरित दिव्य पवित्र आश्रम में श्रीयुगल चरणारविन्द का भावपूर्ण हृदय से भजन करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हमें नाम स्मरण करना चाहिये।

(४१)

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी के द्वारा रचित यह श्रीनिम्बार्कस्तवराज हमें निश्चय ही युगल श्रीराधाकृष्ण के चरणारविन्द की भक्ति प्रदान करने वाला है।

निम्बार्कचरितस्तवः

(१)

श्रीमन्निम्बार्कराद्धान्तद्वैताद्वैतः श्रुतीरितः ।
अवधेयो निजस्वान्ते ब्रह्मसूत्रसुसम्मतः ।।

(२)

वेदान्तपारिजाताख्यं सौरभान्तिममुत्तमम् ।
निम्बार्कभाष्यमयख्यातं चकास्ति भुविमण्डले ।।

(३)

वृन्दावननिकुञ्जस्य रसोपासनतत्परः ।
राधाकृष्णं हृदा चारु रतो निम्बार्कदेशिकः ।।

(४)

एकादशीव्रते येन कपालवेध उद्धृतः ।
निम्बार्काचार्यवर्योऽसौ लोके सर्वत्र सेव्यते ।।

(५)

आद्याचार्यं हृदा धार्यं मनसा गिरा कर्मणा ।
निम्बादित्यं भुवि ख्यातं भिन्नाभिन्नप्रदर्शकम् ।।

(६)

तपश्चकार लोकेऽस्मिन्व्रजे गोवर्धनान्तिके ।
निम्बग्रामे महारम्ये केकि-कोकिलकूजिते ।।

(७)

चक्रावतारनिम्बार्कः सुदर्शनाङ्गरूपकः ।
जगद्गुरुवरेण्यश्च जयतीह निरन्तरम् ।।

(८)

नैमिषे चक्रतीर्थे च येनाऽकारि तपःस्वयम् ।
सोऽयं निम्बार्क आचार्यश्चकास्ति भूतले सदा ।।

श्रीनिम्बार्कचरितस्तवः

(१)

वेद वेदान्त ब्रह्मसूत्र सम्मत श्रीनिम्बार्क भगवान् द्वारा प्रवर्तित श्रीद्वैताद्वैत सिद्धान्त सदैव अपने अन्तःकरण में मनन करने योग्य है।

(२)

श्रीनिम्बार्क भगवान् द्वारा प्रस्थानत्रयी (श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र) पर किया गया उत्तम सुविख्यात भाष्य ''श्रीवेदान्तपारिजात सौरभ'' इस भूमण्डल पर सभी को चमत्कृत करने वाला है।

(३)

श्रीवृन्दावन धाम की नित्य निकुञ्ज में विराजित श्रीराधामाधव युगल प्रिया-प्रियतम के चरणारविन्द की भक्ति रसोपासना में हृदय से अनुरक्त श्रीनिम्बग्राम में श्रीनिम्बार्क भगवान् परम शोभायमान है।

(४)

श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् के द्वारा उद्धृत एकादशी व्रत में प्रसिद्ध श्रीकपालवेध सिद्धान्त इस संसार में सर्वत्र स्वीकार्य है। (अपनाने योग्य है)

(५)

भिन्नाभिन्न (स्वाभाविक द्वैताद्वैत) सिद्धान्त प्रवर्तक इस भूतल पर परम विख्यात आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् मन से वचन से कर्म से हृदय से सदैव अवधारणीय है।

(६)

इस जगत् में व्रज क्षेत्रान्तर्गत श्रीगिरिराज गोवर्धन की उपत्यका में स्थित निम्बग्राम में मयूर-पिकादि की केका वाणी से अति रमणीय आश्रम में श्रीनिम्बार्क भगवान् ने तपश्चर्या की।

(७)

श्रीसुदर्शनचक्रावतार जगद्गुरु श्रीनिम्बार्क भगवान् की सदैव इस संसार में जय हो।

(८)

नैमिषारण्य चक्रतीर्थ में जिन्होंने तपश्चर्या की है ऐसे श्रीआद्याचार्य

(९)

तापं हरति लोकानां ददात्यध्यात्मसम्पदाम् ।
मन्त्रदीक्षां च साधुभ्यः स निम्बार्को विभाति नः ।।

(१०)

ज्ञातव्यो वरणीयश्च कारुण्यामृतसागरः ।
आद्याचार्यश्च निम्बार्को जयत्यनारतं भुवि ।।

(११)

देदीप्यमान आचार्यः सत् करुणैकजीवनः ।
देवर्षेराप्तदीक्षश्च विभाति निम्बभास्करः ।।

(१२)

लोकहिताय भूलोके प्रादुर्भूतः सुदर्शनः ।
कृष्णकरायुधाश्चाऽस्ति श्रीमन्निम्बदिवाकरः ।।

(१३)

आदिष्टो हरिणा सद्यश्चक्रराजसुदर्शनः ।
आविर्बभूव याम्येऽसौ मूंगीग्रामे च भूतले ।।

श्रीनिम्बार्क भगवान् सदैव इस भूतल पर देदीप्यमान स्वरूप में विराजते हैं। सभी को चमत्कृत करते हैं।

(९)

इस संसार के समस्त सन्तापों को (कष्टों) को हरण करते हैं और द्वैताद्वैत सिद्धान्त के माध्यम से श्रीयुगल निकुञ्ज भक्तिरस रूपी अध्यात्म सम्पदा भगवद् चरणारविन्द सेवन परायण रसिक भावुक भक्तों को प्रदान करते हैं एवं सहृदय साधु सज्जनों को वैष्णवी मन्त्र दीक्षा प्रदान करने वाले वे श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भूतल भारतभूमि पर शोभायमान है।

(१०)

जो कारुण्य, सौशील्य, मार्दव, लावण्य, सौन्दर्य, माधुर्यता के समुद्र हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् के दर्शन-स्पर्श-अर्चनादि के द्वारा जानना एवं उनके द्वारा विरचित शास्त्रोक्त ज्ञान व मार्ग को समझना व उनके स्वरूप माधुर्यादि के माध्यम से स्तुति परक निर्वचन (वर्णन) करना चाहिए, ऐसे स्तुत्य आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् की सदैव इस भारतभूमि पर जय हो।

(११)

देवर्षि श्रीनारदजी से दीक्षा प्राप्त करने वाले आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् जिनका प्राणिमात्र के कष्टों को हरण कर उन पर करुणा कर आनन्द प्रदान करना ही जिनका जीवन है ऐसे आचार्यप्रवर सूर्य के समान देदीप्यमान स्वरूप में इस भारतभूमि को अलंकृत करते हैं।

(१२)

आनन्दकन्द नन्दनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण के प्रिय आयुध श्रीसुदर्शन चक्रावतार के रूप में संसार के हित मंगल के लिए श्रीनिम्बार्क भगवान् (अवतरित) अवतार धारण करते हैं।

(१३)

भगवान् श्रीकृष्ण का आदेश प्राप्त कर त्वरित श्रीसुदर्शन चक्रराज श्रीनिम्बार्क भगवान् इस (भूतल) भारतभूमि के दक्षिणाञ्चल में गोदावरी के तट पर स्थित मूंगी ग्राम में अवतरित हुए।

(१४)

अतीवरमणीये च पादपपङ्क्तिशोभिते ।
अरुणाश्रमभूभागे जज्ञे चक्र-सुदर्शनः ।।

(१५)

जयन्त्या उदराज्जातः श्रीमत्कृष्णकरायुधः ।
नियमानन्द इत्याख्योऽरुणसूनुः शुभप्रदः ।।

(१६)

गोदावरीतटे रम्ये मूंगीग्रामेऽरुणाश्रमे ।
जन्मोत्सवशुभारम्भो जातोमङ्गलदायकः ।।

(१७)

मूंगीग्रामाद्व्रजं यात्वा निम्बग्रामे तपःस्थले ।
श्रीनिम्बार्कः कृतावासः सदा विजयते भुवि ।।

(१८)

श्रीब्रह्मा यतिरूपेण सूर्यास्तकालयागतः ।
निशायाश्चरविंदृष्ट्वा चकार भोजनं प्रियम् ।।

(१९)

अन्तर्हिते च मार्तण्डे निशां विलोक्य विस्मितः ।
समाधौ ज्ञातवान्ब्रह्मा बालोऽयं हरिपार्षदः ।।

(२०)

निम्बार्क इति नाम्ना च घोषितवान्विधिस्तदा ।
प्रसिद्धिराशु सर्वत्र जाता समग्रभूतले ।।

(१४)

श्रीसुदर्शन चक्रराज ने विभिन्न वेलवल्लरियों के द्वारा शोभायमान अत्यन्त रमणीय गोदावरी के पावन पुलिन पर स्थित श्रीअरुण ऋषि के आश्रम में श्रीनियमानन्द के स्वरूप में जन्म धारण किया।

(१५)

भगवान् श्रीकृष्ण के हस्त कमल में स्थित प्रिय आयुधराज श्रीसुदर्शन चक्रावतार मंगल फलों को प्रदान करने वाले, श्रीनियमानन्द नाम से सुविख्यात श्रीनिम्बार्क भगवान् माता जयन्ती की उदरदरी (कोख) से उत्पन्न हुए। (जन्म धारण किया)

(१६)

श्रीगोदावरी के तट पर स्थित मूंगी ग्राम में अत्यन्त रमणीय पावनतम श्रीअरुणाश्रम में श्रीनियमानन्दजी के जन्मोत्सव का शुभारम्भ हमें सभी मन ईप्सित कामनाओं व मङ्गलों को प्रदान करने वाला है।

(१७)

मूंगी ग्राम से श्रीव्रजयात्रा के अन्तर्गत श्रीगिरिराजजी की उपत्यका में स्थित श्रीनिम्बग्राम में आकर पावन तपःस्थली में निवास करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की इस भारतभूमि पर सदैव जय हो।

(१८)

श्रीनिम्बार्क भगवान् की परीक्षार्थ (आए श्रीब्रह्मा) दिवाभोजी यति (सन्यासी) के स्वरूप में सूर्यास्त काल में आए हुए ब्रह्माजी को रात्रिकाल में निम्बवृक्ष पर सूर्य भगवान् के दर्शन कराके श्रीनिम्बार्क प्रभु ने उनको भोजन (प्रसाद) करवाया।

(१९)

श्रीसूर्य भगवान् के अन्तर्हित (अस्त) होने पर अकस्मात् दीर्घ रात्रि के दर्शन कर आश्चर्यचकित हुए श्रीब्रह्माजी ने समाधि में यह जाना कि यह बालक श्रीनियमानन्द निश्चय ही श्रीकृष्ण के निजी पार्षद (सेवक) है।

(२०)

निम्बवृक्ष पर सूर्यदेव के दर्शनानन्तर श्रीब्रह्माजी ने यह उद्घोषणा की कि आज से आप इस समग्र भूतल पर जल्दी ही श्रीनिम्बार्क नाम से

(२१)

उषित्वा व्रजभूमौ च निम्बग्रामे विशेषतः ।
राधाकृष्णनिकुञ्जस्य रसोपासनमाश्रितः ।।

(२२)

प्रस्थानत्रयिकाभाष्यं प्रणीतं निम्बभानुना ।
श्रीद्वैताद्वैतसिद्धान्तं स्वाभाविकं चकार शम् ।।

(२३)

एवं समस्तविश्वस्मिन्भारतेमुख्यतः स्वयम् ।
सहस्रैः साधुभिः सार्द्धं विधाय भ्रमणं शुभम् ।।

(२४)

वैष्णवधर्मराद्धान्तप्रचारं कृतवान्भुवि ।
निम्बार्काचार्यवर्यश्रीः स सुशोभतेऽत्रभारते ।।

(२५)

सुशंखचक्रमुद्राञ्च विलुप्तां द्वारकाञ्चले ।
पुनः संस्थापयामास स निम्बार्को जयत्विह ।।

(२६)

धर्मविरुद्धमूढाँश्च वैष्णवदीक्षया पुनः ।
धर्मयुक्तान्विधायश्री निम्बार्को भुवि राजते ।।

(२७)

वृन्दावनसुधाधाम्नः श्रीनिकुञ्जरसार्णवे ।
निमज्ज्मानिम्बार्कस्ततप्रसारायतत्परः ।।

सुविख्यात होगे।

(२१)

इसके अनन्तर श्रीनिम्बार्क भगवान् ने व्रज क्षेत्र के अन्तर्गत विशेषरूप से निम्बग्राम में निवास करते हुए, युगल चरणारविन्द की निकुञ्ज रसोपासना का आश्रय लिया।

(२२)

श्रीनिम्बार्क भगवान् के द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र प्रस्थानत्रयी सम्मत स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त शास्त्र ''वेदान्तपारिजात सौरभ'' नामक महाभाष्य का प्रणयन किया गया।

(२३)

श्रीनिम्बार्क भगवान् ने इस समस्त भूमण्डल में मुख्यतः भारतभूमि पर सहस्रों सहृदय साधु सज्जनों के साथ में परम पावन मङ्गलमय परिभ्रमण किया।

(२४)

श्रीवैष्णव धर्म का प्रचुर प्रचार-प्रसार इस भूमण्डल पर श्रीनिम्बार्क भगवान् के द्वारा किया गया ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भारतभूमि पर परम सुशोभित होते हैं।

(२५)

गुर्जर प्रदेश के सौराष्ट्र अञ्चल में स्थित श्रीद्वारकापुरी में भुजाओं पर शंख-चक्र की अंकन मुद्रा परम्परा जो विलुप्त हो गई थी उसका पुनः संस्थापन करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की इस भारतभूमि पर जय हो।

(२६)

जो धर्म विरुद्ध आचरण करने वाले मूढ जन थे, उन पर कृपा करके वैष्णवी दीक्षा प्रदान कर सनातन के प्रति अनुरक्त करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भारतभूमि पर सुशोभित होते हैं।

(२७)

श्रीव्रज वृन्दावन धाम में विराजित युगलकिशोर श्यामाश्याम रसब्रह्म की श्रीनिकुञ्ज रसामृत रूपी भक्ति के समुद्र में सदैव आप्लावित रहने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् ने इस भूतल पर उस निकुञ्ज भक्ति रस का प्रसार करने

(२८)

कालिन्द्याः पुलिने कुञ्जे लता-पादपमञ्जुले ।
पतत्रिकुजिते रम्ये निम्बार्कं राजितं भजे ।।

(२९)

रङ्गदेवीसखीरूपं श्रीराधाकृष्णसन्निधौ ।
युग्मसेवास्थितं नित्यं श्रीनिम्बार्कं हृदा भजे ।।

(३०)

नवनिकुञ्ज सेवाप्तं नवनीरदसुन्दरम् ।
नवदिव्यप्रभापूर्णं श्रीमन्निम्बार्कमाश्रये ।।

(३१)

परात्परपरब्रह्मसौन्दर्यामृतसागरम् ।
राधाकृष्णं हृदि ध्यात्वा मोदते निम्बभास्करः ।।

(३२)

यस्य वाण्यां रसो दिव्यो सुधारूपः सुखावहः ।
वहत्यनारतं चारु तं निम्बार्कं नमाम्यहम् ।।

(३३)

निकुञ्जमन्दिरे राधा-कृष्णध्याने समासीनम् ।
भक्तैराराध्यमानञ्च नौमि निम्बार्कभास्करम् ।।

(३४)

असंख्यैःसाधुभिः सार्द्धं गोवर्धनगिरे र्मुहुः ।
परिक्रमां प्रकुर्वन्तं स्मरामि निम्बभास्करम् ।।

हेतु सदैव अनुरक्त रहते हैं।

(२८)

कालिन्दी श्रीयमुनाजी के पावन पुलिन पर लतापादपाच्छादित मनोहर विभिन्न मयूर कोकिलादि पक्षि समूह की मधुर ध्वनि से गुञ्जरित रमणीय निकुञ्ज में श्रीनिम्बार्क भगवान् सुशोभित होते हैं।

(२९)

श्रीयुगल प्रियाप्रियतम राधाकृष्ण के सान्निध्य में दिव्य श्रीरङ्गदेवीजी के सखि स्वरूप में श्रीनिम्बार्क भगवान् सदैव श्रीश्यामाश्याम युगल चरणारविन्द की सेवा में संलग्न रहते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय से नाम स्मरण करते हैं।

(३०)

नवीन बादलों की शोभा को धारण करने वाले, दिव्य करोड़ों सूर्य की प्रभा कान्ति से परिपूर्ण नवनिकुञ्जेश्वर श्रीयुगल प्रिया प्रियतम की सेवा में तत्पर रहने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम शरण लेते हैं।

(३१)

सच्चिदानन्द परब्रह्म पुरुषोत्तम सौन्दर्य रूपी अमृत के सागर श्रीराधाकृष्ण के युगल चरणारविन्द का अपने हृदय में ध्यान करके सदैव श्रीनिम्बार्क भगवान् प्रसन्न होते हैं।

(३२)

जिनकी वाणी दिव्य अमृत तुल्य रस से परिपूर्ण है एवं सभी सहृदय भगवद्‌जनों को आनन्द प्रदान करने वाली है। ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(३३)

जो युगल प्रिया-प्रियतम श्रीराधाकृष्ण के ध्यान में लता पादपाच्छादित निकुञ्ज मन्दिर में विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(३४)

असंख्य सन्तों भगवज्जनों के साथ श्रीगिरिराज गोवर्धन की परिक्रमा करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम बारम्बार प्रणाम करते हैं।

(३५)

स्थलकमलमालाया मण्डले शोभितं वरम् ।
अभिज्ञैरर्चितं वन्दे श्रीनिम्बार्कं जगद्गुरुम् ।।

(३६)

अध्यात्मशास्त्रपुञ्जस्य स्वाध्यायाभिरतं भजे ।
निम्बार्काचार्यवर्यं च हरेश्चक्रायुधं प्रियम् ।।

(३७)

सर्वाचार्येषु प्राचीनं द्वैताद्वैतप्रवर्तकम् ।
युग्मोपासनतल्लीनं निम्बार्कं हृदि भावये ।।

(३८)

गोपालमन्त्रराजस्य व्याख्याकारं शुभामहो ।
देदीप्यमानमाचार्यं निम्बार्कमभिभावये ।।

(३९)

आर्तपीडाप्रहर्तारं प्रपन्नहितकारकम् ।
सर्वक्लेशहरं पूज्यं निम्बार्कं नितरां भजे ।।

(४०)

अशेषशास्त्रसञ्ज्ञान-विज्ञानकोषपूरितम् ।
वेदान्तकामधेनोश्च कर्तारं देशिकं भजे ।।

(४१)

शास्त्रे स्वाभाविको भेदाभेदसिद्धान्त उत्तमः ।
मतश्च वर्णितो येन तं श्रीनिम्बार्कं समाश्रये ।।

(३५)

सुन्दर कमल मालाओं के द्वारा सुसज्जित स्थल पर परम सुशोभित सहृदय जनों से समर्चित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्क भगवान् को हमं प्रणाम करते हैं।

(३६)

आध्यात्मिक सद् शास्त्रों के स्वाध्याय चिन्तन में संलग्न श्रीकृष्ण के प्रिय आयुध सुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम नाम स्मरण करते हैं।

(३७)

सभी वैष्णवाचार्यों में परम प्राचीन द्वैताद्वैत सिद्धान्त प्रवर्तक श्रीराधाकृष्ण के युगल चरणारविन्द की उपासना में अनुरक्त श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में ध्यान करते हैं।

(३८)

श्रीगोपाल मन्त्रराज की सम्यक् व्याख्या करने वाले सूर्य के समान देदीप्यमान प्रभा वाले आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में स्मरण करते हैं।

(३९)

शरणागत प्रपन्नजनों की रक्षा करने वाले व संसार के सभी कष्टों को हरण करने वाले सहृदयों के कष्टों को हरण कर उनको आनन्दित करने वाले अर्चनीय श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम सदैव नाम स्मरण करते हैं।

(४०)

सभी वेदादि शास्त्र के ज्ञान विज्ञान के जो कोष है एवं श्रीवेदान्त कामधेनु दशश्लोकी की रचना करने वाले श्रीनिम्बार्क प्रभु का हम नाम स्मरण करते हैं।

(४१)

''श्रीवेदान्त पारिजात सौरभ'' नामक महाभाष्य के अन्तर्गत उत्तम स्वाभाविक भेदाभेद सिद्धान्त का वर्णन जिनके द्वारा किया गया ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम समाश्रय (शरण) लेते हैं।

(४२)

समन्वयात्मकः स्वीयः सिद्धान्तः प्रतिपादितः ।
प्रचारितो भृशं येन निम्बार्कं स्मरामि तम् ॥

(४३)

वैष्णवाचार्यवर्येषु सर्वप्राचीनमुत्तमम् ।
निम्बार्काचार्यवर्यञ्च प्रणमामि पुनः पुनः ॥

(४४)

ऊर्ध्वपुण्ड्रेण राजन्तं ललाटं यस्य सुन्दरम् ।
विलोक्य मोदते चेतस्तं निम्बार्कमहं भजे ॥

(४५)

वेद-वेदान्त तत्त्वज्ञं ब्रह्मविद्भिः समीडितम् ।
श्रीसर्वेश्वरसेवायां रतं निम्बार्कमाश्रये ॥

(४६)

शंकराचार्यकालाच्च निम्बार्कं पूर्ववर्तिनम् ।
आद्याचार्यं वरेण्यञ्च नमामि नितरां हृदा ॥

(४७)

वेदान्तपारिजाताख्यं भाष्यकारं प्रभाकरम् ।
अतीवरुचिरं श्रेष्ठं निम्बार्कं सततं भजे ॥

(४८)

गवां हिताय सातत्यं प्रेरणादायकं भुवि ।
कृपा-दयाऽऽद्रहार्दञ्च निम्बार्कं भावयेऽनिशम् ॥

(४९)

तुलसीमाल्यकण्ठञ्च राधाकृष्णसदाऽऽननम् ।
युग्माराधनमासीनं ध्याये निम्बदिवाकरम् ॥

(४२)

जिन्होंने समन्वयात्मक अपना ''स्वाभाविक भेदाभेद'' सिद्धान्त का प्रतिपादन कर उसका सम्पूर्ण भूमण्डल पर प्रचुर प्रचार-प्रसार किया ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में स्मरण करते हैं।

(४३)

सभी वैष्णवाचार्यों में परम प्राचीनतम आद्याचार्य प्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम बारम्बार प्रणाम करते हैं।

(४४)

जिनका दिव्य भाल ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक के द्वारा परम शोभायमान होता है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् के दर्शन कर किसका चित्त आनन्दित नहीं होता उन श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में नाम स्मरण करते हैं।

(४५)

ब्रह्म को जानने वाले विद्वानों के द्वारा जिनकी महिमा का गुणगान किया जाता है ऐसे वेद-वेदान्तादि के तत्व को जानने वाले, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में अनुरक्त श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम आश्रय लेते हैं।

(४६)

आद्य श्रीशंकराचार्यजी के काल से भी पूर्ववत् हमारे आद्याचार्य वरेण्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम हृदय से सदैव प्रणाम करते हैं।

(४७)

प्रस्थानत्रयी सम्मत ''श्रीवेदान्त पारिजात सौरभ'' नामक भाष्य सनातन धर्म जगत् को आलोकित करने वाली भाष्य रूपी किरण को प्रकाशित करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम निरन्तर नाम स्मरण करते हैं।

(४८)

इस भारत भूमि की रम्य धरा पर सतत् गो माता की रक्षा के लिए कृपा व दयापूर्ण हृदय से हमें प्रेरणा प्रदान करने वाले श्रीनिम्बार्क प्रभु का हम सदा भाव से स्मरण करते हैं।

(४९)

सुन्दर तुलसी की माला कण्ठ प्रदेश में धारण किए हुए, श्रीराधा कृष्ण युगल प्रिया प्रियतम के (मुख कमल) की आराधना में विराजमान

(५०)

वादिकुतर्कसन्दोहनिराकरण भास्करम् ।
निम्बार्काचार्यमाचार्यप्रवरं नौमि नित्यशः ।।

(५१)

भवाटवीमहाव्याधिशमने कुशलं परम् ।
आद्याचार्यञ्च निम्बार्कं वचसा मनसा भजे ।।

(५२)

सर्वदाऽऽराधनाशीलं सर्वशान्ति प्रदायकम् ।
सर्वशरण्यमाचार्यं भजे सर्वार्थदं मुदा ।।

(५३)

भक्तव्यामोहसंघात-वारणे परमं पटुम् ।
श्रीमन्निम्बार्कदेवञ्च स्मरामि स्वीय चेतसि ।।

(५४)

वरेण्यं धीरवृन्देषु प्रमुखं सज्जनेषु तम् ।
सर्वेश्वरकृपालिप्सुं निम्बार्कमभिवादये ।।

(५५)

गीर्वाणवाक्प्रचारार्थं व्यदधाच्छास्त्रपुञ्जकम् ।
वन्दे निम्बार्कदेवं तं सुदर्शनस्वरूपकम् ।।

(५६)

निम्बपत्रनवक्काथाऽऽहारैकजीवनं त्वहो ।
निम्बदिवाकरं नौमि निम्बग्रामनिवासिनम् ।।

श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में ध्यान करते हैं।

(५०)

श्रीनिम्बार्क सिद्धान्त की सनातन धर्मान्तर्गत वादि विविध विद्या विद्योतितान्तःकरण विद्वानों के कुतर्कों का खण्डन कर उनकी शंका प्रशंकाओं का निवारण करने वाले, हमारे आद्याचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम नित्य प्रणाम करते है।

(५१)

इस संसार के माया-मोह की चारु चमत्कृत कान्ति से अन्धकार रूपी महाव्याधि का शमन कर हमारे जीवन की सम्पूर्ण व्याधि कष्टों को दूर कर जीवन को प्रकाशित व सुखमय बनाने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम मन से वाणी से नाम स्मरण करते हैं।

(५२)

सदा श्रीयुगल चरणारविन्द की आराधना में सदा अनुरक्त, हमें शान्ति व धर्म, अर्थ, काम, मोक्षादि चारों पुरुषार्थों की सिद्धि प्रदान करने वाले आद्याचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम शरणागत भाव से नाम स्मरण करते हैं।

(५३)

इस संसार की चकाचौंध रूपी व्यामोह से पीड़ित भगवद्‌भक्तों के समस्त कष्टों का निवारण करने में परम कुशल श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम अपने चित्त में स्मरण करते हैं।

(५५)

देववाणी संस्कृत भाषा के विपुल प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न शास्त्रों की रचना करने वाले सुदर्शन चक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम वन्दना करते हैं।

(५६)

नवीन निम्ब पत्र के रस क्काथ का सेवन करने वाले व श्रीगिरिराज गोवर्धन की तलहटी में स्थित श्रीनिम्बग्राम में निवास करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(५७)

भक्ता निम्बार्कनामानि प्रजपन्ति स्वकान्तरे।
सौभाग्यशालिनस्तेस्यु-र्युग्मभक्तिस्तु जायते ।।

(५८)

अधीत्य सर्वशास्त्राणि निम्बार्कदर्शन धिया।
ते श्रीहरिकृपाभाजो भवेयु नैंव संशयः ।।

(५९)

श्रीनिम्बार्कतपोभूमिमालोक्य मुदिता जनाः।
निम्बार्कस्थजयोऽस्त्वत्र ते नृत्यन्ति निगदन्ति च ।।

(६०)

निम्बग्रामाश्रमे चारु सुदर्शन सरोवरः।
कच्छप-मत्स्यशोभाप्तो द्रष्टव्योऽस्ति सुपावनः।

(६१)

यत्र सरोवरेनेकेनानाविधमनोहराः।
विहङ्गमा विचित्राश्च सन्ति जलचरा वराः ।।

(६२)

सारिका-कोकिला-कीर-मयूरैरभिगुञ्जितम्।
सुदर्शनसरो दिव्यं गो-मृग-मर्कटाश्रयम् ।।

(६३)

अतीववरणीयश्च निर्मलनीरपूरितः ।।
पङ्कजैर्मधुपै रम्यो रोचतेऽयं सरोवरः ।।

(५७)

जो भक्त भक्ति भाव से अपने हृदय में श्रीनिम्बार्क भगवान् का नाम जप करते हैं उनके अन्तर्हृदय में युगल चरणारविन्द की भक्ति व आयु कीर्ति यशो बल आदि सम्पूर्ण ऐश्वर्य को प्राप्त करने वाले होते हैं।

(५८)

जो सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर बुद्धि पूर्वक चित्त से श्रीनिम्बार्क दर्शन के दार्शनिक सिद्धान्तों का सम्यक्तया अध्ययन करता है वह श्रीसर्वेश्वर प्रभु की असीम कृपा का निश्चय ही (भाजन) पात्र होता है इसमें किसी भी प्रकार का कोई संशय नहीं है।

(५९)

श्रीनिम्बग्राम में स्थित श्रीनिम्बार्क तपःस्थली के दर्शन कर भगवज्जन वहाँ आनन्दित व भाव विभोर होकर नाचने व गाने लगते हैं। ऐसी श्रीनिम्बार्क तपःस्थली की जय हो।

(६०)

कच्छप-मत्स्य आदि से युक्त निम्बग्राम में स्थित पवित्र सुदर्शन सरोवर अत्यन्त दर्शनीय है।

(६१)

जहाँ श्रीसुदर्शन सरोवर में विभिन्न प्रकार के बड़े-बड़े कच्छप, मत्स्य आदि हमारे चित्त को आकर्षित करने वाले जलचर निवास करते हैं। उससे सरोवर की शोभा और भी दर्शनीय हो जाती है।

(६२)

जिस श्रीसुदर्शन सरोवर पर विभिन्न सारिका-कोकिल-कीर-मयूर आदि की केका वाणी से गुञ्जायमान एवं गो-मृग-मर्कट आदि के इधर-उधर विचरण करते हुए आनन्दित हो अठखेलियाँ करते हुए दिव्य सरोवर का आश्रय लेते हैं।

(६३)

निर्मल-स्वच्छ जल से परिपूरित श्रीसुदर्शन सरोवर में सुन्दर खिले हुए कमल के पुष्प एवं भ्रमर आदि की मधुर गुञ्जार से रमणीय सरोवर की शोभा अत्यन्त वर्णनीय हैं निश्चय ही यह हमारे चित्त को आकर्षित करने

(६४)

रसाल-निम्ब-जम्बूभि-र्लताद्रुमैश्च मञ्जुलः ।
सरोवरो मनोहारी सर्वदा सुखदायकः ।।

(६५)

व्रजे प्रसिद्धतीर्थश्च श्रीनिम्बार्कतपःस्थलम् ।
सम्प्रदायस्वशास्त्रेषु पूर्णतो वर्णितं हि तत् ।।

(६६)

यस्याऽऽचमनमात्रेण मार्जनेन महाफलम् ।
लभ्यते नितरां पूर्ण स प्रसिद्ध सरोवरः ।।

(६७)

कदम्बपुष्पगुच्छानां दिव्यसौरभपूरितः ।
आनन्दं लभते यत्रैतादृशस्तु सरोवरः ।।

(६८)

श्रीसुदर्शनकुण्डाऽम्बुमार्जनाऽऽचमनाद्धुतम् ।
नानाव्याधिनिरासश्च सौकर्येण प्रजायते ।।

(६९)

तत्रत्यमृत्प्रलिप्तेन कण्डूव्याधिः प्रशम्यति ।
हृदये परमाशान्तिः श्रीवृद्धिः सम्प्रजायते ।।

(७०)

व्रजवास्तव्यलोकैश्च रसिकै र्भावभावितैः ।
निम्बार्कदर्शनं नित्यं प्रातः सायं प्रलभ्यते ।।

वाला है।

(६४)

निम्ब, जामुन आदि विविध लता वृक्षावलियों से अतीव रमणीय व चित्त को आकर्षित करने वाला श्रीसुदर्शन सरोवर हमें सभी प्रकार के सुखों को प्रदान करने वाला है।

(६५)

व्रज प्रदेश के अन्तर्गत प्रसिद्ध तीर्थ ''श्रीनिम्बार्क तपःस्थली'' श्रीगोवर्धनजी की परिक्रमा मार्ग में स्थित है। इसका वर्णन सम्प्रदाय के शास्त्रों में पूर्णतः किया गया है।

(६६)

वहाँ शास्त्रोक्त प्रसिद्ध श्रीसुदर्शन सरोवर में आचमन मार्जन स्नानादि का विशेष फल है इसमें मार्जनादि से हमें धर्मार्थकाममोक्षादि की प्राप्ति होती है।

(६७)

कदम्ब के सुन्दर पुष्पस्तबक आदि की दिव्य सौरभ सुगन्धी से युक्त श्रीसुदर्शन सरोवर के दर्शन मात्र से हमें अनुपम आनन्द की प्राप्ति होती है।

(६८)

श्रीसुदर्शन सरोवर के जल से मार्जन आचमनादि से हमारे शरीर के विभिन्न रोगों का व मानसिक निराशाओं का त्वरित शमन होता है।

(६९)

श्रीसुदर्शन सरोवर की पावन मृत्तिका (मिट्टी) का लेपन अपने शरीर पर करने से शरीर के दाद-खाज-खुजली आदि महाभयंकर कण्डू रोगों का शमन होता है, जिससे हमें हृदय में परम शान्ति व श्रीवृद्धि होती है।

(७०)

व्रजक्षेत्र में निवास करने वाले श्रीयुगल चरणारविन्द की चरण रज पिपासु परम रसिक भावुक सहृदयों को श्रीनिम्बार्क भगवान् के नित्य प्रातः व सायं दर्शन प्राप्त होते हैं।

(७१)

सतां हि तत्र बाहुल्यं तेषां सङ्गस्तु लाभदः ।
श्रीहरि कीर्तनं तैश्च क्रियते शोभनं परम् ।।

(७२)

भगवत्सेवया तुष्टाः सन्ति सन्तश्च ते वराः ।
राधाकृष्णपराभक्तिपरिपूर्णाः तपः स्थले ।।

(७३)

वस्तुतो भूरिभाग्यास्ते वरेण्याः शास्त्रकोविदाः ।
स्वाध्यायं श्रुतिशास्त्राणां कुर्वन्ति प्रत्यहं प्रियम् ।।

(७४)

निम्बार्कदर्शनं भक्त्या पठन्ति निष्ठया सदा ।
निम्बार्कस्तोत्रपाठञ्च विदधति विपश्चिताः ।।

(७५)

सूत्र-गीता-श्रुतीनाञ्च स्वाध्यायस्तत्र जायते ।
धीरैः सद्भिः सुछात्रैश्च दैन्यभावसमन्वितैः ।।

(७६)

लभते परमानन्दं ते समागतदर्शकाः ।
निम्बार्कदर्शनं कृत्वा प्रफुल्लतनमानसाः ।।

(७७)

प्रणमन्ति प्रभाते च प्रत्यहं प्रीतिपूरिताः ।
साष्टाङ्गपूर्वकं नित्यं वैष्णवाः साधुसत्तमाः ।।

(७८)

सदाचारसुशीलाश्च प्रभुसेवातिसक्षमाः ।
विनीता वैष्णवाश्चारु भजन्ति निम्बभास्करम् ।।

(७१)

श्रीनिम्बार्क तपःस्थली में नित्य श्रीयुगल प्रियालाल के नाम का संकीर्तन करने वाले रसिक साधु सज्जनों का संग हमें सभी प्रकार के सुखों को प्रदान करने वाला है।

(७२)

सहृदय रसिक भावुक जन श्रीनिम्बार्क तपःस्थली का आश्रय लेकर युगलविहारी श्यामाश्याम की पराभक्ति पूर्ण उपासना व श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा से अपने हृदय में अलौकिक आनन्द का अनुभव करते हैं।

(७३)

श्रीनिम्बार्क तपःस्थली के आश्रय में रहकर विभिन्न वेदादि शास्त्रों के ज्ञाता परम विद्वद्वृन्द वहाँ वेदादि शास्त्रों का सदैव स्वाध्याय कर अपने आपको सौभाग्यशाली मानते हैं।

(७४)

श्रीनिम्बार्क तपःस्थली में रहकर श्रीनिम्बार्क दर्शन का भक्तिपूर्ण भाव निष्ठा पूर्वक स्वाध्याय चिन्तन मनन व श्रीनिम्बार्क भगवान् के स्तोत्रों का पाठ सांसारिक माया मोह बन्धनों से मुक्त कर हृदय में परम शान्ति व वैराग्य प्रदान करने वाला है।

(७५)

आश्वलायन, बार्हस्पत्य, पारस्कर आदि सूत्र ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता व वेदादि शास्त्रों का श्रीनिम्बार्क तपःस्थली में दैन्य भाव से पूर्ण ब्राह्मण वटुकों के द्वारा नित्य स्वाध्याय किया जाता है।

(७६)

श्रीनिम्बार्क तपःस्थली में आकर हर्षित मन सहृदय भावुक भक्तजन श्रीनिम्बार्क भगवान् के दर्शन कर परमानन्द का अनुभव करते हैं।

(७७)

नित्य वैष्णव साधु भक्तजन श्रीनिम्बार्क भगवान् के चरणों में प्रीति पूर्ण शरणागत भाव से साष्टांग प्रणाम करते हैं।

(७८)

सदाचार व सरल स्वभाव वाले भावुकजन श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा

(७९)

ईदृशीं कियतीं शोभां तामालोक्य सविस्मयम् ।
प्राप्नुवन्ति महाश्चर्षं भक्तिरसपिपासवः ।।

(८०)

नृत्यन्त्यमरगन्धर्वाः प्रगायन्ति मुहुर्मुहुः ।
निम्बार्कदिव्यनामानि तं निम्बार्कं समाश्रये ।।

(८१)

सर्वेश्वरं निजग्रीवामवधार्य च सर्वदा ।
येन वैष्णवता सम्यक्प्रचारिता तमहं भजे ।।

(८२)

दीनान्विलोक्य संतापं निम्बार्को विदधाति यः ।
सोऽप्वाद्याचार्यवर्यो हि तत्तापं हरति द्रुतम् ।।

(८३)

एतादृशं कृपाधाम दीनवत्सलरूपिणम् ।
श्रीनिम्बार्कं हृदा वन्दे करुणार्णवविग्रहम् ।।

(८४)

रसिकभक्तचित्तेषु शोभितं मञ्जुविग्रहम् ।
कमनीयं कलाधाम श्रीनिम्बार्कं नमामि तम् ।।

(८५)

श्रीतुलस्याऽर्चनायाञ्च ध्यानस्थं निम्बभास्करम् ।
स्वीयदिव्याश्रमे रम्ये प्रणमाम्यभिराजितम् ।।

(८६)

विरक्तवैष्णवैः सद्भिरर्चितं श्रद्धयान्वितैः ।
आराधयामि निम्बार्कं हरेरायुधरूपिणम् ।।

में निपुण (परायण) श्रीनिम्बार्क भगवान् का विनीत भाव से भजन करते हैं।

(७९)

श्रीयुगल चरणारविन्द की भक्ति रस पिपासु भगवद्जनों युक्त श्रीनिम्बार्क तपःस्थली की इस दिव्य अलौकिक शोभा के दर्शन कर समागत भगवद्जन महान् आश्चर्य को प्राप्त होते हैं।

(८०)

श्रीनिम्बार्क भगवान् के दिव्य नामों का संकीर्तन गान करते हुए देववृन्द गन्धर्वादि श्रीनिम्बार्क भगवान् के सान्निध्य में नाचने व गाने लगते हैं।

(८१)

श्रीनिम्बार्क भगवान् अपने कण्ठ प्रदेश में श्रीसर्वेश्वर प्रभु को धारण कर वैष्णव सनातन धर्म का प्रचार करते हैं। ऐसे श्रीनिम्बार्क प्रभु का हम भजन करते हैं।

(८२)

श्रीनिम्बार्क भगवान् दीन दुःखियों को देखकर उनके कष्टों का सन्तापों का शीघ्र शमन करते हैं ऐसे आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम हमारे हृदय में धारण करते हैं।

(८३)

करुणा के समुद्र दीनों पर कृपा करने वाले कृपा के धाम स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम हृदय से प्रणाम करते हैं।

(८४)

रसिक भावुकजनों के हृदय में कला के धाम कमनीय शोभा वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् सुन्दर विग्रह स्वरूप में शोभित होते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(८५)

अपने रमणीय आश्रम में श्रीयुगल चरणारविन्द की तुलसी अर्चना करते हुए ध्यान मग्न विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(८६)

विरक्त वैष्णव जनों के द्वारा श्रद्धा भाव पूर्वक समर्चित श्रीकृष्ण के

(८७)

सेव्यमानं प्रपन्नैश्च गीयमानं गुणीजनैः ।
शोभमानं व्रजे धाम्नि श्रीनिम्बार्कञ्च सम्भजे ।।

(८८)

नौमि शास्त्रोपदेशञ्च भक्तितत्त्वनिरूपणम् ।
कीर्तनं श्रीहरेर्दिव्यं कुर्वन्तं निम्बभास्करम् ।।

(८९)

वटुकैरिह शृण्वन्तु स्वकीयशुभसन्निधौ ।
मधुरं वेदघोषं तं वन्दे निम्बदिवाकरम् ।।

(९०)

सद्भिरर्पितपुष्पाणां मञ्जुलमाल्यशोभितम् ।
यमुनाम्बुसमासीनं निम्बार्कं नितरां भजे ।।

(९१)

मेघवर्षणकाले च विद्युत्प्रभाप्रकाशिते ।
निकुञ्जाङ्गणतिष्ठन्तं निम्बार्कं प्रभजाम्यहम् ।।

(९२)

ऋषि-मुनीन्द्र-योगीनामाश्रमयुपविश्य च ।
उपदिशन्तमाचार्यं श्रीनिम्बार्कं भजेऽनिशम् ।।

(९३)

गोरक्षायै सदा तासां सेवायै समयोऽर्पितः ।
यस्तं निरालयं वन्दे श्रीमन्निम्बार्कदेशिकम् ।।

आयुध श्रीसुदर्शन चक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम आराधना करते हैं।

(८७)

प्रपन्न शरणागतजनों के द्वारा समर्चित एवं गुणीजनों के द्वारा जिन श्रीनिम्बार्क भगवान् के दिव्य नामों का गुणगान किया जाता है ऐसे व्रजक्षेत्र श्रीधाम में विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(८८)

श्रीयुगल प्रिया प्रियतम की पराभक्ति तत्त्व का विवेचन के साथ शास्त्रोक्त दिव्य उपदेश प्रदान करने वाले व श्रीहरि के दिव्य नामों का संकीर्तन करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(८९)

श्रीनिम्बार्क भगवान् की पावन सन्निधि में ब्राह्मण वटुकों के द्वारा मधुर वेद वाणी का दिव्य घोष सुनने लायक हैं। ऐसे दिव्य आश्रम में विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(९०)

सुन्दर पुष्पों की माला धारण किए हुए श्रीयमुनाजी के जल में विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम नाम स्मरण (भजन) करते हैं।

(९१)

मेघ मालाओं से आच्छादित वर्षाकाल में विद्युत् प्रभा के दिव्य प्रकाश से प्रकाशित श्रीनिम्बार्क तपःस्थली की दिव्य लता पादापाच्छादित निकुञ्ज में विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(९२)

ऋषि, मुनीन्द्र, योगीन्द्र के आश्रम में विराजे उपदेश करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम निरन्तर भजन करते हैं।

(९३)

सदा गो माता की रक्षा के लिए एवं गोमाता की सेवा में जिनका समय व जीवन समर्पित था ऐसे निरालय निकुञ्ज में निवास करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(६४)

वेदादिशास्त्रसिद्धान्त सारतत्त्वविवेचकम् ।
धाम-तीर्थसुरक्षायै रतं निम्बार्कमाश्रये ।।

(६५)

समस्ताऽऽगमगूढार्थसारोपदेशसम्प्रदम् ।
सुदर्शनायुधं देवं निम्बार्कमभिवादये ।।

(६६)

प्राणीमात्रहितार्थञ्च पूर्णतस्तत्परो भुवि ।
युग्माऽभिलाषिणं नित्यं तं निम्बार्कं मुदाऽऽश्रये ।।

(६७)

तथ्यातथ्यं समालोच्य निष्कर्षमभिभाषते ।
तं श्रीनिम्बार्कमाराध्यं चक्ररूपं भजाम्यहम् ।।

(६८)

निम्बार्कसम्प्रदायस्य श्रौतसनातनस्य च ।
धर्मस्य सम्प्रचारार्थं निम्बार्कं निरतं भजे ।।

(६९)

नास्तिकानां महादर्पखण्डने कुशलं परम् ।
पावनरूपशोभाङ्गं श्रीनिम्बार्कं प्रणौम्यहम् ।।

(१००)

श्रुति-तन्त्र-पुराणादि - सारतत्त्वप्रदायकम् ।
शान्ति-सुखप्रसारे च लग्नं निम्बार्कमाश्रये ।।

(१०१)

अशेषशास्त्रसारञ्च समालोड्य विचार्य वै ।
चकार कामधेनुं तं श्रीनिम्बार्कं प्रभजे सदा ।।

(६४)

श्रीभगवद् धाम व हमारे पवित्र तीर्थों की गरिमा व पवित्रता आदि की रक्षा में सदैव तत्पर रहने वाले वेदादि शास्त्र सिद्धान्तों के सारभूत तत्वों पर विवेचन करने वाले श्रीनिम्बार्क प्रभु की हम शरण लेते हैं।

(६५)

समस्त हमारे आगम वेदादि शास्त्रों के गूढ अर्थों पर सारभूत उपदेश प्रदान करने वाले श्रीसुदर्शन चक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(६६)

प्राणीमात्र के रक्षा हेतु पूर्ण रूप से समर्पित, श्रीयुगलकिशोर श्यामा-श्याम की अपने हृदय में अभिलाषा रखने वाले प्रसन्न मुद्रा में विराजे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम आश्रय लेते है।

(६७)

सदैव सद्शास्त्राऽनुसार तथ्यातथ्य का समालोचना पूर्वक निःस्वार्थ अभिभाषण करने वाले हमारे आराध्य देव श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम नाम स्मरण करते हैं।

(६८)

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के वैदिक सनातन धर्म के प्रचार प्रसार में संलग्न श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(६९)

नास्तिक मूढ जनों के मिथ्या अभिमान का खण्डन करने में परम कुशल सर्वाङ्ग सुन्दर स्वरूप वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१००)

वेदादि शास्त्र-तन्त्र पुराणादि के सारतत्त्व को हमें प्रदान करने वाले एवं सभी की शान्ति एवं सुख व आरोग्य आनन्द में संलग्न श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम आश्रय लेते हैं।

(१०१)

सम्पूर्ण वेदादि शास्त्रों का आलोडन कर विचार पूर्वक सारभूत

(१०२)

निम्बार्करूपमाधुर्यं संवीक्ष्य चकिताः जनाः ।
पौनः पुन्येन सश्रद्धमायान्ति तस्य सन्निधौ ।।

(१०३)

सदक्षिणा जनाः सर्वे निम्बार्कदर्शनाय च ।
समायान्ति महोत्फुल्लास्तं निम्बार्कमहं भजे ।।

(१०४)

गीतावाक्यार्थभाष्यस्य कर्तारं श्रीहरिप्रियम् ।
आद्याचार्यञ्च निम्बार्कं नमामि शिरसा गिरा ।।

(१०५)

श्रीमन्निम्बार्करूपस्य श्रीहरिपार्षदस्य वै ।
दर्शका दर्शनार्थञ्च समागच्छन्ति भावुकाः ।।

(१०६)

सर्वदर्शनशास्त्रस्य विज्ञाता वेदमन्त्रवित् ।
जयतिपरमाऽऽचार्यः श्रीनिम्बार्कः कृपानिधिः ।।

(१०७)

प्राप्नोति युगलानन्दं व्रजधाम्नि रसावहम् ।
रासलीलाविलासे यस्तं निम्बार्कं नमाम्यहम् ।।

(१०८)

समस्ततीर्थयात्रासु चकार भ्रमणं शुभम् ।

अमृत तत्त्व ''श्रीवेदान्त कामधेनु दशश्लोकी'' की रचना करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम सदैव भजन करते हैं।

(१०२)

श्रीनिम्बार्क भगवान् की रूप माधुर्यता को देखकर भावुक भक्तजन आश्चर्यान्वित श्रद्धा पूर्वक बारम्बार श्रीनिम्बार्क भगवान् की शरण में आते हैं।

(१०३)

अपने हृदय में श्रद्धा पुष्प सदक्षिणा लिए भावुक भक्तजन हर्षित आनन्दित मन श्रीनिम्बार्क भगवान् के दर्शनों के लिए श्रीनिम्बार्क तपःस्थली में आते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(१०४)

श्रीमद्भागवद्गीता के वाक्यार्थों पर भाष्य करने वाले श्रीहरि के प्रिय आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम वाणी से साष्टाङ्ग प्रणाम करते हैं।

(१०५)

श्रीआनन्दकन्द नन्दनन्दन श्रीहरि के नित्य सेवा में रहने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की रूप माधुर्यता के दर्शन के लिए भावुक भक्तजन सोत्कण्ठित श्रीनिम्बार्क तपःस्थली में पधारते हैं।

(१०६)

सर्व वेदान्तादि षड्दर्शन व वैदिक मन्त्रों के ज्ञाता कृपा के कोष परमाराध्य श्रीआचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१०७)

श्रीव्रजवृन्दावन धाम में श्रीयुगलकिशोर श्यामाश्याम की रासलीला की परमानन्दरूपी रस सरिता में अवगाहन पूर्वक श्रीयुगल प्रिया प्रियतम के दर्शनों का आनन्द लेते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१०८)

इस भारतभूमि पर स्थित समस्त पवित्र तीर्थों की विविध विद्या विद्योतितान्तःकरण विद्वानों व सहृदय सज्जन, सन्त भावुक भक्तजनों के साथ दिव्य यात्रा करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

विद्वद्भिः साधुभिः साकं तं निम्बार्कमहं भजे ।।

(१०९)

तीर्थस्वरूपरक्षायै विहितो येन भूरिशः ।
तं निम्बार्कमहं वन्दे मनसा वचसा धिया ।।

(११०)

वेदोक्तधर्मकामार्थं कृतयत्नस्तु शोभनः ।
तं निम्बार्कमहं वन्दे मनसा वचसा धिया ।।

(१११)

परीक्षितराज्यकाले यः प्रचारं व्यदधात्सुधीः ।
वैष्णवधर्मरूपस्य तं निम्बार्कं सदा भजे ।।

११२)

पावनं चरितं दिव्यं सर्वलोकहितावहम् ।
श्रीमन्निम्बार्करूपस्य श्रेयस्करं विलक्षणम् ।।

(११३)

विलक्षणं रूपं मेघश्यामं मनोहरम् ।
सर्वोपकारकं शान्तं तं निम्बार्कं हृदाश्रये ।।

(११४)

स्तवनीयं वरेण्यञ्च समीप्सितवरप्रदम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं भावये योगिनां वरम् ।।

(११५)

पुष्करे दिव्यतीर्थे च हंसावतारसंस्थले ।

(१०६)

हमारे पवित्र तीर्थों की पवित्रता एवं उनकी गरिमा की रक्षा के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा जो सतत् संलग्न रहते हैं। ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(११०)

जिन्होंने वैदिक सनातन धर्म की मनसा, वाचा, कर्मणा व अपनी प्रखर बुद्धि कौशल के द्वारा रक्षा व अभ्युदय के लिए शोभनीय प्रयत्न किए हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम मन-वाणी से प्रणाम करते हैं।

(१११)

राजा परीक्षितजी के राज्यकाल से ही अपने प्रखर वैदुष्य व बुद्धि कौशल के द्वारा वैष्णव सनातन धर्म का जिन्होंने विपुल प्रचार किया, ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम सदा नाम स्मरण करते हैं।

(११२)

श्रीनिम्बार्क भगवान् का पावन चरित्र हमें सकल संसार के सब प्रकार के विलक्षण सुखों के साथ धर्मार्थकाममोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ की दिव्य सिद्धि प्रदान करने वाला है।

(११३)

विलक्षण सौन्दर्य लावण्य कारुण्यादि की प्रतिमूर्ति मेघ के समान सुन्दर अंग कान्ति वाले सभी का उपकार करने में सक्षम, शान्त स्वरूप वाले चित्ताकर्षक मनोहारी सौन्दर्य के सागर श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम शरण लेते हैं।

(११४)

बड़े-बड़े परम योगी! ऋषि-मुनीश्वरों के द्वारा जिनकी स्तुति, जिनके गुणों का विविध प्रकार वर्णन किया, ऐसे स्तवनीय एवं वरेण्य हमारे मन इच्छित वर प्रदान करने वाले हमारे आराध्य देव श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में स्मरण करते हैं।

(११५)

श्रीहंस भगवान् की प्राकट्य स्थली दिव्य तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज में विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम प्रसन्न चित्त नाम स्मरण करते हैं।

यत्र च संस्थितं येन तं निम्बार्कं मुदा भजे ।।

(११६)

सर्वेश्वरार्चने दक्षं शोभितं दिव्यविग्रहम् ।
निम्बार्कं परमाचार्यं प्रणमामि पुनः पुनः ।।

(११७)

महामुनीन्द्ररूपञ्च पावनं परमप्रियम् ।
राधाकृष्णपदाम्भोजभृङ्गं निम्बार्कमाश्रये ।।

(११८)

परीक्षिद्राज्यकाले च जजान निम्बभास्करः ।
अरुणाश्रमभूभागे गोदावरीतटस्थिते ।।

(११९)

रसाल-निम्ब-जम्बीर-कदम्ब-पादपादिभिः ।
रम्येऽरुणाश्रमे पुण्ये भाति निम्बदिवाकरः ।।

(१२०)

यत्राश्रमे लतापुष्प-दिव्य सौरभहर्षितः ।।
श्रीनिम्बार्कःश्रुतिज्ञोऽस्ति शास्त्रतत्त्वविदो महान् ।।

(१२१)

आश्रमस्थैर्मृगैर्गोभिः शशकैर्नकुलादिकैः ।
परितः संवृतं तत्र निम्बादित्यं भजे हृदा ।।

(१२२)

कोकिल-कीर-केकालिगुञ्जितः शुभ आश्रमः ।
मर्कटैश्च मनोहारी दर्शनीयोऽस्ति विश्रुतः ।।

(११६)

श्रीसर्वेश्वर प्रभु के दिव्य विग्रह के समर्चन में ज़ो दक्ष है सर्वतोभावेन समर्पित हैं ऐसे परम शोभायमान हमारे आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम पुनः पुनः प्रणाम करते हैं।

(११७)

श्रीराधाकृष्ण के युगल चरणारविन्द के भक्ति रूपी मकरन्द रस का पान करने वाले भ्रमर रूप महामुनीन्द्र हमारे परम प्रिय आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम शरण लेते हैं।

(११८)

राजा परीक्षित के राज्यकाल में ही इस भूतल पर श्रीगोदावरी महानदी के पावन सुरमणीय तट पर स्थित श्रीअरुण ऋषि के आश्रम में शोभायमान श्रीनिम्बार्क भगवान् का प्राकट्य हुआ।

(११९)

सुन्दर आम्र-निम्ब-जामुन, कदम्ब आदि वृक्षावलियों लता पादापाच्छादित अत्यन्त रमणीय श्रीअरुण ऋषि के आश्रम में श्रीनिम्बार्क भगवान् परम शोभित होते हैं।

(१२०)

प्रफुल्लित पुष्पित पल्लवित लता द्रुमादि की दिव्य सौरभ से आनन्दित, श्रुति शास्त्रों के तत्व को जानने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् अपने आश्रम में परम शोभायमान है।

(१२१)

मृग, गोवृन्द, खरगोश, नेवला आदि विभिन्न विपरीत प्रकृति वाले वन्य जीव भी वहाँ एक साथ आश्रम में चारों ओर प्रेम पूर्वक विचरण करते हैं ऐसे रमणीय आश्रम में विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय से नाम स्मरण करते हैं।

(१२२)

कोयल, कीर, मयूर, भ्रमर आदि की मधुर ध्वनि से गुञ्जायमान एवं बन्दरों की अठखेलियों से मनोहारी परम पवित्र विख्यात अरुणाश्रम अत्यन्त दर्शनीय है।

(१२३)

प्रपातैर्निर्झरै रम्यः कुञ्जरै रतिमोहकः ।
वटूनां वेदघोषैश्च रसं वर्षति पावनम् ।।

(१२४)

ऋषिमुनीन्द्रवृन्दानामध्यात्मचर्चया प्रियः ।
अरुणाश्रम आदर्शः सात्विकभावसम्प्रदः ।।

(१२५)

विहरन्ति सुरा यत्र पठन्ति ब्रह्मचारिणः ।
विचरन्ति खगा व्योमेऽधीयते निगमं बुधाः ।।

(१२६)

गुञ्जन्तिमधुपाः प्रातः सरसिपङ्कजस्थिताः ।
एवंविधो महारम्योऽरुणाश्रमोऽतिपावनः ।।

(१२७)

आयान्तिदर्शकास्तत्र रसिका भावनिष्ठया ।
महर्षिप्रवरोनित्यं करोति सत्कथां हरेः ।।

(१२८)

देवैः सम्प्रार्थितः कृष्णः सर्वेश्वर-परात्परः ।
आदिष्टवान्कृपाधाम श्रीसुदर्शनपार्षदम् ।।

(१२९)

त्वरितं याहि भूलोके दक्षिणाञ्चलसंस्थले ।
वैष्णवाचार्यरूपेणाऽवतारमवधारय ।।

(१२३)

झरनों आदि के प्रपात से अति रमणीय, गज यूथ के द्वारा अति मनमोहक श्रीअरुणाश्रम में ब्राह्मण वटुओं के द्वारा उत्तम वेद घोष रूप दिव्य रसामृत का वर्षण होता है।

(१२४)

ऋषि मुनीश्वरों के साथ आध्यात्मिक चर्चा के प्रिय, हमें सत्व गुण सम्पन्न भाव प्रदान करने वाले आदर्श श्रीनिम्बार्क भगवान् दिव्य आश्रम में शोभायमान है।

(१२५)

जहाँ अरुणाश्रम में देववृन्द विचरण करते हैं ब्रह्मचारी वटुक वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करते हैं तथा पक्षि समूह निर्भय होकर आकाश में विचरण करते हैं ऐसे परम पावन आश्रम का वर्णन विद्वानों वुधजनों के द्वारा किया गया है।

(१२६)

जहाँ पर प्रातः सुन्दर सरोवर में विकसित कमल पुष्पों पर स्थित हो भ्रमर समूह मधुर गुञ्जार करते हैं ऐसा परम रमणीय पावनतम श्रीअरुणाश्रम अत्यन्त शोभनीय है।

(१२७)

श्रीअरुणाश्रम में भगवद्चरणानुरागी परम रसिक भावुक भक्तजन व दर्शक पधारते हैं एवं ऋषि-मुनि-महर्षियों के द्वारा वहाँ नित्य परब्रह्म परमात्मा की कथा की जाती है।

(१२८)

देववृन्द के द्वारा प्रार्थना करने पर परब्रह्म परात्पर भगवान् सर्वेश्वर श्रीकृष्ण ने अपनी सेवा में संलग्न निजी पार्षद कृपा के धाम श्रीसुदर्शन चक्रराज को श्रीनिम्बार्क भगवान् के स्वरूप में भूतल पर अवतरित होने का आदेश प्रदान किया।

(१२९)

श्रीहरि से आदिष्ट हो श्रीसुदर्शन चक्रराज इस भूलोक पर आकर दक्षिण अञ्चल में पावन सलिला गोदावरी के तट पर मूंगी ग्राम में श्रीवैष्णवा—

(१३०)

हरेराज्ञां शिरोधार्य्याजगाम भुवि भारते ।
गोदावरीतटे पुण्ये मुहूर्ते पावने शुभे ।।

(१३१)

अवततारासूर्यास्ते कार्तिके शुक्लशोभने ।
पूर्णिमायां तिथौ सायं गोधूलिसमये स्वयम् ।।

(१३२)

अरुणस्याश्रमे पुण्ये जयन्तीपावने गृहे ।
नियमानन्द इत्याख्य आविरासीत् सुमङ्गलः ।।

(१३३)

पुष्पवृष्टिं सुराः सर्वे चक्रु हर्षितमानसाः ।
गन्धर्वाः किन्नराः प्रोचु-र्जयजयेति सस्वरम् ।।

(१३४)

ब्राह्मणा वेदमन्त्रज्ञा वेदघोषञ्च सस्वरम् ।
तारस्वरेण व्यदधु महनीयाऽरुणाश्रमे ।।

(१३५)

नृत्यन्ति चारु नर्तक्यः सूत-मागध-वन्दिनः ।
गायन्ति विविधै र्वाद्यैररुणाश्रममन्दिरे ।।

(१३६)

वटवः पटवः सर्वे प्रफुल्लितसुमानसाः ।
पठन्ति वेद मन्त्राँश्च लभन्तेपरमं सुखम् ।।

(१३७)

इतस्ततोऽपि गोवत्सा धावन्तो हर्षिताननाः ।
निम्बार्कं परितः सर्वे समायान्ति पुनः पुनः ।।

चार्य के रूप में अवतार धारण किया।

(१३०)

श्रीहरि की आज्ञा को शिरोधार्य कर श्रीसुदर्शन चक्रराज इस पवित्र भारतभूमि पर प्रवाहित श्रीमहानदी पतित पावनी श्रीगोदावरी के परम पवित्र तट पर शुभ मुहूर्त में अवतरित हुए।

(१३१)

श्रीनिम्बार्क भगवान् कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि में सूर्यास्त समय सायं गोधूली वेला के शुभ मुहूर्त में अवतरित हुए।

(१३२)

महर्षि अरुण मुनि के पवित्र आश्रम में एवं माता जयन्ती के परम पावन गृह में श्रीनियमानन्द नाम से सुविख्यात श्रीनिम्बार्क भगवान् का सुमङ्गल आविर्भाव हुआ।

(१३३)

चारों दिशाओं में आकाश मण्डल में सभी हर्षित प्रसन्नचित्त से श्रीनियमानन्दजी के जन्मोत्सव में पुष्पवृष्टि करने लगे एवं गन्धर्व, किन्नर उच्च स्वर से जय-जय की मधुर गूँज करते हैं।

(१३४)

वैदिक मन्त्रों को जानने वाले विप्रवृन्द द्वारा महान् श्रीअरुणाश्रम में उच्च स्वर से सस्वर वैदिक मन्त्रों का पाठ किया।

(१३५)

रमणीय श्रीअरुणाश्रम में चारों ओर नृत्याङ्गनाए नृत्य करने लगी सूत, चारण एवं सुन्दर स्तुति गान करने वाले वन्दिगण श्रीनियमानन्दजी के जन्म की विविध वाद्य यन्त्रों के द्वारा बधाई गान करते हैं।

(१३६)

सभी कुशल कुशाग्र बुद्धि वाले विप्र वटुक समुदाय आनन्द चित्त से वैदिक मन्त्रों का पाठ करते है। उसे सुनकर हमें परम सुख की प्राप्ति होती है।

(१३७)

गोमाता के सुन्दर छोटे-छोटे बछड़े दौड़ते हुए हर्षित मन से इधर-उधर बारम्बार सभी श्रीनिम्बार्क भगवान् के चारों ओर आ जाते हैं।

(१३८)

ऋषि-मुनीन्द्र-योगीन्द्राः सन्तो वैष्णवसत्तमाः ।
नेमुस्ते मनसा वाचा निम्बार्कचरणाम्बुजम् ।।

(१३९)

अद्यत्वेऽपि ही ये लोकाः स्मरन्ति निम्बभास्करम् ।
निश्चप्रचं लभन्ते ते सुखमक्षयपावनम् ।।

(१४०)

निम्बग्रामे व्रजे नौमि श्रीगोवर्धनसन्निधौ ।
निर्मलवारिशोभाऽऽढ्यं सुदर्शनसरोवरम् ।।

(१४१)

निम्बद्रुमावलीरम्ये निम्बग्रामे विराजितम् ।
निम्बार्कं नौमि साष्टाङ्गं शास्त्रीयविधि पूर्वकम् ।।

(१४२)

श्रीनिम्बार्कं व्रजे रम्ये सच्चिन्मयेऽतिपावने ।
राधाकृष्णप्रभोर्धाम्नि वन्दे साष्टाङ्गकर्मणा ।।

(१४३)

कलिन्दजातटे नौमि रङ्गदेवीस्वरूपिणम् ।
निम्बार्कमायुधाकारं श्रीकृष्णकररञ्जितम् ।।

(१४४)

शान्तरूपं व्रजे कुञ्जे प्रव्रजन्तश्च सर्वदा ।
हरिभक्तिप्रचारार्थं श्रीनिम्बार्कं नमाम्यहम् ।।

(१३८)

बड़े-बड़े योगीन्द्र-मुनीन्द्र-ऋषि-तपस्वी-सन्त-वैष्णव भावुक सुहृद्जन मनसा-वाचा-कर्मणा श्रीनिम्बार्क भगवान् के चरणारविन्द में प्रणाम करते हैं।

(१३९)

आज भी जो लोक के भावुकजन श्रीनिम्बार्क भगवान् का स्मरण करते हैं वे निश्चय ही त्वरित कभी समाप्त न होने वाले परम पवित्र अक्षय सुखों को प्राप्त करते हैं।

(१४०)

श्रीव्रजक्षेत्र निम्बग्राम में श्रीगिरिराज गोवर्धन की पावन सन्निधि में निर्मल वारि (जल) की शोभा सम्पन्न श्रीसुदर्शन सरोवर को हम प्रणाम करते हैं।

(१४१)

निम्बद्रुमावली से अत्यन्त रमणीय निम्ब ग्राम में विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम शास्त्रीय विधि पूर्वक साष्टाङ्ग प्रणाम करते हैं।

(१४२)

श्रीव्रजक्षेत्र में अत्यन्त रमणीय पवित्रतम सच्चिन्मय स्वरूप श्रीराधाकृष्ण भगवान् के दिव्य श्रीवृन्दावन धाम में विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम कर्मणा साष्टाङ्ग प्रणाम करते हैं।

(१४३)

कलिन्द की पुत्री श्रीयमुनाजी के पावन तट पर दिव्य श्रीरङ्गदेवी के सखी स्वरूप में श्रीकृष्ण भगवान् का हस्त कमल की शोभाधायक दिव्य आयुध श्रीसुदर्शन चक्रावतार के रूप में श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१४४)

श्रीव्रजक्षेत्र की लता निकुञ्जों में विराजित श्रीराधाकृष्ण की युगल चरणारविन्द की पराऽपरा रुपिणी रसमयी भक्ति के प्रचारार्थ सदा इधर उधर परिभ्रमण करते हैं ऐसे शान्त स्वरूप वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१४५)

सत्सनातनधर्मस्य प्रचारे तत्परं भजे ।
वैष्णवाचार्यरूपेणाऽवतीर्णं निम्बभास्करम् ।।

(१४६)

वेदवेदान्तसूत्रादिभाष्यकारं भजे प्रियम् ।
सकलप्राणिमात्रस्य हिताय निम्बभास्करम् ।।

(१४७)

हरिभक्तिप्रदं लोके सर्वमङ्गलदायकम् ।
प्रपन्नैर्भावुकैर्वन्द्यं स्मरामि निम्बभास्करम् ।।

(१४८)

वैष्णवभक्तहेतोश्च सदुपदेशदं भुवि ।
वेदान्तसारसारज्ञं निम्बार्कं सततं भजे ।।

(१४९)

गीतावाक्यार्थकर्तारं गीताज्ञानप्रसारकम् ।
गीतोक्तभक्तिसारज्ञं श्रीनिम्बार्कं भजे प्रियम् ।।

(१५०)

सच्चिदानन्दपीयूषधारावगाहनक्षमम् ।
भजामि निम्बभानुञ्च निम्बग्रामे सुशोभितम् ।।

(१५१)

जगद्गुरुञ्च निम्बार्कं सूर्यज्योति प्रकाशकम् ।
निखिले भुवने पूज्यं वन्दे प्रणतिपूर्वकम् ।।

(१४५)

जो वैदिक सनातन धर्म के विपुल प्रचार में सदैव संलग्न रहने वाले वैष्णव आद्याचार्य के स्वरूप में अवतीर्ण हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम नाम स्मरण करते हैं।

(१४६)

वेद-वेदान्त-उपनिषद्-सूत्रादि शास्त्र सम्मत ''श्रीवेदान्त पारिजात सौरभ'' नामक भाष्य के प्रणेता हम सबके परम प्रिय सकल प्राणिमात्र के हित के लिए अवतार धारण करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(१४७)

इस संसार में श्रीयुगल प्रिया प्रियतम की रसमयी निकुञ्ज भक्ति प्रदान करने वाले हमें सभी मङ्गल प्रदान करने वाले शरणापन्न भावुक रसिकजनों के वन्दनीय श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम स्मरण करते हैं।

(१४८)

वैष्णव भक्तजनों के सर्वार्थ सिद्धि हेतु इस भारतभूमि पर दिव्य सुदुपदेश प्रदान करने वाले वेद वेदान्तादि शास्त्रों के सारभूत तत्व के ज्ञाता श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम सतत् नाम स्मरण करते हैं।

(१४९)

श्रीमद्भगवद्गीता पर गीता वाक्यार्थ के प्रणेता, गीता शास्त्र का प्रचार प्रसार करने वाले गीतोक्त भक्ति रसामृत के ज्ञाता हमारे प्रिय श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम नाम स्मरण करते हैं।

(१५०)

सत् चित् आनन्द स्वरूप परब्रह्म रसिकेश्वर की भक्ति रूपी अमृतमयी धारा में अवगाहन करने में समर्थ, श्रीनिम्बग्राम में परम सुशोभित श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम नाम स्मरण करते हैं।

(१५१)

निखिल इस भुवन मण्डल में सूर्य ज्योति सदृश दिव्य प्रकाश करने वाले जगद्गुरु पूज्यपाद आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को प्रणति पूर्वक हम प्रणाम करते हैं।

(१५२)

निम्बच्छाये समासीनं निम्बकुञ्जे विराजितम् ।
निम्बार्कं नित्यशः प्रातर्वन्दे तं श्रद्धयान्वितम् ।।

(१५३)

महर्षि सनकाद्यैर्यो देवर्षि नारदेन च ।
सेव्यं सर्वेश्वरं प्राप्य सेवते तं समाश्रये ।।

(१५४)

वेदान्तसाररूपा या कामधेनुसमा भुवि ।
दशश्लोकी कृता येन तं निम्बार्कं नमाम्यहम् ।।

(१५५)

समस्तविश्वलाभार्थं भक्तितत्त्वं प्रसारितम् ।
परमकरुणारूपं तं निम्बार्कं हृदा भजे ।।

(१५६)

भारतरम्यभूमौ च येन सम्पादिता शुभा ।
तीर्थयात्रा कृता पुण्या तं निम्बार्कं भजे सदा ।।

(१५७)

अशेषज्ञानविज्ञानविज्ञं निम्बार्कमाश्रये ।
राधाकृष्णपदाम्भोज पराभक्तिप्रपूरितम् ।।

(१५८)

यद्वचने च माधुर्यं लावण्यं पूर्णतः स्थितम् ।
एवमाचार्यवर्यं तं निम्बार्कं मनसा भजे ।।

(१५२)

श्रीनिम्बतरुच्छाया में निम्बलता पादपाच्छादित रमणीय निकुञ्ज में विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम नित्य प्रातःकाल श्रद्धा भाव पूर्वक प्रणाम करते हैं।

(१५३)

महर्षि सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार एवं देवर्षिप्रवर श्रीनारदजी द्वारा समर्चित श्रीसर्वेश्वर प्रभु की दिव्य विग्रह सेवा प्राप्त कर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में संलग्न श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम शरण लेते हैं।

(१५४)

श्रीभारतभूमि पर वेद वेदान्तादि के सार रूप हमारी सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली कामधेनु के समान ''श्रीवेदान्तकामधेनु दशश्लोकी'' (प्रणेता) की रचना जिनके द्वारा की गई ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१५५)

सकल विश्व के मङ्गल के लिए श्रीराधाकृष्ण की रसमयी निकुञ्ज भक्ति तत्व का प्रसार करने वाले करुणा स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय से नाम स्मरण करते हैं।

(१५६)

भारत की रमणीय धरा पर विभिन्न पवित्र तीर्थों की मङ्गलमय यात्रा जिनके द्वारा की गई ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम सदैव भजन करते हैं।

(१५७)

संसार के सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान को जानने वाले श्रीराधाकृष्ण के युगल चरणारविन्द की पराभक्ति रसामृत से पूर्ण श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम शरण लेते हैं।

(१५८)

जिनकी वाणी में माधुर्यता, लावण्यता पूर्ण रूप से विद्यमान है ऐसे हमारे आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम मन से नाम स्मरण करते हैं।

(१५९)

राधागोविन्दलीलायाश्चिन्तने परमं रतम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं स्मराम्यहं पुनः पुनः ।।

(१६०)

सदुपदेशसञ्चारे तत्परं सर्वथा मुदा ।
जनककल्याणहेतो स्तं निम्बार्कं प्रभजे मुदा ।।

(१६१)

श्रुति-सूत्र-स्मृतीनाञ्च प्रस्थानत्रयरूपिका ।
तस्याः सुभाष्यकारं श्री निम्बार्कं प्रभजाम्यहम् ।।

(१६२)

कदम्ब-कदली-जम्बू-निम्ब-वकुल कुञ्जगम् ।
महामुनीन्द्रनिम्बार्कं भजे भक्तैश्च भावितम् ।।

(१६३)

यदुपदेशसङ्गाच्च हरिभक्तिः प्रजायते ।
तमाद्याचार्यनिम्बार्कं भावये भक्तजीवनम् ।।

(१६४)

सर्वेश्वरार्चनायां यो वृन्दादलसमर्पणे ।
दत्तावधान आसीनस्तं नौमि निम्बभास्करम् ।।

(१६५)

शरण्यज्ञानदाने च निरतं श्रीकृपानिधिम् ।
पुराणज्ञानदातारं भजामि निम्बभास्करम् ।।

(१६६)

भक्तिः प्रसारिता येन जगत्यां जीवहेतवे ।
तं निम्बार्कं सदा वन्दे सर्वेश्वरार्चनाप्रियम् ।।

(१५९)

श्रीराधागोविन्द भगवान् की दिव्य रसमयी मधुर लीलाओं का सदैव चिन्तन करने वाले हमारे परमाराध्य आचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम बारम्बार स्मरण करते हैं।

(१६०)

जन कल्याण निमित्त सदैव प्रसन्न चित्त सदुपेदश करते हुए आनन्दित हृदय वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम नाम स्मरण करते हैं।

(१६१)

ऋग्वेदादि, पारस्कर, आश्वलायनादि सूत्र मनु स्मृत्यादि शास्त्र व श्रीमद्भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् रूपीणी (प्रस्थानत्रयी) सम्मत ''श्रीवेदान्त पारिजात सौरभ'' नामक भाष्य के प्रणेता श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम भजन करते हैं।

(१६२)

कदम्ब, केला, जामुन, निम्ब, वकुलादि विविध पादपाच्छादित निकुञ्ज वन में भक्तजनों के द्वारा जिनका सदैव हृदय में स्मरण किया जाता हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क महामुनीन्द्र प्रभु का हम भजन करते हैं।

(१६३)

जिनके सदुपदेश श्रवण से हृदय में श्रीयुगलराधाकृष्ण की भक्ति स्वतः स्फूर्त होती हैं ऐसे भक्तजनों के हृदय प्राण आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय में स्मरण करते हैं।

(१६४)

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अर्चना के लिए तुलसी दल समर्पण करते हुए ध्यान पूर्वक विराजे हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१६५)

शरणागत प्रपन्न भावुक भक्तजनों को दिव्य ज्ञान ज्योति व पुराणादि का दिव्य ज्ञान प्रदान करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम हृदय से भजन करते हैं।

(१६६)

इस सम्पूर्ण जगत् में जीव की सर्वविध सुख शान्ति हेतु श्रीयुगल

(१६७)

हरिभक्तिःस्थिरा यस्य स्वान्ते शुद्धे निरन्तरम्।
तं निम्बार्कं सदा नौमि बारम्बारं हृदा गिरा।।

(१६८)

देवर्षिनारदस्याऽग्र-शिष्यः परमसद्गुरुः।
श्रीनिवासस्य चान्येषां यस्तं वन्दे जगद्गुरुम्।।

(१६९)

विश्वस्मिन्वहवोलोका अध्यात्मरहिताः सदा।
तेभ्यो ददाति सद्भक्तिं तं निम्बार्कं समाश्रये।।

(१७०)

अनुपम हरे र्भक्तिरसवर्षा करोति यः।
तं निम्बार्कं बुधैः सेव्यं भावये निजमानसे।।

(१७१)

वृन्दावनधराकुञ्जे व्रजन्तं युग्मचिन्तकम्।
आद्याचार्यञ्च निम्बार्कं नौमि विनयपूर्वकम्।।

(१७२)

अध्यात्मज्ञानसारज्ञं वेदान्तबोधकं परम्।
परमाद्भुतमाचार्यं निम्बार्कं सततं भजे।।

प्रिया प्रियतम की भक्ति का प्रसार करने वाले श्रीसर्वेश्वर प्रभु की समर्चना के प्रिय श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१६७)

जिनके पवित्र अन्तर्हृदय में निरन्तर श्रीयुगल प्रिया प्रियतम की भक्ति निरन्तर नृत्य करती है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् को सदा हृदय से वाणी से हम बारम्बार प्रणाम करते हैं।

(१६८)

जो देवर्षिप्रवर श्रीनारदजी के अग्र सर्व प्रथम शिष्य के रूप में परम सद्गुरु श्रीनिम्बार्क भगवान् है। श्रीनिम्बार्क भगवान् व अन्य श्रीनिवासाचार्यजी के परम शिष्य जगद्गुरु आचार्यों को हम प्रणाम करते हैं।

(१६९)

इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में आध्यात्मिकता से शून्य कई लोक है उनको श्रीयुगलविहारी राधाकृष्ण की सद् भक्ति प्रदान करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम शरण लेते हैं।

(१७०)

जो श्रीयुगलचरणारविन्द के निकुञ्ज भक्तिरस की अनुपम वर्षा करते हैं जिनका बुधवर्ग विद्वद्वृन्द सदैव अपने मानस में सेवा अर्चना करते हैं उन श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१७१)

श्रीवृन्दावन धाम की व्रतति लता पादपाच्छादित सुन्दर व्रज निकुञ्जों में श्रीयुगल श्यामाश्याम का चिन्तन करते हुए (इधर-उधर परिभ्रमण) विहरण करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम विनम्र दैन्य भाव से प्रणाम करते हैं।

(१७२)

आब्रह्म भुवनान् लोकान् चेतनाचेतनात्मक सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान को जानने वाले, वेद उपनिषदादि के सकल विज्ञान को जानने वाले, परम अद्भुत आद्याचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम निरन्तर नाम स्मरण करते हैं।

(१७३)

भगवद्ध्यानतल्लीनं भगवद्रासदर्शकम् ।
भगवदीयशास्त्रज्ञं निम्बार्कं समुपास्महे ।।

(१७४)

विभाति सूर्यवद् यश्च लोकमङ्गलकारकः ।
स निम्बार्कः प्रसन्नश्री राजते भुवि सर्वदा ।।

(१७५)

शं विदधाति सदा लोके यो निम्बार्को दयापरः ।
असीमकरुणाकोषो ज्ञानविज्ञानद्योतकः ।।

(१७६)

सर्वेश्वरस्य पूजायां समारूढं सभक्तिकम् ।
आनन्दसागरे मग्नं निम्बादित्यं विभावये ।।

(१७७)

परम्परासु विख्यातमाद्याचार्यं शुभप्रदम् ।
निम्बादित्यं सदा वन्दे निम्बग्रामे विराजितम् ।।

(१७८)

त्रिविधतापसंतप्तजीवकल्याणहेतवे ।
योऽवतीर्णोऽवनौ पूर्वं स निम्बार्कः प्रदीप्यते ।।

(१७९)

धेनुसेवामहालक्ष्यं यस्य वै शास्त्रसम्मतम् ।
तं निम्बार्कं नमाम्याद्याचार्यं जगद्गुरुं भजे ।।

(१७३)

सच्चिदानन्द पूर्णब्रह्म पुरुषोत्तम के ध्यान में मग्न, रासेश्वर युगलविहारी की रसमयी रासलीला के दर्शन करने वाले भगवदीय महत्ता को प्रतिपादित करने वाले वेदादि शास्त्रों को जानने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम उपासना करते हैं।

(१७४)

जो संसार में मांगलिक लोक कल्याणकारी कार्यों को करते हुए सूर्य के समान प्रकाशित होते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् प्रसन्न मुद्रा में सदैव इस भारत भूमि पर शोभायमान होते हैं।

(१७५)

जो सकल भूमण्डल में शमता बनाए रखने वाले हैं, दया के सागर, सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान के प्रकाशक असीम करुणा के कोष श्रीनिम्बार्क भगवान् सम्पूर्ण संसार में शान्ति प्रदान करने वाले हैं।

(१७६)

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा अर्चना में भक्तिपूर्ण हृदय से विराजे हुए और उस भक्ति रस रूपी आनन्द सागर में निमग्न श्रीनिम्बार्क भगवान् का हृदय में हम स्मरण करते हैं।

(१७७)

वैदिक सनातन परम्परा में प्रसिद्ध आद्याचार्य प्रवर हमें शुभ फल प्रदान करने वाले हैं ऐसे श्रीनिम्बग्राम में विराजित श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम सदैव प्रणाम करते हैं।

(१७८)

आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक त्रिविध ताप से संतप्त प्राणीमात्र के कल्याण व मङ्गलार्थ जिन्होंने इस पवित्र भारतभूमि पर अवतार धारण किया है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् इस संसार को अपनी दिव्य आभा से प्रकाशित करते हैं।

(१७९)

गोमाता की सेवा करना ही जिनका शास्त्र सम्मत एक मात्र उद्देश्य है ऐसे हमारे आद्याचार्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम नाम स्मरण

(१८०)

शरण्यं वैष्णवानाञ्च भक्तानां प्रियजीवनम् ।
वरेण्यं बुध वृन्देषु श्रीनिम्बार्कं सदाऽऽश्रये ।।

(१८१)

येषां सुधामयी वाणी सर्वकल्याणकारिणी ।
तेषाञ्च दर्शनं दिव्यं तं निम्बार्कं स्मराम्यहम् ।।

(१८२)

राधाकृष्णोत्तमाभक्तिरसिकं रसजीवनम् ।
रसेशरासलीलाज्ञं श्रीमन्निम्बार्कमाश्रये ।।

(१८३)

शास्त्रराद्धान्तमर्मज्ञं शास्त्रीयविधिपालकम् ।
शास्त्रसिद्धान्तवक्तारं निम्बार्कं प्रणमामि तम् ।।

(१८४)

रसिकैर्युग्मनिष्ठैश्च समुपास्यं रसास्पदैः ।
गुणज्ञैर्गुणशीलैश्च नमामि निम्बभास्करम् ।।

(१८५)

रसं वर्षति भक्तेभ्यः सततं शाश्वतं शुभम् ।
यो रसाम्बुमहासिन्धुः स भाति निम्बभास्करः ।।

करते हैं।

(१८०)

सभी वैष्णवों को अपनी शरण प्रदान करने वाले और भक्तों को सुखमय प्रिय जीवन प्रदान करने वाले विद्वद् समुदाय में सदैव पूजनीय श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम शरण है।

(१८१)

जिनकी अमृतमयी वाणी हमें सभी मङ्गल व कल्याण प्रदान करने वाली है। दिव्य दर्शन स्वरूप वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम स्मरण करते हैं।

(१८२)

श्रीराधाकृष्ण की युगल भक्ति रस का पान करने वाले परम रसिक, श्रीयुगल प्रिया प्रियतम की रसमयी भक्ति रस ही जिनके प्राण है। ऐसे रसब्रह्म की रासलीला को सम्यक्तया जानने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम समाश्रय लेते हैं।

(१८३)

शास्त्रों के सैद्धान्तिक तत्त्व को जानने वाले व शास्त्रीय विधि का सम्यक्तया पालन करने वाले, शास्त्रोक्त सिद्धान्तों पर उपदेश करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१८४)

श्रीयुगलचरणारविन्द मकरन्द सेवन परायण परम रसिकों व गुणज्ञ गुणयुक्त सरल हृदय भावुक जनों के द्वारा रसमय पदों के द्वारा जिनकी उपासना की जाती है ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(१८५)

जो युगल प्रिया प्रियतम श्रीराधाकृष्ण के चरणारविन्द की निकुञ्ज भक्ति रस के सागर है जो निरन्तर भावुक सहृदय भक्तजनों के लिए युगल भक्तिरस की वर्षा करते हैं ऐसे (परम पावनतम) श्रीनिम्बार्क भगवान् इस भारतभूमि पर परम सुशोभित होते हैं।

(१८६)

नाऽभिलषति सम्मानं न कीर्ति भववैभवम् ।
केवलं युग्मतल्लीनस्तं भजे निम्बभास्करम् ।।

(१८७)

सर्वेश्वरसमासक्तं सर्वेश्वरपरायणम् ।
सर्वेश्वरार्चनालीनं निम्बार्कं नितरां भजे ।।

श्रीनिम्बार्कचरिताष्टकम्

(१)

श्रीकृष्णहस्ताम्बुजचक्ररूपं
वेदान्तसूत्रादिकभाष्यकारम् ।
सर्वेश्वराराधननित्यलीनं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(२)

देवर्षिवर्येण च लब्धदीक्षं
राधामकुन्देप्सितकर्मदक्षम् ।
जगद्गुरुं श्रीरसिकेशमाद्यं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(३)

श्रीवेधसाऽवाप्तविशेषनाम्ना
विख्यातनिम्बार्कमतीवदिव्यम् ।
प्रचण्ड-वादीन्द्र-करीन्द्रसिंहं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(१८६)

जो किसी भी प्रकार के कोई सम्मान न कोई कीर्ति व संसार के वैभव ऐश्वर्यादि की कोई अपेक्षा नहीं करते हैं, केवलमात्र श्रीयुगल चरणारविन्द की सेवा में निरन्तर तल्लीन रहने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम नाम स्मरण करते हैं।

(१८७)

श्रीसर्वेश्वर प्रभु में ही केवल मात्र आसक्ति रखने वाले, श्रीसर्वेश्वर परायण रहकर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा अर्चना में निरन्तर संलग्न श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं नाम स्मरण करते हैं।

श्रीनिम्बार्कचरिताष्टकम्

(१)

परब्रह्म अखिलकोटि ब्रह्माण्डनायक श्रीकृष्ण भगवान् के हस्त कमल में परम शोभायमान दिव्य आयुध श्रीसुदर्शनचक्रावतार के रूप में व श्रुति-सूत्र-वेद-वेदान्तादि शास्त्र सम्मत ''श्रीवेदान्तपारिजात सौरभ'' नामक भाष्य के प्रणेता, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अर्चना में नित्य लीन रहने वाले हमारे अचिन्तनीय आद्याचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् की स्तुति करते हैं।

(२)

देवर्षिप्रवर श्रीनारदजी के द्वारा जिन्होंने वैष्णवी दीक्षा प्राप्त की परब्रह्म युगलविहारी श्रीसर्वेश्वर प्रभु की इच्छानुसार इस भूतल पर अवतरित हो सम्पूर्ण जगत् के अन्धकार अर्थात् अज्ञान को मिटाकर दिव्य ज्ञान की ज्योति स्वरूप श्रीयुगल प्रिया-प्रियतम के चरणारविन्द की भक्ति प्रदान करने में (दक्ष) कुशल परम रसिकेश्वर, जगद्गुरु आद्याचार्यवर्य अचिन्तनीय श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम स्तुति करते हैं।

(३)

जगत्स्रष्टा श्रीब्रह्माजी से विशेष अति दिव्य ''श्रीनिम्बार्क'' नाम से प्रसिद्धि का वरदान प्राप्त किया, प्रचण्ड प्रखर बुद्धि सम्पन्न शास्त्रार्थ महारथी गजराजों में सिंह के समान हमारे आद्याचार्यप्रवर अचिन्तनीय श्रीनिम्बार्क

(४)

श्रीयुग्मभक्तिप्रचुरप्रसारे
सदा सुदक्षं गिरिराजवासम् ।
नीलाब्जरूपं परमं शरण्यं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(५)

श्रीनिम्बधाम्नि प्रभुभक्तिमग्नं
महर्षिवर्याऽरुणदिव्यसूनुम् ।
श्रीमज्जयन्तीसुतमर्चनीयं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(६)

राधापदाम्भोजपरागभृङ्गं
कृष्णाऽङ्घ्रिसेवापरिलग्नचित्तम् ।
वृन्दावनश्रीरविजातटस्थं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(७)

श्रुत्यर्थगाम्भीर्यसुबोधकारं
गोपालमन्त्रार्थरहस्यविज्ञम् ।
मुकुन्दमन्त्रार्थविवेकसरलं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

(८)

सदा मुदा वैष्णवताप्रचारे
तल्लीनमाचार्यमतीवनिष्ठम् ।
सनन्दनाद्याश्रितनित्यहृद्यं
निम्बार्कमाचार्यमचिन्त्यमीडे ।।

भगवान् की हम स्तुति करते हैं।

(४)

श्रीयुगलकिशोर श्यामाश्याम के चरणारविन्द की रसमयी निकुञ्ज भक्ति रस का प्रचुर प्रचार-प्रसार करने में परम कुशल, श्रीगिरिराज गोवर्धन की उपत्यका में निवास करने वाले नील कमल के समान स्वरूप को धारण करने वाले परम शरणागत शरण्य आद्याचार्य अचिन्तनीय श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम स्तुति करते हैं।

(५)

श्रीनिम्बधाम श्रीनिम्बग्राम में युगल प्रियाप्रियतम की भक्ति में ध्यानमग्न महर्षि अरुण व माता जयन्ती के दिव्य पुत्र के रूप में परम अर्चनीय अचिन्तनीय आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम स्तुतिं करते हैं।

(६)

परम रसिकेश्वरी श्रीप्रिया जी के चरण कमल के पराग रूपी भक्ति रसामृत का पान करने वाले भ्रमर स्वरूप व आनन्दकन्द नन्दनन्दन श्रीकृष्ण भगवान् के चरणारविन्द की सेवा में हृदय से संलग्न श्रीवृन्दावन धाम में सतत प्रवाहमान कल-कल कल्लौलिनी सूर्य पुत्री श्रीयमुनाजी के पावन पुलिन पर परम शोभायमान, चिन्तनीय आचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम स्तुति करते हैं।

(७)

वेद वेदान्तादि श्रुतियों मन्त्रों के दिव्य अर्थ गाम्भीर्यता को सुबोध अर्थात् सरलीकरण सारल्यता पूर्वक सुगम बनाने वाले, श्रीमुकुन्द मन्त्र के अर्थ के विवेक पूर्वक शरणागत दैन्य भाव वाले, श्रीगोपाल मन्त्रराज के अर्थरूपी रहस्य को जानने वाले चिन्तनीय आचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम स्तुति करते हैं।

(८)

सम्पूर्ण जगत् में वैष्णवता के प्रचार-प्रसार में अत्यन्त निष्ठा पूर्वक तल्लीन, सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार के शरणागत भाव पूर्ण हृदय वाले अचिन्तनीय आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम स्तुति वन्दना करते हैं।

(६)

निम्बार्कमहिमापूर्णं निम्बार्कचरिताष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीनिम्बार्कगौरवस्तोत्रम्

(१)

निम्बादित्यमहं स्तौमि दीनानुग्रहकारिणम् ।
भक्ताभीष्टप्रदं पूर्णं सौख्य-शान्तिप्रदायकम् ।।

(२)

हरिभक्तिप्रदं नित्यं निम्बकुञ्जे विराजितम् ।
सद्भिर्बुधैः प्रगीतञ्च भावये निम्बभास्करम् ।।

(३)

परमाचार्यमाचार्यं पुराणेषु सुकीर्तितम् ।
वेदान्ततत्त्वद्रष्टारं नौमि निम्बार्कदेशिकम् ।।

(४)

श्रुति-तन्त्रादितत्त्वज्ञं द्वैताद्वैत - प्रदर्शकम् ।
गोविन्दभक्तितल्लीनं वन्दे निम्बार्कदेशिकम् ।।

(५)

गोवृन्दरक्षणे दक्षं व्रजलतातले स्थितम् ।
व्रजजनैः सदाऽऽराध्यं श्रीनिम्बार्कं हृदा भजे ।।

(६)

आद्याचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् की महिमा से परिपूर्ण ''श्रीनिम्बार्कचरिताष्टकम्'' जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा विनिर्मित परम मननीय है।

श्रीनिम्बार्कगौरवस्तोत्रम्

(१)

दीनजनों पर परम अनुग्रह परायण और सभी प्रकार से परमानन्द एवं परम शान्ति प्रदायक भक्तजनों के अभीप्सित उत्तम मनोरथों को प्रदान करने में तत्पर ऐसे श्रीनिम्बार्काचार्यचरणों की हम स्तुति करते हैं।

(२)

भगवान् श्रीहरि की अनन्य पराभक्ति प्रदायक एवं श्रेष्ठ सन्त-महात्माओं तथा महामनीषी विद्वद्वृन्दों द्वारा जिनके अनुपम दिव्य गुण गणों का गायन प्रस्तुत किया जाता है ऐसे निम्ब (नीम) तरुवरों की सुभग कुञ्जों में विराजमान जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य की अपने अन्तर्मानस में भावना करते हैं।

(३)

वेद-वेदान्तादि शास्त्रों के तत्त्व को सम्यक् प्रकार परमवेत्ता एवं श्रीभविष्यपुराणादिकों में जिनके दिव्यतम सुयशपूर्ण चरित का साङ्गोपाङ्ग परिवर्णन है एवंविध परमाचार्य आद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों का हम अभिनमन करते हैं।

(४)

श्रुति-तन्त्रादि शास्त्रों के रहस्यात्मक तत्त्वों के परमज्ञाता और अपने स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त का परिबोध कराने वाले एवं श्रीराधागोविन्द भगवान् की प्रेमाभक्ति में अतीव तन्मय ऐसे श्रीनिम्बार्काचार्य-चरणों की अभिवन्दना करते हैं।

(५)

अगणित गोमाताओं की सर्वात्मना सर्वविध सुरक्षा में अतीव कुशल

(६)

भक्तानां कुशलक्षेमं वाञ्छन्तं निम्बभास्करम् ।
नमामि सर्वदा भक्त्या मनसा शिरसा धिया ।।

(७)

कामधेनुदशश्लोकी प्रणीता येन मञ्जुला ।
तं निम्बार्कं हृदा नौमि निम्बग्रामे व्रजे स्थितम् ।।

(८)

वृन्दावने व्रजे रम्ये विहरन्तं बुधैः सह ।
कालिन्द्याः पुलिने प्रात-र्निम्बार्कं प्रणमाम्यहम् ।।

(९)

राधाकृष्णपदाम्भोजे ध्यानस्थं नितरां हृदा ।
गोवर्धनसकाशे च निम्बग्रामे भजे गुरुम् ।।

(१०)

श्रीनारदर्षिशिष्यञ्च सर्वेश - समुपासकम् ।
श्रीसर्वेश्वरपूजायां स्थितं निम्बार्कमाश्रये ।।

(११)

अनन्यभक्तसम्पूज्यं सर्वदाशान्तदर्शनम् ।
प्रपन्नरक्षकं चारु निम्बार्कं हृदि भावये ।।

और व्रजवासीजनों द्वारा सदा समाराधित एवं व्रजलताओं के मध्य सुशोभित श्रीनिम्बार्क भगवान् का अपने अन्तःकरण से हम भजन करते हैं।

(६)

अपने अनन्य प्रपन्न श्रद्धालु भक्तजनों के सर्वविध कुशलक्षेम जानने की अभिलाषा करते हुए श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों को अपने शिर मन और बुद्धि से सर्वदा हम प्रणाम करते हैं।

(७)

व्रजभूमि पर अतिशय शोभाप्रद गोवर्धन निकटवर्ती स्वकीय तपःस्थली निम्बग्राम (नीमगाँव) में ''वेदान्तकामधेनु दशश्लोकी'' की जिन्होंने अतीव सुन्दर रचना की उन श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम अपने हृदय से अभिनमन करते हैं।

(८)

व्रजभूमि पर परम सुशोभित अति रमणीय श्रीधाम वृन्दावन में श्रीयमुनाजी के पावन पुलिन पर अनेक विद्वज्जनों के संग विहार करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् को मैं प्रणाम करता हूँ।

(९)

गिरिराज श्रीगोवर्धन के अति समीप निम्बग्राम (नीमगाँव) में अपने परमाराध्य श्रीराधाकृष्ण भगवान् के युगलचरणारविन्दों के स्वकीय अन्तःकरण से सर्वतोभावेन ध्यान परायण जगद्गुरुवरेण्य श्रीभगवन्निम्बार्का-चार्य का मैं भजन करता हूँ।

(१०)

देवर्षिवर्य श्रीनारदजी के परम कृपापात्र शिष्य और श्रीसनकादि संसेव्य एवं दक्षिणावर्ती सूक्ष्म शालग्राम स्वरूप जो स्वकीय परम इष्टदेव श्रीसर्वेश्वर प्रभु की उपासना एवं उनकी पावन पूजा में अवस्थित श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम समाश्रय लेते हैं।

(११)

अपने अनन्य भावुक भक्तजनों द्वारा जिनकी अर्चना की जाती है एवं सभी समय जिनके शान्त स्वरूप का दर्शन होता है और अपने शरणागत जनों की सुरक्षा करने में तत्पर ऐसे अति कमनीय श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य की

(१२)

अटन्तं तीर्थयात्रायां सद्भिः श्रेष्ठबुधैः सह ।
श्रीहरिं कीर्तयन्तञ्च भजामि निम्बभास्करम् ।।

(१३)

व्रजन्तं व्रजयात्रायां सार्द्धं सहस्रसाधुभिः ।
भजन्तं राधिकाकृष्णं वन्दे निम्बदिवाकरम् ।।

(१४)

श्रीचतुर्धामयात्रायां गच्छन्तं साधुभिः सह ।
निम्बार्कदेशिकं वन्दे निगमागमसंविदम् ।।

(१५)

स्मरामि नितरां शान्तं करुणाऽऽर्द्रसुमानसम् ।
श्रीनिम्बार्कं सुरै - र्गीतं स्वेष्टसन्मार्गदर्शकम् ।।

(१६)

वेदादिशास्त्रमर्मज्ञं निम्बकाथैक - सेवनम् ।
चेतसा निम्बाभानुञ्च भजेऽहमब्जलोचनम् ।।

(१७)

श्रीकृष्णरासलीलायां रङ्गदेवी - स्वरूपकम् ।
युग्मकेलिञ्च पश्यन्तं निम्बार्कं प्रणमाम्यहम् ।।

अपने हृदय से भावना करते हैं।

(१२)

अनेक सन्त-महात्माओं, उत्तमोत्तम बहुविध विद्वज्जनों के साथ में अपने परमाराध्य श्रीहरि श्रीराधाकृष्ण भगवान् के परम दिव्य मङ्गलमय मधुर नामों का संकीर्तन करते हुए समस्त महिमामय तीर्थों की सुन्दर यात्रा करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् का मनसा, वाचा, कर्मणा हम भजन करते हैं।

(१३)

सहस्रों-सहस्रों (हजारों-हजारों) साधु-महात्माओं के संग व्रजयात्रा करते हुए और अपने सर्वाराध्य श्रीराधाकृष्ण भगवान् के दिव्य भजन को सदा करते हुए श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों की हम अभिवन्दना करते हैं।

(१४)

श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि शास्त्रों के परम ज्ञाता एवं वद्रीनाथ-रामेश्वर-जगन्नाथ पुरी-द्वारका इन चारों धामों की यात्रा सन्त-महात्माओं को संग में लेकर करते हुए श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य की सर्वात्मना अभिवन्दना करते हैं।

(१५)

देववृन्दों द्वारा जिनके लोकोत्तर अनुपम सुभग चरितों का परिवर्णन किया जाता है एवं जिनकी अपार करुणा से जिनका मन द्रवित हो जाता है और जो सर्वदा परम शान्त रहते हैं ऐसे श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् का सदा स्मरण करते हैं।

(१६)

वेद-पुराणादि शास्त्रों के मर्मज्ञ महामनीषी हैं, निम्ब (नीम) वृक्ष के पत्तों का क्वाथ ही आपश्री के सेवन का विशेष नियम है ऐसे दिव्य कमलनयन श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों का अपने स्वकीय चित्त से हम भजन स्मरण करते हैं।

(१७)

भगवान् श्रीराधाकृष्ण की परम लावण्यमयी रसमयी श्रीरासलीला में श्रीरङ्गदेवी सखी स्वरूप से श्रीरासविहारी की अनुपम लींला में अतिशय मधुर रूप में परम सुशोभित और युगलकिशोर श्यामाश्याम श्रीराधाकृष्ण की

(१८)

वेदान्ताऽर्थोपदेष्टारं युग्माङ्घ्रिचिन्तने रतम् ।
कदम्बनिम्बकुञ्जेषु स्थितं निम्बार्कमाश्रये ।।

(१९)

नियमानन्दरूपेण शोभितं निम्बभास्करम् ।
सुदर्शनावतारञ्च प्रणमामि पुनः पुनः ।।

(२०)

गो-विप्र-साधुरक्षार्थं तत्परं पूर्णतः स्वयम् ।
सनकसम्प्रदायस्य बोधकं श्रीगुरुं भजे ।।

(२१)

युग्मभक्तिरसाब्धौ च निमग्नं निम्बभास्करम् ।
कलिन्दजातटे रम्येऽभिवन्दे मनसा गिरा ।।

(२२)

अनन्तकरुणासिन्धुं भक्तजनोपकारकम् ।
अज्ञानध्वान्त - संदोह-हरं निम्बार्कमाश्रये ।।

(२३)

श्रीमत्कृष्णकराम्भोजे शोभितं चक्ररूपिणम् ।
नमामि नित्यशोदेवं श्रीनिम्बार्कं दयाकरम ।।

अनिर्वचनीय केलि विलास का अवलोकन करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् को अभिनमन करते हैं।

(१८)

ब्रह्मसूत्र, उपनिषद्-श्रीमद्भगवद्गीता, इन प्रस्थानत्रयी वेदान्त शास्त्र पर जिन्होंने भाष्य का प्रणयन पूर्वक सरलार्थ कर उसका उपदेश किया है और अपने परमाराध्य वृन्दावन नित्यनिकुञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण भगवान् के चिन्तन-स्मरण में अभिरत एवं कदम्ब-निम्ब-कदली आदि तरुवरों की सुरम्य कुञ्ज में विराजमान श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम समाश्रय लेते हैं।

(१९)

प्रथम श्रीनियमानन्द नाम से सुशोभित एवं यति रूप सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी द्वारा प्रदत्त श्रीनिम्बार्क नाम से विख्यात श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों को हम बारम्बार प्रणाम करते हैं।

(२०)

गो-ब्राह्मण एवं सन्तों, महात्माओं की सुरक्षा के लिए सदा-सर्वदा स्वयं तत्पर एवं श्रीसनकादिकों द्वारा प्रारम्भ की गई श्रीसनक सम्प्रदाय का परिज्ञान कराने वाले जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों का हम भजन करते हैं।

(२१)

परम रमणीय श्रीयमुनाजी के पुलिन पर श्रीयुगल प्रियालाल श्रीराधा-माधव प्रभु की अतिमधुर रसमयी पराभक्ति सुधासिन्धु में आप्लावित अर्थात् ध्यानावस्था में सुशोभित श्रीमन्निम्बार्क भगवान् की मन से अभिवन्दना करते हैं।

(२२)

परम करुणार्णव तथा अपने अतिप्रिय भक्तजनों के प्रति विविध प्रकार से उपकार करने में अग्रसर एवं अज्ञानरूपी अन्धकार का बाहुल्य उसका निराकरण करने वाले श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम आश्रय ग्रहण करते हैं।

(२३)

श्रीकृष्ण भगवान् के कर कमलों में सुदर्शन चक्र रूप में सर्वदा परम

(२४)

परमानन्दरूपं हि श्रीसर्वेश्वर - चिन्तकम् ।
पीतकौशेयशोभाऽऽप्तं निम्बार्कमभिवादये ।।

(२५)

तुलसीकण्ठिकादिव्यं गोपीचन्दनचर्च्चितम् ।
धृतोर्ध्वपुण्ड्रभालञ्च श्रीनिम्बार्कं स्मराम्यहम् ।।

(२६)

श्यामलकचशोभाऽऽढ्यं दिव्यश्यामलरूपकम् ।
श्यामसुन्दरपादाब्ज-ध्यानस्थं नौमि सद्गुरुम् ।।

(२७)

वेदान्तब्रह्मसूत्राणां भाष्यकारं नमाम्यहम् ।
हर्यायुधावतारञ्च श्रीनिम्बार्कं कृपानिधिम् ।।

(२८)

दिव्याऽष्टविधरूपेण राजितं निम्बभास्करम् ।
आद्याचार्यं दयाधाम साष्टाङ्गं प्रणमाम्यहम् ।।

शोभायमान एवं अपने प्रपन्न भक्तों पर दया-परायण ऐसे श्रीनिम्बार्काचार्यचरणों को हम दैनिक अभिनमन करते हैं।

(२४)

पीतवर्णयुत रेशमी वस्त्र धारण करने पर अति शोभायुक्त परमानन्द स्वरूप एवं श्रीसनकादि संसेव्य दक्षिणावर्ती गुञ्जाफल सदृश सूक्ष्म शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु के चिन्तन-स्मरण में संलग्न परमानन्द स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् की अभिवन्दना करते हैं।

(२५)

तुलसी की कण्ठी जिनके कण्ठ प्रदेश में सुशोभित है गोपीचन्दन से सुभग भाल पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक अङ्कित है एवंविध श्रीनिम्बार्क भगवान् का हम प्रतिपल स्मरण करते हैं।

(२६)

जिनके श्यामल अलकावली सुशोभित है और सुभग श्याम स्वरूप श्रीअङ्ग है और श्रीश्यामसुन्दर भगवान् के श्रीचरण कमलों के ध्यान में तत्पर हैं ऐसे जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों को सर्वात्मना अभिनमन करते हैं।

(२७)

भगवान् वेदव्यास कृत वेदान्तरूप ''श्रीब्रह्मसूत्र'' का जिन्होंने ''वेदान्तपारिजात सौरभ'' नामक भाष्यों की रचना की और परम कृपार्णव, भगवान् श्रीकृष्ण के सुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम प्रणाम करते हैं।

(२८)

आप अष्टविध अर्थात् आठ रूप में सुशोभित हैं यथा निकुञ्जधाम में प्रथम श्रीराधा-अङ्ग कान्ति स्वरूप, द्वितीय सखी स्वरूप में-श्रीरङ्गदेवी और तृतीय भगवान् श्रीकृष्ण के सखाओं में श्रीस्तोक सखा, चतुर्थ-अनिरुद्ध रूप में और पञ्चम श्रीकृष्ण भगवान् के लकुट रूप में, षष्ठ-धूसर गोरूप में, सप्तम-सुदर्शनचक्ररूप में, अष्टम-श्रीनिम्बार्काचार्य रूप में आप परम शोभायुक्त हैं। अतीव दया के आधार रूप आद्याचार्य श्रीनिम्बार्काचार्य-वर्य को हम साष्टाङ्ग प्रणाम करते हैं।

(२९)

सर्वार्थसिद्धिदं देवं सर्वत्रपरिपूजितम् ।
स्वसर्वाचार्यसम्पूज्यं वन्दे निम्बदिवाकरम् ।।

(३०)

अनन्ताचिन्त्यरूपञ्च नीलाभं दिव्यसुन्दरम् ।
अतीवकरुणासिन्धुं स्मरामि निम्बभास्करम् ।।

(३१)

सनकादिकराद्धान्तसम्पोषणमहापटुम् ।
श्रुति-स्मृतिपुराणादि - चिन्तकं सद्गुरुं भजे ।।

(३२)

नानाग्रन्थप्रणेतारं नानाशास्त्रसुचिन्तकम् ।
नानासत्कार्यकर्तारं श्रीनिम्बार्कं समाश्रये ।।

(३३)

गोपालमन्त्रराजस्य जापकं निम्बभास्करम् ।
श्रीमन्मुकुन्दमन्त्रस्याऽनुष्ठाननिरतं भजे ।।

(३४)

अध्यात्मशक्तिसम्पन्नं दीनक्लेश - निवारकम् ।
श्रीनिम्बार्कं सदा नौमि प्रपन्नागतरक्षकम् ।।

(३५)

निम्बार्कं परमाचार्यं जगद्गुरुञ्च भावये ।
आद्याचार्यं महौदार्यं वैष्णवैः परिसेवितम् ।।

(२९)

समस्त उत्तम अभीष्ट मनोरथ को एवं सिद्धिओं को प्रदान करने वाले एवं समस्त विश्व में जो परिपूजित हैं और अपनी परम्परा के समस्त पूर्वाचार्यों द्वारा परिपूजित हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् की सश्रद्ध वन्दना करते हैं।

(३०)

जिनका अनन्त अचिन्त्य स्वरूप है, नीलवर्ण अर्थात् श्यामस्वरूप से अति शोभाप्रद हैं और परम दिव्य सुन्दर स्वरूप हैं एवं महाकरुणा के अपार सागर हैं ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का प्रतिपल स्मरण करते हैं।

(३१)

श्रुति-स्मृति-पुराणादि उत्तम शास्त्रों का तन्मनस्क होकर चिन्तन परायण एवं महर्षिवर्य श्रीसनकादिकों के सिद्धान्त की पुष्टि करने में परम प्रवीण जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यचरणों का सर्वात्मना भजन करते हैं।

(३२)

अनेक ग्रन्थों का जिन्होंने प्रणयन किया और विविध शास्त्रों का समीचीन प्रकार से चिन्तन करने वाले, नानाविध उत्तमोत्तम कार्यों के कर्ता ऐसे श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों का समाश्रय लेते हैं।

(३३)

श्रीगोपालमन्त्रराज के जाप (जप) कर्ता श्रीशरणागति मुकुन्दमन्त्र के अनुष्ठान में अभिरत ऐसे श्रीनिम्बार्क भगवान् का भजन करते हैं।

(३४)

अध्यात्म शक्ति से परिपूर्ण एवं दीनजनों के कष्ट का निवारण कर्ता और शरणागत जनों की सर्वविध रक्षा करने में तत्पर श्रीनिम्बार्काचार्य-चरणों को सदा प्रणाम करते हैं।

(३५)

वैष्णवजनों द्वारा परिसेवित एवं जिनका परम उदार भाव है एवंविध परमाचार्य आद्याचार्य जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों की सर्वतोभावेन अपने मानस में भावना करते हैं।

(३६)

निम्बार्कगौरवस्तोत्रं निम्बार्कभक्तिसम्प्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

(३६)

श्रीनिम्बार्क भगवान् के श्रीपदपङ्कजों की अनन्य पराभक्ति प्रदायक यह ''श्रीनिम्बार्कगौरवस्तोत्र'' जिसका प्रणयन श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों के कृपा का ही यह प्रस्तुत फल है।

(१)

श्रीनिम्बारक दशरन पावो ।

श्रीहरि आयुध रूप विराजत, जस अतिपावन शुभ यश गावो ।।

श्रीवपु अनुपम मंजुल शोभा, प्रतिपल वर्णन कर हरषावो ।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, मानव जीवन सफल बनावो ।।

(२)

श्रीनिम्बारक परम उदार ।

व्रजजन जीवन कृष्णकराम्बुज, चक्र सुदर्शन प्रिय अवतार ।।

श्रीसर्वेश्वर राधामाधव, परम उपासक रस विस्तार ।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीवपु पावन सुयश प्रसार ।।

(३)

शरणागत हम निम्बदिवाकर ।

सदा सुशोभित श्रीव्रजवसुधा, गिरि-गोवर्धन निम्बाश्रम पर ।।

परम कृपार्णव विपद निवारक, भव उद्धारक नित्य निरन्तर ।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीपदरजकण वांछत मुनिवर ।।

(४)

निम्बभानुश्री तुरत उवारो ।

यह भव सागर गहन महा है, कृपादृष्टि तव परम सहारो ।।

जीव जगत के श्रीहरिमाया, सतत विमोहित आप निहारो ।

नहिं साधन अरु भक्ति-भावना, जीवन अर्पण आप निवारो ।।

श्रीपदपंकज तरणि सुदृढ़ है, कृपासिन्धु भव पार उतारो ।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, मम मानस प्रभु नित अवधारो ।।

(५)

श्रीनिम्बारक नाम तिहारो ।

प्रकटे भूतल श्रीअरुणाश्रम, नियमानन्द शुभ नाम पियारो ।।

यतिवपु विधि हित निशा निम्बतरु, कियो सुदर्शन रवि उजियारो ।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, शरणागतजन तुरत निवारो ।।

(६)

श्रीनिम्बारक सदा हमारे ।
अरुण महामुनि प्रिय सुत सुन्दर, मात जयन्ती परम दुलारे ।।
श्रीव्रजमण्डल पावन वसुधा, श्रीगोवर्धन वन संचारे ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्यामाश्यामवपु नित्य निहारे ।।

(७)

निम्बदिवाकर दर्शन करिये ।
जन्मान्तर के बहुविध पातक, धावत निश्चय भव निस्तरिये ।।
अवगुणहारी गुणसंचारी, श्रीनिम्बारक मन अवधरिये ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जन्म सफल कर तीर्थ विचरिये ।।

(८)

जयति आरती निम्बदिवाकर ।
सुन्दर स्वर्णिम थाल सुशोभित, परम सुवासित पुष्प मिलाकर ।।
चन्दन चर्चित मन्त्र समर्चित, गरुड घण्टिका चँवर हिलाकर ।
गोघृत वाती छवि अनुपम है, मंगल अक्षत शंख फिराकर ।।
चक्र सुदर्शन रूप विराजित, निम्बारक वपु दरश दिखाकर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पावो शुभ फल कुमति विदाकर ।।

(९)

भजो निम्बारक श्रीपदपावन ।
नवारुण ललित नलिन सम कोमल, रसिकहृदयधन अति मन भावन ।।
शशिवत सुन्दर सुधारस वरषत, प्रकटे भूतल ताप नशावन ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अनुपम अभिनव सुख सरसावन ।।

(१०)

जय जय जय हो जयन्तीनन्दन ।
हम सब श्रीपदपंकज शुभरज, चाहत पुनि-पुनि प्रतिपल वन्दन ।।

कृपासिन्धु श्रीचरण बलिहारी, बसो हृदय मन नशत जग बन्धन।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अर्पित पावन श्रीखण्डचन्दन।।

(११)

सरस बधाई निम्बविभाकर।
चक्र सुदर्शन श्रीहरि आज्ञा, निज अन्तर धर प्रकट धरा पर।।
दक्षिण भारत श्रीअरुणाश्रम, करी कृपा शुभ श्रीकरुणाकर।
श्रीनिम्बारक श्रीवपुशोभित, मात जयन्ती प्रिय मंगल घर।।
सुर-नर-किन्नर अगणित मुनिजन, अतिशय पुलकित कुसुम वृष्टिकर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, लसत परम सुख अरुणमुनीश्वर।।

(१२)

श्रीअरुणाश्रम मधुर बधाई।
अरुणमुनीश्वर मात जयन्ती, आश्रम बाजत शुभ सहनाई।।
अगणित ऋषिवर मुनिजन आकर, मन्त्र उचारत मन सरसाई।
विविध वन्दीजन वाद्य बजावत, नाचत गावत अति हरषाई।।
आज अरुणमुनि कनक दक्षिणा, अर्पण कर-कर देत बधाई।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दिव्य सुयश नभ मंगल छाई।।

(१३)

भज मन नियमानन्द हमारे।
श्यामल सुन्दर श्रीअंग अनुपम, छवि दर्शन कर सकल विसारे।।
अलकावलनी कपोलनि राजत, नयन सरोजनि सुभग महारे।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीपदपंकज रज उर धारे।।

(१४)

श्रीनिम्बारक मिलकर गावो।
श्रीहरि-आयुध सुभग सुदर्शन, निम्बदिवाकर चित्त बसावो।।
परम कृपानिधि करुणासागर, जय जय गाकर अति हरसावो।
श्रीमुख शोभा दिव्य प्रभा युत, दर्शन करि-करि धन्य मनावो।।

जो जन अविचल शरण आपकी, निश्चय अनुपम आनद पावो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, तन्मय होकर प्रतिपल ध्यावो।।

(१५)

निम्ब दिवाकर पदरज परिये।
भव सागर को सहज रूप में, तुरत पार कर तीर उतरिये।।
सकल ताप सब संकट टरते, परम शान्ति-सुख पुञ्ज उभरिये।
विमल भाव भरि मधुर भक्तिरस, सहित नाम नित सरस उचरिये।।
राधामाधव दिव्य धाम रस, -सुधासिन्धु मधि नित्य विचरिये।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, निम्बारक पद-रज शिर धरिये।।

(१६)

भजो भजो नित निम्बदिवाकर।
सात्विकता हिय धारण करके, नाम रटो प्रिय भावुक होकर।।
तन-मन-धन सब और साधना, श्रद्धा पूर्वक अर्पण हितकर।
चरण कमल नित समुपासत रत, होकर मनसा चिन्तन तत्पर।।
ध्यान धरत ही पावत सुन्दर, कृपादृष्टि रस सहज निरन्तर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सुभग मनोरथ पूरत अघहर।।

(१७)

श्रीनिम्बारक चरण सहारा।
भव बन्धन झट कटत सुनिश्चय, तुरत साधना परम अधारा।।
हृदय पटल पर परम शान्ति हो, सरस सुधारस बहत नित धारा।
विविध विभव सब स्वयं प्रकट हो, चरणनलिन रज रस सञ्चारा।।
रोग-शोक-अघ तुरत शमन ध्रुव, अन्तर्मन-मति नित्य विहारा।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सकल प्रधावत जगत - विकारा।।

(१८)

करिये दर्शन नियमानन्द।
अरुणमुनीश्वरनन्दन सुन्दर, मुनिजन गावत मनोहर छन्द।।

दक्षिण भारत पावन वसुधा, गोदावरी तट सुशोभित कन्द।
किन्नर-गुणिजन प्रमुदित गावत, वाद्य बजावत विविध सुरवृन्द।।
रूप माधुरी विलसत अनुपम, श्रीनिम्बारक नियमानन्द।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, चक्र-अवतार सदा अभिवन्द।।

(१६)

नीमगाँव की शोभा शुभकर।
जहाँ सुशोभित चक्र-सुदर्शन, निम्बदिवाकर दिव्यकान्तिधर।।
विधि को सायं रवि दरशाया, नाम धराया निम्बारकवर।
प्रस्थानत्रयी पर भाष्य रचा है, भेदाभेद सुमत बताकर।।
राधामाधव युगल उपासक, श्रीनिकुञ्जरस भाव हृदय धर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, नीमगाँव प्रिय दर्शन सुन्दर।।

(२०)

करो आरती निम्बदिवाकर।
नाना रतन जटित अति सुन्दर, कनक आरती अतीव चितहर।।
चन्दन चर्चित कुसुम ललित कलि, -मण्डित मञ्जुल मोहित सुर-नर।
गोघृत वर्ती ज्योतिर्मय है, दिव्य प्रभायुत करते बुधवर।।
वैदिक-मन्त्रोच्चारण पूर्वक, लसत आरती अमित भाव धर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पुनि-पुनि बोलो जय जय स्वर भर।।

(२१)

सदा बसो हिय निम्ब विभाकर।
हम शरणागत अनन्य आपके, वांछत दर्शन दैन्य भाव धर।।
नित्य उपासत चरण सरोरुह, पराभक्ति हम चाहत सुन्दर।
धाम शिरोमणि श्रीवृन्दावन, नवनिकुञ्जरस वितरण तत्पर।।
श्रीनिम्बारक युगपदवन्दन, प्रमुदित मानस कृपादृष्टिकर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, ध्यावत अनुदिन दिव्य प्रभाकर।।

(२२)

अरुणाश्रम शुभ सरस बधाई ।
चक्र सुदर्शन प्रकट धरातल, नियमानन्द शुभ कीरति छाइ ।
ऋषिवर-मुनिजन-मागध-किन्नर, अति पुलकित मन महिमा गाई ।
श्रीनिम्बारक नाम सुनायो, जगत विधाता मति हरषाई ।।
विविध सुधीजन सब नर-नारी, गावत आवत हिय तरषाई ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, मात जयन्ती तन पुलकाई ।।

(२३)

अहो भलो दिन आनन्द छायो ।
श्रीअरुणाश्रम मूंगी - पैठन, चक्र सुदर्शन भुव प्रकटायो ।।
गोदावरी की पावन भूमी, महा महोत्सव सुदर्शन आयो ।
व्रज में शोभित श्रीगोवर्धन, नीमगाँव तप दिव्य करायो ।।
विधि ने आकर नाम धर्‍यो है, श्रीनिम्बारक यश फैलायो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, व्रजवासी मन अति हरषायो ।

(२४)

आज महोत्सव मूंगी चलिये ।
श्रीनिम्बारक दर्शन करि करि, अन्तर मन को पुनि पुनि मलिये ।।
चक्र सुदर्शन प्रकट सामने, अनुपम शोभा चित्त मचलिये ।
शुभ सिंहासन अभिराजत है, पाकर दर्शन कभी न हिलिये ।।
अन्तर मन में रस बरषत है, प्रणति भाव से शिर रज मलिये ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, आज सुभग दिन मन बिच तुलिये ।।

(२५)

चलो चलो श्रीमूंगी शुभ धाम ।
जहाँ सुशोभित अरुणाश्रम है, गोदावरी परम ललाम ।।
श्रीनिम्बारक जगद्‌गुरुश्री, आचारजवर अति अभिराम ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीसर्वेश्वर दरश निष्काम ।।

(२६)

अविरल भज श्रीनिम्बदिवाकर।
जाकी अनुपम कृपारस वृष्टि, होत समाश्रित भावुकजन पर।।
अतिशय पावन सरस विमल चित, ध्यान परायण श्रीसर्वेश्वर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, युगल महारस दिव्य सुधाकर।।

(२७)

श्रीनिम्बारक पावन नाम।
जे नर गावत निम्बरवि अविरल, अविचल पावत परम सुखधाम।।
जाकी कृपा सहज हरिदर्शन, करो भावयुत भजन अविराम।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पावो शुभ फल अचल विश्राम।।

(२८)

श्रीनिम्बारक निरन्तर गावो।
तजो जगत सुख परम विनश्वर, श्रीसर्वेश्वर आश्रय पावो।।
श्रीहरिमाया प्रबल महा है, जगद्‌गुरु पद अन्तर ध्यावो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, तब ही माया रहित ह्वै जावो।।

(२९)

जय जय जय हो श्रीनिम्बारक।
शरण होत ही सब भवबाधा, सकल जन्म परिताप निवारक।।
राधामाधव सुभग पदाम्बुज, पराभक्तिरसदान प्रचारक।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, निगमागम शुभ शास्त्र विचारक।।

श्रीनिम्बार्क भगवन्नामसंकीर्तन

जयति सुदर्शन शुभ अवतार। श्रीनिम्बारक परमाधार।।१।।
जयन्तीनन्दन अरुणकुमार। जय निम्बारक परम उदार।।२।।
कृष्ण-करायुध प्रिय अवतार। श्रीनिम्बारक जगत प्रचार।।३।।
श्रीसनकादि नारद ऋषिवर। जय बोलो जय निम्बदिवाकर।।४।।
हंस-सनक-श्रीनारद ऋषिवर। जयजय जय हो निम्बदिवाकर।।५।।
जय निम्बारक श्रीसर्वेश्वर। व्रजजनजीवन श्रीरसिकेश्वर।।६।।
जय सर्वेश्वर निम्बदिवाकर। जयति सदा जय दिव्य सुधाकर।।७।।
श्रीवृन्दावन श्यामा-श्याम। भजो निम्बारक आठों याम।।८।।
राधासर्वेश्वर सुखधाम। श्रीनिम्बारक जय अविराम।।९।।
श्रीनिम्बारक निम्बग्राम। जयति सदा जय श्रीव्रजधाम।।१०।।
दक्षिण वसुधा प्रकट निम्बरवि। पैठन-मूंगी अरुणाश्रम-छवि।।११।।
श्रीसर्वेश्वर श्रीनिम्बारक। भव बाधा-भय परम निवारक।।१२।।
भेदाभेद निगम-मत दर्शक। श्रीहरिभक्ति रस अभिवर्षक।।१३।।
राधामाधव युगल उपासक। परम कृपानिधि श्रीनिम्बारक।।१४।।
राधा कृष्ण रसकुंज उपासक। जयजय जय हो श्रीनिम्बारक।।१५।।
श्रीनिम्बारक दिव्य स्वरूप। चक्र सुदर्शन रूप अनूप।।१६।।
भज मन भगवन्निम्बप्रभाकर। शरणागत जन परम कृपाकर।।१७।।
परम रसिकजन प्रिय आधार। श्रीनिम्बारक सुयश-प्रसार।।१८।।
अष्ट रूप श्रीनिम्बविभाकर। नित्य भजो प्रभु चित्त लगाकर।।१९।।
श्रीराधाअंग-कान्ति स्वरूप। श्रीरंगदेवी परम अनूप।।२०।।
स्तोक-सखा अतिप्रिय अनिरुद्ध। लकुट रूप वपु चिद्घन शुद्ध।।२१।।
धूसर-धेनु चक्र-सुदर्शन। श्रीनिम्बारक सुन्दर दर्शन।।२२।।

*

श्रीनिम्बार्क दिव्यस्वरूपदर्शन

(१)

वैदिक द्वैताद्वैत मत, निम्बारक सिद्धान्त।
राधाकृष्ण उपासना, लसत नशै भव ध्वान्त॥

(२)

निम्बारक एकादशी, व्रत विज्ञान विधान।
कपालवेध सिद्धान्त है, आगम शास्त्र प्रमान॥

(३)

वृन्दावन श्रीयुगलधाम, नित्य कुंज रस पान।
श्रीरंगदेवी रूप सखि, निम्बारक धर ध्यान॥

(४)

कृष्ण-सुदर्शनचक्र के, अनुपम हैं अवतार।
श्रीनिम्बारक विश्व में, करत भक्ति संचार॥

(५)

श्रीव्रज गोवर्धन निकट, निम्बग्राम प्रकास।
सर्वेश्वर सेवा सहित, निम्बारक नित वास॥

(६)

शरणागत रक्षक सदा, वैष्णवधर्म प्रचार।
श्रीनिम्बारक अटल व्रत, भावुक मन अवधार॥

(७)

सर्वेश्वर-सेवा निरत, गोसेवा नित दान।
श्रीनिम्बारक अटल व्रत, श्रुति सिद्धान्त विधान॥

(८)

श्रीनिम्बारक जयति जय, उच्चस्वर उच्चार।
राधासर्वेश्वरशरण, दिव्य स्वरूप निहार॥

श्रीनिम्बार्क - चरितालोक

सर्वेश्वर श्रीकृष्ण की, शुभ-आज्ञा अनुसार।
श्रीसुदर्शन-चक्रराज, लिया मनुज अवतार॥१॥
भारत-अवनि दक्षिण में, पैठण-मूंगी ग्राम।
अरुणाश्रम पावन किया, परम श्रेष्ठ वह धाम॥२॥
गोदावरी गंगा सुभग, पावन-तट तरु-कुंज।
अरुणाश्रम शोभित जहाँ, विविध लतावलि पुंज॥३॥
पिता मुनीश्वर अरुण है, श्रीमज्जयन्ती मात।
नियमानन्द स्वरूप में, प्रकटे भुवि सूर्यास्त॥४॥
अष्टवर्ष की अल्पवय, किया शास्त्र का ज्ञान।
निगमागम स्वाध्याय कर, पावत बुध-सम्मान॥५॥
व्रजधाम वसुधा पितृसह, श्रीगिरिराज समीप।
सुभग तरेटी तप किया, दर्शित विधि रवि दीप॥६॥
देवर्षिवर नारद गिरा, लिया मन्त्र-गोपाल।
सर्वेश्वर सेवा मिली, सुन्दर तुलसी-माल॥७॥
सनकादि संसेव्य हैं, सर्वेश्वर भगवान।
शालग्राम स्वरूप शुभ, गुञ्जाफल सम जान॥८॥
यति स्वरूप ब्रह्मा स्वयं, आये दिवाकरास्त।
अरुणाश्रम स्वागत हुआ, राका-तिमिर अपास्त॥९॥
श्रीमन्नियमानन्द ने, किया ब्रह्म-आतिथ्य।
निज आश्रम तरु निम्ब पर, दरशाया आदित्य॥१०॥
ब्रह्मा-यति ने निम्ब पर, देखा रवि को पूर्ण।
तब निज व्रत पालन किया, प्रसाद पाया तूर्ण॥११॥
भोजनान्त जब आचमन, कर लख तिमिराछन्न।
रात्रि सन्मुख हटात ही, हुए अतीव विपन्न॥१२॥

ब्रह्मा विस्मित अति हुए, हुआ समाधि ज्ञान।
श्रीसुदर्शन प्रकट भुवि, तदा सही अवभान।।१३।।
श्रीब्रह्मा अतितुष्ट हो, प्रकट किया निज रूप।
श्रीमन्नियमानन्द पर, तुष्ट हुए सुर-भूप।।१४।।
श्रेष्ठ निम्बार्क नाम से, सम्बोधन कर आप।
ब्रह्मलोक को पुनः गये, आरुणि प्रबल प्रताप।।१५।।
श्रीमन्नियमानन्द से, सुप्रसिद्ध निम्बार्क।
सर्वभूमण्डलाचार्य, पावन पिचुमन्दार्क।।१६।।
सुदर्शनचक्रावतार, श्रीनिम्बार्काचार्य।
महीमण्डलाचार्यवर, प्रकटे भुवि अनिवार्य।।१७।।
श्रौत सनातनधर्म का, वैष्णवता सञ्चार।
आचार्यरूप अवतरण, श्रीहरि भक्ति प्रसार।।१८।।
स्वाभाविक-द्वैताद्वैत, दार्शनिक-सिद्धान्त।
राधाकृष्ण-उपासना, यही प्रमुख राद्धान्त।।१९।।
श्रीप्रस्थानत्रयी पर, किया दिव्यतम भाष्य।
वेदान्तपारिजाताख्य, दिव्य वृत्यात्मकास्य।।२०।।
श्रीवृन्दावनधाम का, निकुञ्ज रस आधार।
श्रीयुगलाङ्घ्रि-उपासना, परम पूर्ण साकार।।२१।।
राधाकृष्ण-उपासना, किया प्रचार अपार।
भेदाभेद-सिद्धान्त का, श्रेष्ठ प्रचुर प्रसार।।२२।।
श्रीभगवन्निम्बार्क की, महिमा भव विख्यात।
जिन चरणाम्बुज भक्ति से, सात्विक सदा प्रभात।।२३।।
गोवर्धन-उपत्यकास्थ,--पावन निम्बग्राम।
भगवन्निम्बार्काचार्य,-चरण तपोमय धाम।।२४।।
श्रीनिम्बार्क भगवान के, शिष्य निवासाचार्य।
पाञ्चजन्यशंखावतार, सर्वविदित स्वाचार्य।।२५।।

वेदान्त कौस्तुभ भाष्य का, श्रीनिवासाचार्य।
पट्टशिष्य निम्बार्कवर, किया सुरचना कार्य॥२६॥
निम्बार्कचरितालोक, पावन दिव्य स्वरूप।
राधासर्वेश्वरशरण, श्रवण नशत भव-धूप॥२७॥

*

निम्बारक भगवान की, शोभा परम अपार।
वर्णन करना अशक्य है, 'शरण' हृदय अवधार॥१॥
व्रज में श्रीगिरिराज है, निकटतम निम्बग्राम।
निम्बारक राजत जहँ, 'शरण' परम अभिराम॥२॥
निम्बारक जय जय भजो, अन्तर मन रख भाव।
आलस तज सेवा करो, 'शरण' श्रेय पथ धाव॥३॥
सरल भाव से प्रणति हो, कृत्रिमता का त्याग।
श्रीनिम्बारक कृपा तभी, 'शरण' बनै सदभाग॥४॥
अष्टयाम सेवा भली, निम्बारक धर ध्यान।
निज मानस में शान्ति तब, 'शरण' सही अनुमान॥५॥
जिसका जीवन भक्ति रस, आप्लावित गुणवान।
निम्बारक आचार्यवर, 'शरण' कृपा ध्रुवमान॥६॥
निष्ठा श्रद्धा सहज हो, भाव भक्ति अनुराग।
स्वाभाविक निम्बार्कवर, 'शरण' अनुग्रह जाग॥७॥
अपने मन में सरसता, हो परम शुभ ज्ञान।
निम्बारक आचार्यश्री, 'शरण' चरण कर ध्यान॥८॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

द्वारा विरचित-

* ग्रन्थमाला *

		प्रकाशित श्लोक सं.
१. श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातःस्तवराज पर (युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या	,,	
२. श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	११८
३. उपदेश - दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
४. श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२)	,,	
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३९५
६. श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०५
७. श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	५८
८. हिन्दु-संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
९. भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३७
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८६
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	४०
१२. श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	२२
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१५
१४. भारत कल्पतरु (पद सं० ६६, दोहा सं० १६०)	,,	
१५. श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम् (संस्कृत-पद्यात्मक) (पद सं० २५, दोहा सं० ४३)	,,	५०८
१६. विवेक-वल्ली (पद सं० ४१६)	,,	
१७. नवनीतसुधा (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
१८. श्रीसर्वेश्वरशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०८
१९. श्रीराधाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०३
२०. श्रीनिम्बार्कचरितम् (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
२१. श्रीवृन्दावनसौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६०

२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी (पद सं.६४-दोहा सं.६२) ,,

२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम् ,, १०
(संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (पद सं० २०)

२४. छात्र-विवेक-दर्शन (हिन्दी दोहा-पद्यात्मक) ,,
(दोहा सं० २४१)

२५. भारत-वीर-गौरव (हिन्दी-पद्यात्मक दोहा सं. १८१) ,,

२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,,
(दोहा सं० ३२)

२७. परशुराम-स्तवावली (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, १७
(दोहा सं० ४६, पद सं० ६)

२८. श्रीराधा-राधना (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, ५६
(पद सं० २८, दोहा सं० ५१)

२९. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १८

३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ३५

३१. श्रीराधामाधवरसविलास, महाकाव्य (दोहा सं० १०५३),,

३२. गोशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १३५
(दोहा सं० ६३, पद सं० १४)

३३. श्रीसीतारामस्तवादर्शः ,, ८०
(संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं. १०१, पद सं. १६)

३४. स्तवमल्लिका (संस्कृत पद्यात्मक) (दोहा सं० ४२) ,, २१३

३५. श्रीरामस्तवावली (संस्कृत -पद्यात्मक) (दोहा सं.२१),, ५६

३६. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम् ,, १०३

३७. दिव्यचरितप्रभा ,,

३८. प्रेरणाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १०३

३९ उद्गारशतकम् (संस्कृत गद्यात्मक) ,,

४०. श्रीपीताम्बरदशश्लोकी (संस्कृत-पद्यात्मक) ,,

४१. श्रीयुगलस्तववल्ली (संस्कृत-पद्यात्मक) ,,

कुल हिन्दी पद सं० २८०७ कुल श्लोक सं० २६८७

अनन्त विभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधा-सर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का जन्म विक्रम संवत 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई, 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। अपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय-व्याकरण-वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। वज्रविदेही चतु:सम्प्रदाय श्रीमहन्त श्री धनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क-तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतु:सम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा-महाराजाओं, राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा। श्री निम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार (वृन्दावन), उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकश: श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाया को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता है। इसी प्रकार सं. 2026 में वज्रयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2061 में श्री भगवन्निम्बार्काचार्य 5100वां जयन्ती महोत्सव पर विराट् सनातनधर्म सम्मेलन, 2062 में युगसन्त श्रीमुरारीबापू द्वारा श्रीरामकथा, 2063 में श्रीरमेश भाई ओझा द्वारा श्रीमद्भागवत कथा आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन-जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन श्रीरासलीलानुकरण आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम-संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966 में दिल्ली के विराट् गो-रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो महनीय विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश-देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढ़ाया है उतना ही देवालयों के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण-संचालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित 37 ग्रन्थों में से भारत-कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्द्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं। एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन-चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आप निरन्तर क्रियाशील रहते है। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषत: उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और आपश्री के वचनामृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।